जेलके वे दिन

विजयालक्ष्मी पण्डित

निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित लिखित "प्रिजन डेज" का हिन्दी रूपान्तर है। जिन्हें जेलोंमें जानेका अवसर नहीं मिला है, उन्हें इस पुस्तकसे जेलकी एक झाँकी मिल जायगी। इसी उद्देश्यसे यह पुस्तक प्रकाशित की गयी है। पुस्तककी तीनों कविताओंका हिन्दी कवितामें रूपान्तर बिहारके तरुणकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'ने किया है। एतदर्थ मैं उनका आभारी हूँ। प्रेसकी भूलसे तीनों कविताएँ एक ही स्थानपर छप गयी हैं। उन्हें तो हटाया नहीं जा सकता था, लेकिन भूल मालूम होनेपर उन्हें दोबारा यथास्थान रख दिया गया है। इस भूलके लिए मूल लेखक तथा पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

आशा है लोगोंको भारतीय जेलोंकी वास्तविक हालत जाननेके लिए इस पुस्तकमें पर्याप्त सामग्री मिलेगी।

विनीत—

प्रकाशक

दो शब्द

पिछली बार मेरी जेल-यात्रामें जो घटनाएँ घटीं उनका विस्तृत विवरण देनेका प्रयास इस छोटी पुस्तकमें नहीं किया गया है। नियमित रूपसे मैंने अपनी डायरी लिखी भी नहीं थी। १९४२ अगस्तके बादके दिनों अन्धकारका काला परदा पड़ा था और बहुतसे लोग जेल-जीवनके बारेमें कुछ नहीं जानते। इस वर्णनसे उन्हें जेलकी भीतरी बातोंका कुछ पता चल जायगा और वे देखेंगे कि संयुक्तप्रान्तके उस जेलकी अन्दरूनी हालत क्या है जिसका प्रबन्ध सुचारु बताया जाता है।

मेरे तथा अन्य उन लोगोंके साथ—जिन्हें उसी बैरेकमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त था जिसमें मैं थी—जो व्यवहार हो रहा था वह जेलके मापदण्डके अनुसार नरम कहा गया है, इससे पाठकोंको इस धोखेमें नहीं आना चाहिए कि अन्य लोगोंके साथ इससे अच्छा व्यवहार किया जाता था। जिस दिन उस दुर्दिनके इतिहासपर

प्रकाश डाला जायगा उस दिन अनेक दारुण कथाएँ लोगोंके सामने आएँगी। लेकिन वह समय अभी दूर है।

कई कारणोंसे इस डायरीके चन्द पृष्ठों और घटनाओंको छोड़ देना पड़ा है। जो लोग जेलकी भीतरी बातोंको जाननेके लिए उत्सुक रहते हैं उनकी सेवामें मैं यह पुस्तक भेंट करती हूँ।

जेलके वे दिन

१२ अगस्त १९४२

मैं चौंककर सोतेसे उठ पड़ी। स्विच दबाकर रोशनी की। बिन्दा मेरी चारपाईके पास खड़ा था। उसने कहा कि पुलिस आयी है और आपसे मिलना चाहती है। उस वक्त रातके दो बजे थे। कल २४ घण्टेकी घटनाएँ मेरे दिमागमें उलझी पड़ी थीं। छात्रोंके जुलूस पर जो गोलियाँ चलायी गयीं थीं वे उस वक्त भी मेरे कानोंमें गूँज रही थीं। मेरी आँखोंके सामने उन लोगोंके चेहरे नाच रहे थे जिन्हें उठा कर मैंने अस्पताल पहुँचाया था। मेरा मन और शरीर थक कर चूर-चूर हो रहा था और मैं परी-शान थी।

लड़कियाँ बरामदेमें सो रही थीं। उनकी नींदमें बाधा देना मैंने उचित नहीं समझा। कल दिनके कठिन परि-श्रमसे थककर तारा और लेखाने चारपाईकी शरण ली थी। उन्होंने जो दृश्य देखा था उसे जल्दी स्मृति-पटसे धोया नहीं जा सकता था। वे स्तब्ध और खिन्न थीं।

मैं पोर्चमें गयी। सिटी मजिस्ट्रेट, पुलिसके डिप्टी सुपरिण्टेण्डेट आधा दर्जन सशस्त्र पुलिसके साथ अँधेरेमें खड़े मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने रोशनी की। रोशनीके प्रकाशमें मैंने देखा कि सादे लिबासमें बहुतसे लोग जमा हैं, कुछ तो बरामदे तक पहुँच गये हैं। इसपर मुझे विस्मय हुआ और मैं झुँझला उठी। सिटी मजिस्ट्रेटसे मिलनेसे पहले मैंने रुखाईसे उन्हें वहाँसे हट-कर बागमें जानेके लिये कहा। सिटी मजिस्ट्रेट परीशान थे। उन्होंने कहा कि आपकी गिरफ़्तारीका वारण्ट लेकर आया हूँ। मैंने पूछा—"इस निस्तब्ध रात्रिमें एक निहत्थी महिलाको गिरफ़्तार करनेके लिए इतने हथियारबन्द आदमियोंको लेकर आनेकी क्या आवश्यकता थी ?" उन्होंने मुझसे कहा कि मकानकी तलाशी भी लेनी है। मैंने उत्तर दिया—"आप तलाशीका काम करें, तब तक मैं तैयार होती हूँ।"

मुझे गिरफ़्तारीकी संभावना न थी, इससे मुझे विस्मय हुआ। लड़कियोंके साथ कोई नहीं था। उनकी देखरेख का समुचित प्रबन्ध भी नहीं किया जा सकता था। कुछ घण्टे पहले ही इन्दिरा बम्बईसे आयी थी। वह थकी हुई थी। इसलिए उससे बिदा लेनेके लिये मैं ही ऊपर दौड़

कर गयी। मैंने उसका चुम्बन किया और जल्दी-जल्दी चन्द बातें समझाकर मैंने लड़कियोंको जगाया और यह संवाद सुनाया। मेरी लड़कियोंने सदा साहस और धैर्यका परिचय दिया है। और उन्होंने तुरन्त वास्तविक स्थितिको समझ लिया इससे व्यर्थ कोई सवाल नहीं किया और न किसी तरहका हंगामाही मचाया। सबने मिलकर मेरा सामान ठीक किया और लेखाने मेरे लिये दो-चार पुस्तकें लाकर रख दीं। रीताकी आँखें नींदसे भारी हो रही थीं। उसने मेरी ओर घूर कर देखा। उसे देखकर मेरा साहस ढीला पड़ने लगा। वह इतनी छोटी और संसार इतना बड़ा! उसकी देखरेख कौन करेगा। मालूम होता है कि मेरी चिन्ताका आभास उसे मिल गया। उसने मुस्करा दिया और कहा—"माँ, इस युगमें रहना कितना अच्छा है। क्याही अच्छा होता यदि मैं भी जेल जा सकती।" मैं सम्हल गयी। मेरी चिन्ता निरर्थक थी। मैं उसका चुम्बन करनेके लिये झुक पड़ी। ताराने कहा—माँ, हमलोग बाहर चल कर विदा होंगे। हमलोग पुलिस-वालोंको दिखला देना चाहते हैं कि विछोहको हमलोग किस तरह ग्रहण करते हैं। वे सबकी सब बाहर चली आयीं और वहीं मुझे बिदाई दी। मैंने कहा—तुम लोग

घबराना मत! सब कुछ अच्छा ही होगा। लेखाने कहा—"मैं बच्चोंको सँभाल लूँगी।" ताराने कहा—माँ, प्रणाम! हमलोग झण्डेको झुकने नहीं देंगी।" उसकी आँखें चमक रही थीं और उसका सिर अभिमानसे उठा हुआ था। क्षण भर तक रिता मुझसे चिपकी रही, लेकिन उसकी वाणी दृढ़ थी। उसने कहा—तुम अपनी ही चिन्ता करना। जबतक तुम जेलमें रहोगी, हमलोग ब्रिटेन से लड़ती रहेंगीं।

इस समयतक कुछ नौकर चाकर पहुँच गये थे। मैंने उनसे भी बिदा ली। उनमें लड़कियोंके बराबर साहस नहीं था। कितनोंकी आँखोंमें आँसू भर आये। मैं फाटक तक पैदल ही गई। मुझे यह देखकर विस्मय हुआ कि उस समय भी फाटकपर सदाकी भाँति ताला लगा हुआ था। सोचने लगी, पुलिसवाले भीतर आये कैसे? शायद् बगलकी खिड़कीसे। हमलोग उसी रास्ते बाहर गये।

बाहर सड़कपर तीन चार पुलिसकी लारियाँ कतारमें खड़ी था। अँधेरेके कारण मैं उन्हें गिन नहीं सकी। अँधेरेसे निकलकर और भी हथियारबन्द् सिपाही सामने आगये। मुझे सबसे आगेवाली लारीमें बिठाया गया।

डी. एस. पी. ने गाड़ी चलानेका काम लिया। सिटी-मजिस्ट्रेट तथा अन्य लोग पीछेकी लारियोंपर बैठ गये और गाड़ी रवाना हुई।

कई घंटेसे नगर फौजियोंके हाथमें था—नामके अतिरिक्त सभी दृष्टियोंसे मार्शल ला जारी था और कर्फ्यू आज्ञा भी जारी थी। हमलोग बड़े ही क्षुब्ध वातावरणमें चले जारहे थे। जब हमलोग चिर परिचित सड़कोंसे नैनी-जेलकी ओर जा रहे थे। मेरा मन विचारोंसे भरा था। सिनेमाके चित्रकी भाँति १९२१ के बादकी इस तरहकी अनेक यात्राओंके चित्र आँखोंके सामने नाचने लगे। हमलोग यमुनाके पुलपर पहुँचे। पुलपर सन्तरियोंका कड़ा पहरा था। पहरे परके सन्तरीने हमलोगोंको ललकारा। "हमलोग मित्र हैं, गाड़ी पुलिसकी है," आदि बातोंके कहने पर भी सतर्क पहरेदार हमलोगोंको जाने देनेके लिये तैयार नहीं था। ब्रिटिश अपने कर्मचारियोंमें राजभक्ति किस तरह कूट-कूटकर भर देते हैं!

नैनी-जेल पहुँचनेपर मालूम हुआ कि जेलके अधिकारियोंको मेरे आगमनकी कोई सूचना नहीं थी। मालूम होता है कि मेरी गिरफ्तारीका आदेश पुलिस वालोंको बहुत रात बीते मिला था और जेलवालोंको मेरे

पहुँचनेकी आशा नहीं थी। लगभग आध घण्टा प्रतीक्षा करनेके बाद जेलके जनाने कितेका फाटक खुला और अन्य जेलोंकी जमादारिनोंकी भाँति जेलकी बड़ी जमादारिन दौड़ी हुई आयी। वह हाँफ रही थी और उसकी साँस फूल रही थी।

मुझे उसी चिर-परिचित बैरकमें पहुँचाया गया। इस समय रातके ३-४५ बजे थे। अपना बिस्तर जमीनपर बिछाया। बैरकके दरवाजेमें ताला भर दिया गया और मेरे जेल जीवनका नया अध्याय आरम्भ हुआ। मेरे सिरमें भयानक पीड़ा हो रही थी। व्यथाके कारण मुझे नींद नहीं आयी। मैं पड़ी पड़ी विगत दो दिनकी घटनाओंपर विचार करने लगी। मुझे लेखाकी चिन्ता थी। मुझे यह आशङ्का हो रही थी कि कहीं वह भी जेलमें न पहुँच जाय। इसके पहले दिन सोनेके पहले मैंने उससे बातें कर यह जानना चाहा था कि घटनाओंकी कैसी प्रतिक्रिया उसपर हो रही है। वह बहुत झुँझलायी हुई थी। उसने कहा था—"माँ, जो कुछ मैंने देखा है उसे भूलनेमें बहुत दिन लगेंगे और मेरे हृदयमें घृणाके जो भाव उदय हो रहे हैं उन्हें खोदकर फेंकनेमें तो और भी ज्यादा वक्त लगेगा। नियमित जीवनकी तो हम लोग अब कल्पना ही नहीं कर

सकते। अब पीछे पैर रखना उचित नहीं होगा। अब तो इसी तरह अन्त तक बढ़ते जाना होगा। चाहे परिणाम जो भी हो।" उसका कथन सर्वथा समीचीन था। हम-लोगोंको अन्ततक आगे बढ़ते ही जाना है। यही सोचते-सोचते मुझे नींद आ गयी।

१३ अगस्त १९४२

नींद खुलते ही मुझे लड़कियोंकी चिन्ताने फिर आ घेरा। मेरे सिरका दर्द ज्योंका त्यों बना था इसलिये मैं बिस्तरे पर तब तक लेटी रही जब तक लम्बरदारिन झाड़ू देने नहीं आयी।

पुराने परिचित चेहरे कम ही रह गये हैं और नये मुझे इस तरह देखते हैं मानों मैं अजायब घरकी वस्तु हूँ। न तो पानीका कोई प्रबन्ध है और न सफाईका। कहीं कुछ भी नहीं है। मैं आँगनमें प्रायः आधे घण्टे तक टहलती रही। इसके बाद कैदियोंके नहानेकी टङ्कीमेंसे पानी लेकर मुँह धोया। करीब सात बजे जमादारिनने आकर कहा—"कहिये तो अपने घरसे चाय ला दूँ क्योंकि १० बजेसे पहले जेलसे कोई सामान नहीं मिल सकेगा। मुझे इससे चाय लेनेकी इच्छा तो नहीं थी लेकिन सिरमें

दद जारी था। इससे मैंने समझा कि चाय पीनेसे शायद कुछ आराम मिले। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। दिन-भर मेरी हालत खराब ही रही।

दोपहरके करीब थोड़ा कच्चा सामान आया लेकिन कोयलेका कहीं दर्शन नहीं था। इससे भोजन कैसे बने? मैंने एक साथी कैदीकी सहायतासे टहनियोंको जलाकर रसोई बनानेका प्रयत्न किया लेकिन सफल न हो सकी क्योंकि आग जली ही नहीं। मैं एक पुस्तक उठाकर पढ़ने लगी। पढ़ते-पढ़ते सो गई। उठी तब दिनके चार बजे थे। मैं अपनी डायरी लिखने बैठ गयी। शामको ६ बजे हैं। थोड़ी ही देरमें वार्ड बन्द हो जायगा।

दूसरे ही क्षण जमादारिन वार्ड बन्द करनेके लिए अपने दलबलके साथ आ गयी। इस तरह मेरे जेल-जीवनकी तीसरी आवृत्तिका पहला दिन बीता।

आधा घण्टा बाद जमादारिन वापस आयी और कहने लगी—"आपका बैरक खुला छोड़ देनेका हुक्म हुआ है, यदि आप चाहें तो बाहर सो सकती हैं। इस रिआयतसे मुझे बहुत सन्तोष हुआ। जाते-जाते उसने मुझसे पूछा—"आपके पास भोजनके लिए क्या है?" मैंने कहा—"कुछ नहीं।" वह भौंचक सी मेरा मुँह

देखती रही। बोली—"मैं घरसे भोजन भेज दूँ।" लेकिन मैं राजी नहीं हुई।

मैं आँगनमें टहलने लगी। ठण्ढक काफी थी। मेरा सिर कुछ हलका हुआ। टहलते वक्त मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा मानों मैं यहाँ सालोंसे हूँ। मुझे इसका आभास तक नहीं मिल सका कि मैं डेढ़ सालके बाद आज पुनः आयी हूँ। बिस्तरा बाहर बिछाकर मैं पढ़नेकी चेष्टा करने लगी। लेकिन मेरे मनमें अनेक तरहके विचार उठने लगे। इसलिए पढ़ना असम्भव हो गया। क्षण क्षण "इन्कलाब जिन्दाबाद" आदिके नारे आ आकर दीवारसे टकरा जाते थे। इससे मुझे बड़ी शान्ति मिली क्योंकि मुझे मालूम होने लगा कि यहाँ मैं अकेली नहीं हूँ। आकाशमें तारे निकल आये थे। क्षणभर उनकी ओर देखकर मैंने फिर पुस्तक उठाली। ९॥ बजे मैंने रोशनी बुझा दी क्योंकि कीड़े-मकोड़ोंके दलने बुरी तरह हमला कर दिया। कितने तो मेरे केशों तकमें घुस गये।

रात ग्यारह बजे नींद खुलनेपर देखा कि मैं भींग गई हूँ। मूसलधार पानी बरसने लग गया था। भीतर आते आते मैं एकदम लथपथ हो गई, इससे कपड़ा बदलना पड़ा। लेकिन ठण्डक आगयी और रात मजेमें कटी।

१४ अगस्त १९४२

सवेरे उठी तो मैं वहुत खुश थी। मैंने मनही मन सङ्कल्प किया कि सबके साथ नरमीसे पेश आऊँगी। लेकिन जब ८॥ बजेतक चायका कोई इन्तजाम नहीं हुआ तो मेरा मिजाज गरम होने लगा। मेरा खयाल है कि भूखसे इसका कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य है। जमादारिन अभीतक नहीं आई थी इसलिये मैंने जेल सुपरिण्टेण्डेण्टको लिख भेजा कि जबसे मुझे इस जेलमें बन्द किया गया मुझे भोजन तक नहीं दिया गया और यदि जमादारिनने दया करके अपने घरसे चाय न ले आई होती तो मुझे निराहार व्रत रहना पड़ा होता। मैंने यह भी लिखा कि यदि जेलमें कच्चा सामान नहीं है तो मुझे वही भोजन दिया जाय जो साधारण कैदियोंको दिया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ कि जमादारिन हाँफती हुई मेरे पास आई और देरसे सामान पहुँचानेके लिये क्षमा माँगने लगी।

थोड़ी देरके बाद ही कच्चा सामान तरकारी और थोड़ीसी लकड़ी लायी गयी। एक साथी कैदीकी सहायतासे बरामदेमें मैंने चूल्हा तैयार कर लिया था। यह

बरामदा ही रसोई-घरका काम देनेवाला था। तरकारी चीरकर मैंने सादा भोजन बनाया। कड़ी भूख लगी थी इससे यह भी स्वादिष्ट मालूम हुआ।

१५ अगस्त १९४२

भोजनकी बहुत अधिक महिमा गायी गई है। जेलमें इसका सबसे अधिक अनुभव होता है। यदि भोजनकी सामग्री ठीक तरहसे तैयार की गई हो, सङ्गति अच्छी हो और परोसा भी ठीक तरहसे जाय तो उसका आनन्द अवश्य मिलता है। लेकिन जब जङ्गलियोंकी तरह भोजन बनाना पड़े, आगकी आँचमें तपना पड़े और सामग्री भी खराब हो, तब ऐसे भोजनमें आनन्द कहाँसे प्राप्त हो सकता है। इसलिए भोजन बनानेका विचार मैंने त्याग दिया और पावरोटी तथा चाय पर ही दिन काटनेका निश्चय किया।

जेलकी चायका रूपरंग और स्वाद निराला होता है। मुझे अनेक तरहकी चाय पीनेका अवसर मिला है। श्रीमती चांग काई शेककी परम स्वादिष्ट चायसे लेकर चुनावके दौरेमें प्राप्त चाय तकका मुझे अनुभव है। लेकिन जेलकी चाय सबसे निराली होती है। मैं सम-

झती हूँ कि यह कोई खास तरहकी चाय होती है जो जेलमें रहने वालोंके लिये ही उपजायी जाती है। मेरे पास अपनी चाय नहीं थी। इसलिये एक बार पीकर ही मैंने इसे छोड़ दिया। यदि मैं जेलके समस्त अधिकारियों को सप्ताहभर भी जेलकी इस खाद्य सामग्रीपर रहते देख सकती तो मुझे बड़ा आनन्द आता। मेरी समझमें तब "उपयुक्त और स्वस्थकर" खूराककी लम्बी-लम्बी बातें सुननेको न मिलतीं। मेरी समझमें नहीं आता कि लोग दूसरोंके लिए "उपयुक्त और स्वास्थ्यप्रद" भोजनकी व्यवस्था करनेके लिए इतने परीशान क्यों रहते हैं, जब अपने लिए अधिकसे अधिक स्वादिष्ट भोजनकी व्यवस्था कर सकते हैं और 'उपयोगिता' को एकदम भूल जाते हैं।

इन्दुने एक अच्छी पुस्तक भेज दी है। इसमें संसारके बड़े बड़े विद्वानोंके पत्र संग्रहीत हैं। मुझे आशा है कि आजकी शाम मजेमें बीतेगी। शामके वक्त में अपनेको फँसाये रखना चाहती हूँ क्योंकि अन्य बातोंके अलावा इस समय मेरा मन उदास हो जाता है और घरकी याद आने लगती है। वर्तमान जेल जीवनकी अवधि कब समाप्त होगी, मैं नहीं जानती। इसलिए मुझे अपनी इस कमजोरीपर विजय पाकर, स्थिर हो जाना चाहिए।

१६ अगस्त १९४२

आज तड़के ही यह खबर मिली कि कल शहरमें दो बार गोली चली। खबर पूर्णरूपसे विश्वसनीय नहीं है तोभी मैं अशान्त हो उठी हूँ। ऐसे समय जब लोग खतरेसे घिरे हुए हैं, मुझे इस तरह बन्द पड़ी रहना कष्टकर प्रतीत हो रहा है।

जमादारिन ने मेरी विचारधारामें इसी समय बाधा डाली। वह बात करनेके लिए उत्सुक थी। मुझे कुछ कहना नहीं था इससे चुपचाप बैठी रही और वह अपनी जीवनी सुनाने लगी। बीच बीचमें वह अपने जमानेके इस जेलके भिन्न भिन्न सुपरिण्टेण्डेण्टों और जेलके इन्स्पेक्टर जेनरलोंकी आलोचना भी अपने अनुभवके अनुसार करती जाती थी। जेलके शासनके सम्बन्धमें भिन्न भिन्न जमादारिनोंका जो मत है उसका तुलनात्मक अध्ययन बहुत ही रोचक होगा। इस विषयपर मैं पुस्तक लिखनेका विचार कर रही हूँ। यदि वर्तमान जेल-जीवनकी अवधि लम्बी हुई तो जेलकी राजनीतिका भी मुझे ज्ञान हो जायगा। थोड़ी बहुत जानकारी तो मुझे अब भी है। मानव-मस्तिष्कके कार्यकलापको समझनेका

जिन्हें थोड़ा भी ज्ञान है उनके लिए इसमें कोई भी जटिलता नहीं है।

रातको मैंने इन्दुकी भेजी पुस्तक घण्टे भर तक पढ़ी। इसके कई पत्र तो बड़े ही सुन्दर हैं। पत्र तो सदाही रोचक होते हैं, खासकर दूसरोंके। वाल्टेयरने लिखा है— "पत्रोंसे जीवनको सबसे अधिक शान्ति मिलती है।" किसी दूसरेने उसमें यह जोड़ दिया है—"जब तक डाकिया कायम रहेगा तब तक जीवनमें आनन्द कायम रहेगा।" ऐसे बहुत कम लोग होंगे जिन्होंने अपने जीवनकी किसी न किसी अवस्थामें इस बातका अनुभव नहीं किया हो। हम लोगोंमेंसे बहुतेरे तो बड़ी उत्सुकताके साथ डाकिये की प्रतिक्षामें बैठे रहे होंगे—खासकर उन पत्रोंकी प्रतीक्षा में जिनकी उन्हें सबसे अधिक चाह है—चाहे ये पत्र मित्रके हों, परदेशी पुत्रके हों अथवा रुपये पैसेसे सम्बन्ध रखनेवाले या किसी प्रेमीके पत्र हों जिनमें प्रेमपात्रके हृदयको उल्लसित करनेवाली ऐसी मनोरञ्जक बातें लिखी हों, जिन्हें प्रेमपात्र अपनी एकमात्र सम्पत्ति समझता है और यह बात भूल जाता है कि आदिकालसे सभी प्रेमपात्रोंको उसी तरहके उद्गारोंकी अनुभूति होती आयी है।

आज जमादारिनने एक कैदी लड़कीको सफाई और भोजन बनानेके काममें मेरी मदद करनेके लिये तैनात कर दिया है। उसका नाम दुर्गी है, जातिकी कुम्हारिन है। उसके टिकटसे मालूम हुआ कि उसकी उम्र २६ सालकी है और अपने पतिकी हत्याके अभियोगमें वह आजन्म कारावासका दण्ड भोग रही है। उसे जेलमें आये आठ साल हो गये। वह काली है। पर उसके चेहरेकी गढ़न अच्छी है और उसका व्यवहार सौम्य है। सभी कैदियोंकी भाँति उसे भी घाघरा और ओढ़नी पहननेको मिली है। जेलकी जनानी पोशाक कुर्ती और धोती गरमीके दिनोंमें पहनना असंभव है, इसलिये केवल परेडके दिन उसे पहना जाता है। दुर्गीके अङ्गोंकी गठन बढ़िया है और इस पोशाकके सर्वथा अनुकूल है। मेरा अनुमान है कि इससे मेरी खूब पटरी बैठेगी।

आज अच्छी वर्षा हुई। मौसिम में काफी ठंढक है। आकाशमें काले-काले बादल उमड़ रहे हैं। रातको पुनः वर्षाकी सम्भावना है। बैरक बुरी तरह चूरहा है। ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मेरा बिस्तरा भींगनेसे बच सकता हो। मैंने सोनेके लिये जो स्थान चुना है वहाँ मेरा सिर तो बच जायगा लेकिन पैरोंको तो नहाना ही पड़ेगा।

कीड़ोंकी भरमार हो गई है। रोशनी रखना कठिन है। पर मैं यों परेशान होनेवाली नहीं हूँ। अभी रातके केवल ७॥ बजे हैं। इसी समय सो जाना कठिन है। इसलिये मैं अपनी पुस्तकमें उलझी रहना चाहती हूँ। आज मैं हेलो-इस्का पत्र पढ़ूँगीं जो उसने अबलार्डको लिखा है।

बाहरकी भाँति जेलमें भी सामाजिक बन्धन है। भगोड़ औरत यहाँ सबसे नीचेकी श्रेणीमें मानी जाती है। इसके बाद जाली सिक्का बनाने वाली और चोरोंका नम्बर आता है। हत्याके अभियोगमें जिन्हें कारावासका दण्ड मिला है उनका नम्बर सबसे ऊपर है। ये वहाँकी नेता हैं और उन्हें अपने पदका घमण्ड है। आपसमें झगड़ा होने पर ये औरतें साभिमान कहती हैं —"मुझे साधारण औरत मत समझना। मैं चोर नहीं हूँ। मैं गला काटकर यहाँ आयी हूँ।" १९३२ की जेलयात्रामें इस तरहकी औरतोंसे मैं सदा डरती रहती थी। लेकिन शीघ्र ही यह बात समझमें आ जाती है कि क्रोध या, क्षणिक आवेशमें हममेंसे कोई भी इस तरहका जघन्य काम कर सकता है। इसलिये उसे उन लोगोंसे हीन नहीं समझा जा सकता जो प्रतिदिन हत्या, चोरी या भगानेका काम किया करते हैं।

१७ अगस्त १९४२

रातसे मूसलधार पानी बरस रहा है। मेरा बैरक झोल बन गया है और विस्तरा टापू। यहाँ बैठकर ही आदमी अपनी रक्षा कर सकता है। लेकिन मौसिमने मेरी मदद ही की है। मेरी मानसिक दशाके यह सर्वथा अनुकूल है। इसलिये मुझे बुरा नहीं लग रहा है। यदि आज धूप होती तो मेरा हृदय उदास रहता। दिन धीरे-धीरे बढ़ता गया तोभी कोई काम करनेकी मुझे इच्छा नहीं हुई। मैंने दुर्गीसे भोजन बनानेके लिये कहा। अपनी अनजान-कारीसे मैं यही समझे बैठी थी कि वह साधारणतः अच्छा भोजन बना सकेगी। लेकिन जो भोजन उसने तैयार किया वह गन्दा और निस्वाद था।

पहलेकी तरह अब कोयला नहीं मिलता, गीली लकड़ियोंसे धुँएमें भोजन बनाना कठिन हो जाता है। भोजनके सामान नितान्त खराब और गर्द-गुब्बारसे भरे रहते हैं। उनमें कंकड़ियाँ और कीड़े मकोड़े तक मिले रहते हैं। चावल दाल साफ करनेके बाद वज़नमें बहुत घट जाते हैं। भोजनके सामानमें जो कूड़ा कर्कट निकलता है उसे मैं रखती जाती हूँ। जाँचके दिनमें इसे डाक्टरको

दिखलाऊँगी। घीका रङ्ग काला है और बदबूसे भरा है। उसकी मात्रा इतनी कम है कि उसकी अच्छाईका ख्याल करना ही व्यर्थ है।

समाचारोंका अभाव और भी झुँझलाहट पैदा कर देता है। तरह तरहकी अफवाहें उड़ती रहती हैं। जेल अफवाहोंका खजाना है। जेलभरमें ये अफवाहें हमेशा गूँजती रहती हैं और सबके कानतक पहुँच जाती हैं। लेकिन अफवाहोंसे सन्तोष नहीं होता। सच्ची खबरकी उत्कण्ठा तो बनी ही रहती है—खासकर ऐसे समयमें। मैं अनावश्यक रूपसे झुँझला उठती हूँ और परेशान हो जाती हूँ।

१८ अगस्त १९४२

आज सोमवार है। परेडका दिन है। प्रातःकालसे ही जेलमें हलचल है—चिल्लाहट, शोरगुल, गालीगुफ्ता, दौड़धूप—और अन्तमें जेल सुपरिण्टेण्डेण्टका आगमन। पर ईश्वरकी दयासे यह क्षण भर ही रहा। उनसे दो-चार बातें करनेके अनुकूल भी मेरी मानसिक दशा नहीं थी, मक्खियोंको उड़ानेके लिये उन्होंने अपना बेंत भेज दिया था जिसके सिरे पर चमड़ेका तस्मा लगा था।

उन्होंने पूछा कि इससे कुछ काम चल जाता है। मैंने कहा—इससे मेरे मनको शान्ति मिलती है यद्यपि मैं इससे मक्खी मारनेमें सफल नहीं होती। उन्होंने पूछा—आप सन्तुष्ट तो हैं? मेरी समझसे उनका मतलब था—आप आरामसे तो हैं! मैंने उत्तरमें कहा—यदि ऐसा होता तो क्या मैं जेलमें रहती? बस, यहीं बातचीतका अन्त हो गया।

सुपरिण्टेण्डेण्टकी बातें मेरे विचारोंको खूराक देती हैं—सन्तोष, आराम, सुख, स्वतन्त्रता—कैसे निरर्थक ये शब्द हो गए हैं। बर्नर्डशाके इन शब्दोंसे मैं पूर्ण सहमत हूँ—"मानवताने शब्दोंमें ही यश, सौन्दर्य, सचाई, ज्ञान, गुण और सच्चा प्रेम प्राप्त किया है।" लेकिन यह पागलपन है। हमलोगोंके लिए, जो आजादीके संग्राममें संलग्न हैं, उदासीकी दशामें भी इस तरहकी भावनाओंको प्रश्रय देना उचित नहीं है। मुझे सतर्क रहना चाहिए।

मैंने अन्तिम वाक्य पूरा ही किया था कि जेलके फाटकपर हलचल सुनाई पड़ी। यह किसी नये जांचकर्ताके आगमनकी सूचना थी। इस बार कमिश्नरकी सवारी आयी थी। वे सीधे मेरे बैरकमें आए और गला साफ करते हुए पूछा—"आप आरामसे तो हैं?" मुझे न

तो कोई स्पष्ट उत्तर देनेकी आवश्यकता ही थी और न उन्होंने इसकी आशा ही की थी। इसलिए मैंने केवल मुस्कुरा दिया। उन्होंने एक निगाह बैरकके चारों ओर डाली और वापस गये।

आज मेरा जन्म दिन है। बच्चोंने किताबोंका एक बण्डल मेरे पास भेजा है। लेकिन इस उपहारका आनन्द क्षणिक था। सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि नये नियम आये हैं और हम लोगोंपर वे लागू होंगे। हमलोग कैदी नं॰ २ समझे जायँगे और दूसरी श्रेणीमें रखे जायँगे। हमलोगों को अखबार, खत या मुलाकातकी सुविधा प्राप्त नहीं होगी। घरसे कोई भी चीज मँगायी नहीं जा सकती। जेलसे कपड़े मिलेंगे, बैरकमें ताला बन्द किया जायगा और भोजनकी रसद १२ आनासे ९ आना कर दी जायगी।

पत्रव्यवहारकी मनाहीके अलावा मुझपर अन्य किसी बातका असर नहीं पड़ा। सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझसे पूछा—"आपके बिना आपके बच्चे क्या करेंगे?" मैंने कहा—"वे अपनी देखभाल करना जानते हैं।" मेरे उत्तरसे उन्हें विस्मय अवश्य हुआ लेकिन मुझसे सहमत होते हुए उन्होंने कहा—"हाँ, वे बड़े ही भाग्यवान हैं।"

जेलमें हृदयकी गति रुक जानेसे श्रीमहादेव देसाईकी मृत्युके समाचारसे मुझे बड़ा सदमा पहुँचा। मेरे मानस-पटपर उनकी अनेक स्मृतियाँ सजीव हैं। वे बड़े ही सज्जन व्यक्ति थे। उनके अवसानसे हम लोग दरिद्र हो गये। न जाने विचारी दुर्गा और निरीह बच्चे कहाँ हैं? बापू जेलमें हैं। इसलिये उन्हें कोई ठाँव नहीं है। यदि मैं दुर्गाके पास सान्त्वनाके दो शब्द भेज सकती! महादेव भाईकी मृत्युका संवाद सुननेके बादसे मैं विचलित हो गई हूँ। कल रात मैं विस्तर पर पड़ी पड़ी उन्हींकी बातें सोचती रही। मुझे ऐसा मालूम होने लगा मानों वे कल ही मेरे पास आनन्द-भवनमें आये थे और मार्डन रिव्यूमें उनके किसी युवक दोस्तके लेखको पढ़नेका आग्रह किया था जिसे वे वहुत ही प्रतिभाशाली और स्नेही युवक समझते थे। यह लेख १९२० में लिखा गया था। उसका शीर्षक था।–"गुरुके चरणोंके नीचे।" और उसके लेखक थे रंजीत पण्डित। और आज २२ वर्षोंसे मैं इस होनहार प्रतिभाशाली और स्नेहमय युवककी पत्नी हूँ। रंजीत और महादेव कालेजमें सहपाठी थे और दोनोंने साथही बी० ए० पास किया था। उन लोगोंमें पत्र-व्यवहार बहुत कम होता था तोभी दोनों घनिष्ट स्नेह बन्धनमें जकड़े

थे। महादेवके अवसानके समाचारसे रंजीतको कड़ी चोट पहुँचेगी।

१९ अगस्त १९४२

साधारणतः लोगोंकी यही धारणा है कि जेलोंमें अकेले ही रहना पड़ता है। मनके लायक साथी न रहनेके कारण सूनेपनका अनुभव भले ही किया जाय लेकिन अकेलापन तो नहीं ही रहता। एक सप्ताहमें ही यहाँ एकान्त प्राप्तिकी जैसी उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हो गई वैसी जीवनमें कभी नहीं हुई होगी। सुबह से शाम तक एक क्षणभी ऐसा नहीं बीतता जब मैं निश्चिन्त रहूँ। प्रत्येक व्यक्तिकी मुझमें रुचि है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी दर्द गाथा मुझे इस आशा-से सुनानेके लिये व्यग्र रहता है कि मैं उसका छुटकारा करा देनेमें सहायक हो सकती हूँ। यहाँका शोरगुल, एक दूसरेकी शिकायत, झगड़ा-फसाद—परस्पर गाली-गलौज-का तो कुछ कहना ही नहीं है—तो चेतनाको खिन्न और परीशान कर देती है। रातभर शोरगुल होता रहता है—थोड़ा नहीं, कभी-कभी सुनाई पड़नेवाले बाहरके शोरगुल की तरह नहीं, बल्कि निरन्तर होनेवाले भीषण चीत्कार जिससे मन बिकल हो उठता है। अपने एक पत्रमें अर्न्स्ट-

टालरने लिखा है—"दिन प्रतिदिन भीषण रवोंका सिलसिला अपने चीत्कारोंसे गला घोंटता रहता है।" जिन्हें जेलमें रहनेका अवसर मिला है वे ही इसके वास्तविकताको समझ सकते हैं। आरम्भमें तो यह चिल्लाहट और भीड़ असह्य हो उठती है लेकिन धीरे-धीरे अभ्यास पड़ जाता है और लोग अपने प्रयाससे इसे अपनेसे दूर कर देते हैं। मेरा बेरक झगड़ालू और बतक्कड़ औरतोंसे भरा होने पर भी मैं उनसे अलग रहकर अपनी पुस्तकोंमें उलझी रह सकी हूँ। लेकिन इसके लिये समय और चित्तकी शान्ति चाहिये जो इस समय मेरे पास नहीं है।

रातमें तो यह स्थान विकराल हो जाता है। जेलकी लालटेनकी टिमटिमाती रोशनीकी ऐसी बृहत् और भयावनी छाया पड़ती है कि उसे देखकर डर लगता है। मैं उन्हें बैठी-बैठी देखा करती हूँ और अपनी प्रसन्नताके लिये कहानियाँ गढ़ा करती हूँ।

जिस बैरकमें मैं रहती हूँ वह चौकोर है। इसमें बारह या इससे कुछ ज्यादा कैदियोंके रहनेकी जगह है। उसके दोनों तरफ थोड़ी थोड़ी दूर पर छड़दार जँगले हैं।

उन्हींमेंसे एक जँगला दरवाजेका काम करता है जो रातको बन्द कर दिया जाता है।

बैरकका एक हिस्सा फर्शसे चार सीढ़ी ऊँचा है। बैरक बन्द हो जानेपर यही पाखानेका काम देता है। दिनके इस्तेमालके लिये बैरकसे सटा छोटा-सा पाखाना और स्नान-गृह है। जब मैं पिछली बार जेल आई थी तब यह मेरे ही लिये बनवाया गया था। इससे मुझे बड़ी सहूलियत मिली है। बैरककी दशा नितान्त दयनीय है और ऊपरकी खपरैल तो हटानेके लायक हो गयी है। मुझे जेलकी बनी मूँजकी खाट और लोहेका एक टूटा-फूटा टेबुल मिला है। मैंने अपना बिस्तरा बैरकके दूसरे कोनेमें पाखानासे बहुत दूर लगाया है। पिछली बारके अनुभवसे मैंने यही सीखा है कि दूसरे कैदियोंके पहुँचने के पहले जो सम्भव हो दखल कर लो। मेरा बिस्तर ठीक जँगलेके पास है जो आँगनकी तरफ है। यहाँसे मैं बाहरी फाटक मजेमें देख सकती हूँ। बहुधा जमादारिन बैरक खोलनेमें सुस्तीसे देर कर देती है। हरी-हरी घास और सड़कको मैं भीतरसे देखती रहती हूँ। कैसी ताजगी इससे मिलती है! हमलोग इतनी बड़ी दीवारके घेरेमें हैं कि पेड़ तक उससे छिप जाते हैं। आँगन भी उजड़ा और

नीरस है। वहाँ सिर्फ एक छोटा सा पेड़ है। यदि मुझे अधिक दिनों तक यहाँ रहना पड़े तो मैं छोटीसी फुलवारी लगानेका यत्न करूँगी।

इस आँगनमें दूसरा बैरक भी है जो आज-कल बन्द है। इस आँगनसे सटा दूसरा आँगन है जिसमें साधारण कैदी रहते हैं। यह जेल छोटा है। यहाँ केवल ४४ स्त्रियाँ हैं। सबकी सब आदती कैदी हैं। कुछ तो पुरानी परिचिता हैं क्योंकि पिछली बार भी ये यहाँ थीं। यदि कोई खास काम नहीं होता तो इन्हें मेरे आँगनमें नहीं आने दिया जाता। लेकिन जब दोनोंके बीचका दरवाजा खुला रहता है तब हमलोग एक दूसरेको अभिनन्दन कर लेती हैं। वे सब मैत्रीके भावसे मुस्करा देती हैं और कभी-कभी बच्चोंका हाल चाल पूछ लेती हैं जिनके बारेमें उन्होंने पिछली बार मुझसे सुन लिया था। दूसरे आँगनमें भी काल कोठरियाँ हैं। इन्हें देखकर मैं व्याकुल हो उठती हूँ क्योंकि ये इस योग्य नहीं है कि इनमें मनुष्य बन्द किया जाय। इस समय भी इसमें एक महिला बन्द है। मुझे उसका अपराध तो नहीं मालूम लेकिन मैं रात-दिन उसका रोना चिल्लाना सुना करती हूँ। कितनी भयानक

उसकी रुलाई होती है—यह है उस कैदीका आर्तनाद जो हर तरहसे निराश होकर भयभीत हो गया है।

दुर्गी अपनी जीवनगाथा मुझे सुनाती रहती है। वही साधारण बातें। उसने अपने पतिको इसलिये मार डाला कि वह उसकी तरफसे लापरवाह था, उसे पीटता था और खाना नहीं देता था। वह हत्याका बहुतही भयङ्कर वर्णन करती है। लेकिन उस हत्याका वर्णन करनेमें उसे बहुत सन्तोष होता है। बादमें जब मैं उसकी मनोवृत्तिका विश्लेषण करती हूँ तब मैं इस परिणाम पर पहुँचती हूँ कि उसके सन्तोषका बड़ा कारण यह है कि पतिकी हत्या कर उसने अपनी सासको गहरी चोट पहुँचायी है जिससे वह पतिसे भी अधिक घृणा करती है। घरमें वह दो सालका बच्चा छोड़कर और ६ मासकी कन्या गोदमें लेकर जेल आयी थी। हालमें ही उस कन्याका देहान्त हो गया। दुर्गीको बच्चोंसे बहुत स्नेह है। अपनी नन्हीं सी बिटियाके मरनेका उसे बहुत बड़ा सदमा है। उसका ख्याल है कि किसीने टोना करके उसे मार डाला। इसके विरुद्ध कोई भी दलील उसके दिलमें नहीं धँसती। वह बहुधा अपने बेटेके लिये रो पड़ती है जिसकी उम्र इस समय ग्यारह सालकी हो गई होगी

और जेल आनेके बादसे जिसे उसने कभी नहीं देखा है।

इस आँगनमें मेंढ़कोंकी भरमार है। ये गन्दे और भद्दे छोटे बड़े जानवर हर जगह फुदकते रहते हैं। इन्हें देखकर मुझे युद्धके नफाखोरोंकी याद आ जाती है जो अपने तंग दायरेसे ही सन्तुष्ट रहते हैं और यह बात सदा-के लिए भूल जाते हैं, कि इससे बाहर एक बड़ी दुनिया भी है। शामको जब ये मेंढक टर्र टर्र करने लगते हैं तब तो मैं परीशान हो जाती हूँ। कभी कभी एकही मेंढक टर्र टर्र करता है और कभी कभी तो सैकड़ों मेंढक एक साथ ही शोर करने लगते हैं और पागल बना देते हैं। कल रातको मैं यकायक बिस्तरेसे उतरी और नीचे देखे बगैर एक बड़े मेंढकपर पैर रख दिया। मैं चौंक उठी। लेकिन वह दबकर मरा नहीं। फुदककर दूर चला गया।

१९४१ में मेरे जेलमें एक नन्हेंसे बिल्लीके बच्चेने अपना घर बना लिया था। अब तो वह बहुत तगड़ा पर साथही भद्दा हो गया है। वह बिल्ला चुपकेसे आता है और भोजन की जो भी सामग्री खुली पाता है, चुरा ले जाता है। उसे पेटभर भोजन नसीब नहीं होता, इसलिए उसे भगानेका जी नहीं चाहता। बिल्लियोंके बारेमें मेरी धारणा अच्छी

नहीं है इसलिए मेरी सहानुभूति उससे नहीं है। उन्हें देखकर मैं परीशान हो जाती हूँ। अभी तक तो चूहोंका आक्रमण नहीं हुआ है लेकिन एक न एक दिन वे भी हमला कर ही देंगे। १९४१ में चूहोंके परिवारने यहाँ इस तरह दखल जमा लिया था कि मैं उनसे तङ्ग आ गयी थी।

दोनों आँगनोंके बीचका दरवाजा क्षण भरके लिए खुल गया तो मुझे परिचित सूरतें दिखायी पड़ीं। सरबती अभी तक यहीं है। लेकिन वह पहलेसे दुबली और क्षीण दिखायी देती है। उसकी पुरानी बीमारी ज्योंकी त्यों है और अब तो कफके साथ उसे खून भी आने लगा है। हाँ, नारायणी जॉनी बाकरकी तरह दिनपर दिन तगड़ी होती जा रही है। पारसाल वह आँगनके नीमके पेड़पर चढ़ गई थी और अपनी धोतीका एक खूँट पेड़की डालमें तथा दूसरा खूँट अपने गलेमें बाँधकर आत्महत्या करनेकी धमकी देने लगी थी। इससे जेलमें तूफान उठ खड़ा हुआ था। दूसरे कैदी इस तरह जान न देनेके लिए उससे आरजू मिन्नत करने लगे। इसपर उसने कहा कि यदि मेरी मियाद घटा नहीं दी जाती तो मैं फाँसी लगाकर मर जाऊँगी। जब जमादारिनकी धमकी और मिन्नत

का कोई फल नहीं निकला तब सुपरिण्टेण्डेण्ट बुलाये गये। मुझे नहीं मालूम कि उन्होंने कौनसा जादू किया। लेकिन नीचे उतर आनेके लिए उन्होंने उसे राजी कर लिया। वह धड़ामसे नीचे कूद पड़ी और एक पसली तथा हाथ तोड़ डाला। उसने बड़े अभिमानके साथ अपने हाथका निशान मुझे दिखलाया।

मैं नारायणीसे डरती हूँ। यह उसकी ग्यारहवीं सजा है। इस बार कपड़ा चुरानेके अपराधमें उसे सात सालकी कड़ी सजा हुई है। स्त्रीपनका उसमें सर्वथा अभाव है। वह आबनूसकी तरह काली है। सिरके केश कतरवा दिए हैं। उसके कई दांत टूट गये हैं। उसकी सूरत डरावनीसी लगती है। उसका शरीर लचीला है। पचास सालकी होनेपर भी वह बिल्लियोंकी तरह लपक-कर पेड़ पर चढ़ जाती है। वह देह पर कपड़ा लादकर रखना पसन्द नहीं करती। बस, अपना आवश्यक अङ्ग भर ढँके रहती है। उसे रंगसे प्रेम है और अपने पहलेके रंगीन कपड़ोंकी बड़ी तारीफ करती है। उसे छेड़ा न जाय तो वह शान्त रहती है। लेकिन छेड़छाड़ करनेपर वह क्रोधसे खूँखार हो उठती है। वह घृणितसे घृणित गालियाँ देती है और अन्तमें रो पड़ती है। और भी

अनेक परिचित महिलाएँ यहाँ हैं लेकिन उनके नाम मुझे याद नहीं। शायद आगे चलकर उनके नाम याद आ जाँय।

जमादारिनें भी एक तमाशा हैं। ये पाँच हैं:—जोहरा, जैनब, विशुनदेई, श्यामा और श्रीमती सालमन।

जोहरा भयानक औरत है। हमेशा गन्दी रहती है, जन्मकी लोभिन और अविश्वसनीय प्रतीत होती है। उससे मेरी घनिष्ठता नहीं हो सकती। जैनब मोटी और भड़कम है। वड़ी बातूनी और घटनाओंकी पिटारी है। जेलकी नौकरीने उसे जड़ नहीं बना दिया है। उसकी बोली-ठोलीमें बड़ा मजा आता है। विशुनदेई मोटी और तगड़ी है। उसका आकार और गढ़न जेलोंकी जमादारिनके सर्वथा उपयुक्त है। जेलके लिवास (यूनिफार्म) में वह खूब जँचती है। वह बोलती बहुत कम है। श्यामा एक दम शून्य है। इस तरहके लोग कम ही देखनेमें आते हैं। श्रीमती सालमन सबसे भली मालूम होती हैं। मनुष्यताकी दृष्टिसे वह सबसे उत्तम हैं। स्वभावकी सज्जन हैं। ईसाई होनेके कारण वे और सबसे अपनेको भिन्न समझती हैं और भारतीय इसाइयोंकी भाँति इनका रहन सहन भी ऊँचा हो गया है। उनका हाथ हमेशा तङ्ग रहता है।

उनकी पारिवारिक मुसीबतकी बात मुझे मालूम है। परिवार में इतने लोग हैं कि अपनी विपत्तिकी चर्चा करके ही वह शान्ति प्राप्त करती हैं। उनका चेहरा सुडौल, आँखें शालीन और केश भूरे हैं। दुर्भाग्यकी बात है कि उन्हें जेलकी नौकरी करनी पड़ती है।

२० अगस्त १९४५

सवेरे दरवाजा खुलनेके पहले ही मेरी नींद टूट गयी और मैं छतकी तरफ देखने लगी। बैरक पहलेसे कहीं ज्यादा जीर्ण हो गया है। छतका पलस्तर टूट टूटकर गिरता रहता है और मेरा बिस्तर गन्दा हो जाता है। खपरैल बिखरे पड़े हैं। धूप और पानी स्वतन्त्रतापूर्वक भीतर आते रहते हैं। आजकल सूर्यकी चमक ऐसी तेज है कि मुझे अपना रङ्गीन ऐनक हर वक्त लगाये रहना पड़ता है। फर्शमें इतने गड्ढे हैं कि रातमें लडखड़ाकर गिरे बिना कोई चल नहीं सकता। मेढकों और चिमगादड़ोंकी भरमार है। मैं उनसे सदा शंकित रहती हूँ।

बारह बजे रातकी निस्तब्धतामें मैं ये पन्ने लिख रही हूँ। इसी वक्त थोड़ी शान्ति मिली है। नहीं तो आज दिनभर हल्ला होता रहा। रात निस्तब्ध और शान्त है

कैदियोंकी गिनती साफ सुनाई देती है। लेकिन इससे बाधा नहीं पड़ रही है।

मैं अपने जँगलेके पास खड़ी होकर टिमटिमाते तारोंको देखा करती हूँ। इससे मुझे शान्ति मिलती है। वे सदा समान, शान्त और गम्भीर रहते हैं। मनुष्योंकी भूलें उन्हें हैरान नहीं करतीं। कभी कभी चन्द्रमाकी किरणें छनकर कमरेमें फैल जाती हैं, मानों चाँदीकी सरिता बह रही हो। कभी कभी आकाशमें हवाई जहाज के उड़नेके शब्द सुनाई देते हैं। मैं बेचैन हो उठती हूँ। मै इन सीखचोंको तोड़कर भाग जाना चाहती हूँ। मनुष्यको इस तरह बन्द करके रखना कितना वाहियात है। इससे किसी समस्याका समाधान नहीं होता बल्कि नई कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं। दुनियाका चक्कर गोल है। हम फिर उसी जगह आजाते हैं जहाँसे चलते हैं। विकास शाब्दिक ध्वनिमात्र है। उसका अभिप्राय मैं नहीं समझ सकी।

आज फिर हलचल मच गयी थी। एक कैदीके मुलाकाती आये थे। गरीब आदमी बहुत दूरसे अपनी हैसियतसे भी ज्यादा खर्च करके आया था। लेकिन एक जमादारिनने कह दिया कि जबतक मुझे बखशिश नहीं

दोगे, भेंट नहीं हो सकेगी। जेलमें यह साधारण बात है और कैदियोंके सम्बन्धी यह जानते हैं। पहले तो उस आदमीने अपनी गरीबी दिखलाते हुए क्षमा चाही लेकिन अन्तमें जमादारिनके हाथ पर दो रुपये रख दिये। लेकिन जब वह औरत मुलाकातके लिये बाहर लायी गई तो कोई कसूरका बहाना ढूँढ़कर जमादारिनने उससे झगड़ा शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि वह वापस कर दी गई। मुलाकात नहीं हो सकी। इसका कारण स्पष्ट था। वह औरत दिनभर बड़बड़ाती रही और सबके सब जेलवालोंको गाली देती रही।

जेलमें इस तरहकी घूसखोरी भयानक है। हर उपायसे घूस लिये जाते हैं। कभी कभी तो खुलेआम। ग्रेफ्रे मिन्शलने कहा है:—जेलखाना वह जगह है जहाँ इन्सान जिन्दा ही दफना दिया जाता है। ६ महीना जेल-में रहकर इन्सान जितना कानून सीख सकता है उतना वेस्ट मिन्स्टरमें सौ पौंड खर्च करके भी नहीं सीख सकता। यह बुराइयोंका घर है, यातनाओंका आगार है, यदि इन्सान चाहे तो यहाँ इतनी बुराइयाँ सीख सकता है जितनी वह बीस ताड़ीखाने, वेश्यालय या जूआखानेमें नहीं सीख सकेगा और एक बूढ़ा आदमी जितनी चाल-

बाजी सीख सकता है उतनी चालबाजी सर मेचिवीलीकी शरमिंदीसे नहीं सीख सकता। यहाँ जितने ज्यादा जहरीले कीड़े हैं उतने प्लेगके दिनोंमें संक्रामक घरोंमें भी नहीं पाये जा सकते और इनका डङ्क अगस्तमें लार्ड मेयरके कुत्ता घरसे भी जहरीला होता है।

२१ अगस्त १६४२

कल रातमें मैं सो नहीं सकी। मैं बैरकमें टहलती रही। थोड़ी देरतक पढती रही। आँखें भारी हो रही थीं, फिर भी नींद नहीं आयी। मैं आँखे बन्द करके पड़ी रही पर झपकी तक नहीं आयी। मैं करवटें बदलती रही और—एक, दो—तीन घण्टेकी आवाज गिनती रही। तीन बजेके बाद मेरी आँख लगी तो विचित्र स्वप्न मैंने देखा। शामको मैं जेल जीवन पर जो गम्भीर विचार करती रही उसीका यह प्रतिफल था।

"कालकोठरीमें खड़ी होकर दोनों हाथ ऊपर उठाकर भी मैं उसकी ऊँची दीवारोंको नहीं छू सकती थी। छत चू रही थी। वर्षाकी बूँदे टपाटप मेरे सिरपर गिर रही थीं। मेरे सिरको छूते ही वे रुपयेका रूप धारण कर लेती थीं और उनसे मुझे चोट लगती थी। मैं बाहर

निकलनेके लिये चिल्लाने लगी। लेकिन बाहर ताला जड़ा था और निकलनेका कोई उपाय नहीं था। चाँदीकी बूदें उसी तरह गिरती रहीं और उन्होंने मेरे सिरमें छेद कर दिया। दर्द इतना भयानक हुआ कि मैंने समझा कि मैं मर जाऊँगी। इसी समय मेरी नींद खुल गयी। मैंने देखा कि मैं अपने बैरकमें चारपाईपर पड़ी हूँ और बाहर पानी बरस रहा है। चुअनी छतसे पानीकी बूँदें मेरे ललाटपर टपक रही थीं और दूसरे बैरकमें जमादारिन किसी अभागे कैदीको जोर जोरसे डाँट रही थी।"

इस स्वप्नके बाद फिर नींदका आना सम्भव नहीं था। मैं उठ बैठी और धीरे धीरे फैलते प्रकाशको देखने लगी। इसी समय बिगुल बजा। बैरक खुलनेका संकेत था। लेकिन मैं बिस्तरे पर पड़ी रही। बाहर निकलनेकी इच्छा नहीं हुई। इसी समय मुझे एक कविताकी कुछ पंक्तियाँ स्मरण हो आईं जिन्हें मैंने कभी पढ़ा था।—

(१)

उस विषण्ण, हिमशील प्रान्तकी निर्जन कारा
थी ऐसी विकराल, लगा यमराज सोचने—
'काश, हमारा नरक भयानक इतना होता !'

(२)

हमें नहीं हित-मित्र, प्रेमिका, हमें न धन, आगार ;
एक आस आराध्य-नगर की, वह भी पथ के पार ।
तन को नहीं विराम, न मन को शान्ति कभी लवलेष,
सतत रहे हम खोज नहीं मिलनेवाला निज देश ।
हम जैसों के लिए नहीं इस धरती पर विश्राम,
अलम हमें गन्तव्य, पन्थ पर चलना केवल काम ।
हाँ, पथ और उषा, फिर जलता सूर्य, हवा, बरसात,
संध्या, निशा, अनल, निद्रा, फिर मार्ग प्रदर्शक प्रात ।

(३)

रोना क्या उनके हित जो रज में हो रहे विलीन ?
यही नियम है जो जन्मा वह होगा मृत्यु-अधीन ।
रोना क्या उन वीर साथियों के हित जो उद्दाम—
रखे नहीं जा सकते, जारी रखने को संग्राम !
कड़े सीखचों की कब्रों में जिनका निहित निवास,
मरण भोगना है जिनको गिनगिन जीवन की लास ।
हाँ, आँखों की यह कीचड़ हो उस कायर को दान,
जिसके हैं बिक चुके पेट के लिए दीन-ईमान ।

वह जो समझ रहा है अच्छी तरह जुल्म का राज़,
लेकिन, उठा नहीं सकता सचाई की आवाज़।

मुझे नहीं मालूम कि नरकके कैदखाने कैसे होते हैं लेकिन यदि मैं वहाँ तक पहुँच सकी तो ब्रिटिश जेलखानोंका अनुभव प्राप्त करनेके बाद नरकके जेलखानोंके लिये मैं शैतानको कुछ सलाह अवश्य दे सकूँगी। यहाँके कुछ जेलरों, जमादारों और जमादारिनोंकी सिफारिश भी मैं उससे कर दूँगी। नरकमें भी इन्हें नौकरोंकी जरूरत तो पड़ेगी ही। जिन कामोंका उन्हें अभ्यास है उससे बढ़कर दूसरा काम उनके लिये हो ही क्या सकता है!

आज सबेरे मैं सबसे पहले बगलवाले बैरककी उस छोटी कोठरीको देखने गयी जिसमें मैंने पारसाल कैदियोंके छोटे बच्चोंके लिये शुश्रुषा गृह बनवाया था। वहाँ जाकर मैंने देखा कि उस कमरेके आधे भागमें गोदाम है और आधेमें दफ़्तर। दीवारों पर मैंने जो चित्र बनाये थे वे मिटसे गये हैं, जो खिलौने मैंने तैयार किये थे वे तोड़ फोड़ दिये गये हैं। उनके टुकड़े आलमारियोंमें पड़े हैं। मूँजकी जिस चटाई पर लड़के बैठा करते थे वह गायब हो गई है, ब्लैक बोर्ड टूटी फूटी हालतमें एक

कोनेमें पड़ा है और उसपर धूल जम गयी है। कैसी दयनीय यह अवस्था थी और उससे भी दयनीय दशा उन बच्चोंकी थी। कुछ तो अपनी माताओंके छूट जाने पर चले गये थे लेकिन कुछ वहाँ मौजूद थे। उनकी देख रेख करनेवाला कोई नहीं था और वे अवारा होते जा रहे थे। पारसाल जो थोड़ा बहुत मैं उन्हें सिखला सकी थी, वे सब भूल गये हैं और तमाम बुरी आदतें उन्होंने सीख ली हैं। मैं जमुनीको सुरती खाते देखा। उसकी माँ छूट गई थी, लेकिन चोरीके अपराधमें फिर वापस आ गयी थी। उसने मुझसे कहा कि सुरतीके बिना उसे चैन ही नहीं पड़ती। पन्द्रह महीनेके बाद भी मुंशीकी वही हालत थी। उसके आगेके दाँत सड़ गये हैं। वह सूक्ष्म, दुबला और शक्ति-हीन हो गया है। केवल उसकी आँखों की सुन्दरता ज्यों की त्यों वर्तमान है। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि वह सात सालका है।

एक नयी बच्ची आगयी है। कैसी प्यारी है उसकी सूरत। उसका नाम है शाखो। उसकी उम्र ढाई साल है। उसकी आँखें भूरी हैं, रंग सुनहला है और सिरके केश शहदके रङ्गके हैं। उसकी माँको चोरीकी आदत पड़ गयी है। सातवीं बार वह जेल आयी है। उसकी सूरत

डायनोंकी तरह खूँखार है। उसने ऐसे सुन्दर शिशुको कैसे जन्म दिया। इन तीनोंके अलावा एक चौथा शिशु भी है। उसकी हालत भी अच्छी नहीं है।

मुझे यह भी मालूम हुआ कि कैदियोंको इस साल हिन्दी और उर्दूकी प्रारम्भिक शिक्षा नियमित रूपसे नहीं दी जा रही है। जेलकी शिक्षिका—श्रीमती बोथाजू सबेरे जेलके जमादारोंके बच्चोंको उनके क्वाटरोंमें पढ़ाती हैं। महिला कैदियोंके लड़के भी यदि चाहें तो वहाँ पढ़ने जा सकते हैं। तीसरे पहर उनकी ड्यूटी महिला कैदियोंको पढ़ानेकी है लेकिन मैंने उसका कोई लक्षण नहीं देखा। महिला कैदियोंको शिक्षासे नफरत है। श्रीमती बोथाजू भी इससे प्रसन्न हैं। मोलाहिजाके दिन स्लेट, पेंसिल और किताबें महिला कैदियोंके सामने रखी रहती हैं। लेकिन मोलाहिजा करनेवाले अफसरोंको कभी नहीं सूझी कि दो एक सवाल करके वे इस बातको जानें कि इनकी पढ़ाई-लिखाईमें क्या प्रगति हुई है।

२२ अगस्त १९४२

आज तीसरे पहर करीब २ बजे अचानक मूसलधार पानी बरसने लगा। थोड़ी देर बाद ही बैरेक चूने लगा।

करीब आधा घण्टा तो यहाँसे वहाँ बिस्तर हटाती रही। एक तरफ छतसे बड़ी बड़ी बूँदें टपक रही थीं और उधर जँगलोंसे बौछार आ रही थी। मैं बिस्तर पर लेट गई। उसका पैताना भीज रहा था। अपने पैरोंकी हिफाजतके लिये मैंने उन्हें मोड़ लिया। वर्षा जैसे अचानक आई वैसे ही चली भी गई। आसमान साफ और नीला है। मौसिम बहुत ही सुहावना है।

मेरे कपड़े और खानेके जो कुछ सामान हैं सभीमें सीड़ लग रही है। सभी चीजें यहाँ तक कि मेरे पहननेके कपड़ेतकसे दुर्गन्ध आरही है। जब जेलसे कपड़े मिलने लगेंगे तब क्या हालत होगी। कुशल यही है कि हम-लोगोंको खादी के समान मोटा कपड़ा पहननेकी आदत पड़ गई है।

मुझे अपनी पुस्तकोंकी चिन्ता है। नया कायदा जिसके अनुसार पुस्तकें और पत्र पत्रिकायें मजिस्ट्रेटके द्वारा यहाँ आती हैं, स्वयं प्रकट करता है कि आधी आने ही नहीं पायेंगी और जो आधी आ भी सकेंगी उन्हें यहाँ तक पहुँचनेमें कई सप्ताह लग जायँगे। बिना पुस्तकोंके ही दिन काटनेकी मुसीबत मुझे झेलनी पड़ेगी। एक तो दिन ही बहुत बड़े प्रतीत होते हैं। जेलकी रातें

तो अन्य रातासे बहुत बड़ी होती ही हैं। वक्त शैतानकी आँतकी तरह बढ़ता जाता है।। एक-एक महीना एक-एक साल और एक एक साल एक-एक युग प्रतीत होता है। इस तरह सदियाँ गुजर गईं सी प्रतीत होने लगती है। मेरे एक जन्म दिवस पर सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझसे पूछा—आपकी क्या उम्र है। मैंने कहा—"मुझे नहीं मालूम। पर मैं समझती हूँ कि मुझे पैदा हुए सदियों हो गये।" बादको मुझे एक अवतरण याद हो आया :—"कोई भी माप दण्ड, कोई भी डायरी समयकी पूर्णताका माप नहीं करा सकती। एकमात्र आत्मा ही उसे पूरा करता रहता है। यदि आत्मा जाग्रत नहीं है तब तो वह भरता नहीं। यदि वह जाग्रत है—चाहे वह संशयकी, वेदनाकी अथवा आकांक्षाकी घड़ियाँ ही क्यों न हों :—एक घण्टेमें ही वह जितना प्रतीत होगा उतना शायद दर्जनों शून्य जीवनमें नहीं हो सकेगा। लम्बी चौड़ी अवधिकी उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी आवश्यकता उस विशाल आत्माकी है जो जीवनके प्रतिक्षणकी अनुभूति प्राप्त करता रहता है। मैं समझती हूँ कि मेरी विशाल आत्मा ही मुझे यह भान करा रही है कि मैं सदियोंसे जीवित हूँ।"

आज प्रतिदिनकी अपेक्षा अधिक झगड़ा होता रहा है। वैरेक बन्द हो जाने पर भी शान्ति नहीं हुई है। कर्कश आवाजोंके कारण रात्रिका सौन्दर्य भीषण हो रहा है। शामके वक्त मैं अपने जँगले पर बैठकर आकाशमें बादलोंको उड़ते देखती हूँ और नक्षत्र मालिकाके आगमन की प्रतीक्षा करती हूँ। उन्हें टिमटिमाते हुए देखनेमें कितना आनन्द आता है! अभी तक चन्द्रमाके दर्शन नहीं हुए हैं। मैं उन दिनोंका प्रतीक्षा उत्सुकतासे कर रही हूँ। उनका विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वे मनस्वी और स्वच्छन्द हैं। जेलसे उन्हें प्रेम नहीं है। लेकिन कभी कभी मैं उन्हें बादलोंके साथ आँख मिचौनी खेलते देखती हूँ। वे कभी कभी अपनी रजत किरणें इधर भी बिखेर देते हैं मानों वे मुझे अब भी याद करते हैं।

२३ अगस्त १९४२

रात मुझे नींद नहीं आई। सबेरे उठी तो शरीर भारी था। सारे शरीरमें व्यथाका भान हो रहा था और उदासी छा रही थी। सुबहके वक्त बेकार पड़ी रही क्योंकि पढ़ने लिखने या अन्य किसी काममें मन नहीं लगता था।

बर्षाके कारण बाहर भी नहीं जा सकी और पींजड़ेमें बन्द शेरकी तरह बेचैन भीतर ही घण्टे आध घण्टेतक टहलती रही। तब मैं लेट गयी। तीसरे पहर जमादारिन चार पुस्तकें लेकर आई, किसी मित्रने भेजा था। ओह! "यह थोड़ा भी कितना ज्यादा है।" मेरी उदासी क्षण भरमें भाग गई। किसीने मुझे याद तो किया। बाहरी दुनियासे यह जरासा संसर्ग भी बहुत ज्यादा सन्तोष देता है। किताबें रोचक प्रतीत होती हैं और आज मुझे सन्ध्या होने का भय नहीं रहा।

२४ अगस्त १९४२

जेलवालोंका भी अपना निजी विनोद होता है। कल रातको जमादारिनने मुझसे कहा :—अब सुबह ताला खोलते वक्त मैं आपको बाधा नहीं देती क्योंकि मैं जानती हूँ कि रातको आपको अच्छी नींद नहीं आती। लेकिन कर्तव्यके ख्यालसे मुझे आपको पुकारना चाहिये क्योंकि यदि रातमें अचानक आपकी मृत्यु हो गई तो मुझे कैसे मालूम होगा। इसे कहते हैं नौकरी की धुन! कैसे सुन्दर विचार हैं कि यदि रातमें मैं मर जाऊँ! लेकिन इससे भी बुरी मौतें हैं।

मेरे जन्म दिवसपर लड़कियोंने जो पुस्तकें भेजी थीं उनमेंसे मैंने एकको पढ़ा है। उसका नाम है (Escape from Freedom) "आजादीसे रक्षा"। बड़े रोचक ढङ्ग से यह पुस्तक लिखी गई है। बड़ी ही आकर्षक है। मैंने नाटकोंको बुरे दिनोंके लिये रख छोड़ा है। ईश्वर न करे कि वे इतने शीघ्र आजायँ। बुरे दिनोंकी छाया मुझे मिल चुकी है। अब वे धीरे धीरे मुरझा रहे हैं। लेकिन वे फिर पनप सकते हैं। सौभाग्यसे मैं आशावादी हूँ।

कल शामको चार बजे एक अन्य राजनीतिक महिला लायी गई। वह आर० एम० एस० की पत्नी है। उसके पति और ससुर भी जेलमें हैं। विना किसी अपराधके ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। उसे सात साल-की बच्ची है। उसकी देखभाल करनेवाला कोई नहीं हैं। इससे वह दुखी है। इसके थोड़ी ही देर बाद जेलमें हलचल मच गई। इस बार पूर्णिमाकी सवारी आयी थी और उससे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। रातको देरतक मैं उससे बातें करती रही। उसके बाद मैं रातभर जागती रह गई। आँगनमें चन्द्रमाकी रोशनी फैल रही थी। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। लेकिन जेलमें सौन्दर्य भी बेचैन बना देता है।

आज मोलाहजाका दिन था। वही पुरानी चहल पहल थी। मि० गार्डनरने कहा कि उर्मिला त्रिपाठीके ऊपर हमलोगोंसे भिन्न अभियोग है। उनपर लूटपाट और आग लगानेका जुर्म है और शायद उनके साथ साधारण कैदियोंकासा बर्ताव किया जायगा। यह एकदम वाहियात बात है क्योंकि न तो उसमें शक्ति है और न स्फूर्ति ही कि वह इस तरहकी कोई हरकत कर सकती है। वह धीमी और सुस्त महिला है। अपनी गृहस्थीके अलावा अन्य किसी बातमें उसे रुचि भी नहीं है। राजनीतिसे तो वह कोसों दूर है।

आज बड़ी गर्मी है। सूर्यकी किरणें आगकी तरह तप रही हैं। सारा शरीर लोहेकी तरह जल रहा है।

२५ अगस्त १९४२

रातकी गर्मी वर्णनातीत थी। लेकिन बैरेक भरमें चन्द्रमाने सफेद चाँदनी बिछा रखा था।

सबेरे भी गर्मी कम नहीं हुई। आजका दिन बुरा होगा। सबेरेसे ही सिरमें अचानक दर्द है। मैंने एस्प्रो खाया है लेकिन कोई लाभ उससे नहीं है। दर्द ज्यों का

त्यों है। आजका दिन आनन्दसे नहीं कटेगा, ऐसा मुझे लगता है।

२६ अगस्त १९४२

पूर्णिमा अपने साथ एक कलेण्डर लेती आई है। पहले तो इसे देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई लेकिन अब मैं देखती हूँ कि इसका असर मस्तिष्कपर खराब पड़ता है। यदि कोई विशेष या असाधारण बात न हो तो कलेण्डर की क्या आवश्यकता है। हमलोगोंके लिये तो कलेण्डर न देखना और दिन न गिनना ही अच्छा है।

कल शामको वार्ड बन्द होनेके ठीक पहले जानकी देवी नामकी महिला हमलोगोंके बीच आपहुँची। इलाहाबाद जिलाके किसी देहाती स्टेशनके लूटने और जलानेका अभियोग उनपर है। लेकिन उन्हें हमलोगोंके साथ नहीं रखा गया। हमारे वार्डसे उन्हें जबर्दस्ती हटाकर काल कोठरीमें बन्द किया गया। जमादारिनसे पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि पुलिसवालोंकी यही हिदायत है। मैंने जमादारिनसे कहा कि जेलवालोंको जेल कानून देखना चाहिये और सुपरिण्टेण्डेण्टसे पूछना चाहिये। मेरी समझमें नहीं आता कि एक ही अभियोगपर पकड़ी

गई दो औरतोंके साथ भिन्न भिन्न व्यवहार क्यों हो। दो घण्टेके बाद जमादारिन वापस आई और जानकी देवीको काल कोठरीसे हटाकर उसी बैरेकमें ले गई जहाँ उर्मिला त्रिपाठी थीं। इससे मुझे और पूर्णिमाको बड़ी शान्ति मिली।

आज सुबह जानकी देवीसे बातें हुईं। वे विधवा हैं और इलाहाबादके नार्मल स्कूलमें पढ़ती हैं। बुद्धिमान महिला हैं।

भयानक गर्मी है। बैरेक भट्टीके समान तप रहा है। सारे शरीरसे पसीना बह रहा है और सिरमें व्यथा रही है। इस लगातार व्यथा और दर्दसे मुझे बड़ी ग्लानि है। इससे पहले मैं एक दो दिनमें ही जेल जीवनका अभ्यस्त हो जाती थी और अपने क्षण-क्षणको काममें लगाती थी। हाँ, बच्चोंके लिये कभी कभी उदासी आ जाती थी, और एक दो बार बच्चोंके लिये बेचैन हो उठी थी। लेकिन इस बारकी हालत एकदम भिन्न है। मैं स्थिर नहीं हो सकती हूँ। किसी काममें मन नहीं लगता। पूर्णिमाकी भी यही हालत है। लेकिन उमीद है कि कुछ दिनमें सब ठीक हो जायगा।

सुना है आज रक्षा बन्धन है। आज सबेरे जेल-

खानेकी अध्यापिका श्रीमती बोथाजू अपनी कलाईमें पीली राखी बाँधे आई। उनके काले रङ्ग पर यह पीला धागा बहुत खिलता था। इस महत्त्वपूर्ण तेहवारकी याद जेलमें यही इनकी कलाईका धागा दिलाता है।

अन्तमें पानी बरसा और गर्मी शान्त हुई।

२७ अगस्त १९४२

"दैनिक तुच्छ वस्तुओंसे ऊपर उठनेकी मुझे शक्ति दो।"

दूसरा दिन, लेकिन यह भी उन्हींके समान है जो बीत गये हैं, मानों फिर वही लौटकर आ गये हैं। ऐसी शून्यता छाई है मानों सोचने और अनुभव करनेकी क्षमता ही नष्ट हो गई है। मेरे सिरमें व्यथा है और मस्तिष्क शून्यसा हो रहा है।

जैनब बड़ी जमादारिनके लिए भूरे रँगकी राखी ले आई। वह हिन्दूके घरमें पैदा हुई थी। अपने पतिके घरसे भगा लायी गई, मुसलमानिन बनाकर उससे शादी कर ली गई। तबसे वह इसी आदमीके साथ है और उसे सुखी रखनेके लिये नौकरी करती है। वह हिन्दू त्यौहारोंको मानती है, गङ्गास्नान भी करती है। वह बड़ी सुशील है और लोगोंकी

अपेक्षा बहुत कम झगड़ती है। वह हँसमुख भी है।

हम लोगोंको जेलयात्रासे वह बहुत खिन्न है। वह हमलोगोंके परिवारकी कुशलताके लिए बराबर ईश्वरसे प्रार्थना करती रहती है। मेरे भोजनकी व्यवस्थासे वह सदा परीशान रहती है और मुझसे नियमित भोजन करनेके लिए सदा आग्रह करती रहती है। किसीको केवल पावरोटी और मक्खन खाते देख और इस कदर चाय पीते देख उसे बड़ी व्यथा होती है। जब मैं उसकी मोटाईकी तरफ उसका ध्यान आकृष्ट करती हूँ और कहती हूँ कि मैं इतनी मोटी नहीं होना चाहती तब वह आकाशकी तरफ हाथ उठाकर कहती है—"यह मेरे भाग्यका दोष है, भोजनसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।" जापानके आक्रमणकी सम्भावनासे वह बेतरह घबरा उठी है क्योंकि अपनी स्थूलताके कारण वह भाग नहीं सकती। उसने यह भी सुन रखा है कि जापानी बड़े भारी मांसाहारी हैं। कितना भीषण है यह ख्याल!

२८ अगस्त १९४२

आज फिर गर्मी है। वार्ड मक्खियों, चींटियों तथा अन्य कीड़ों मकोड़ोंसे भर गया है। हम लोगोंके शरीरसे

इस तरह पसीना बह रहा है कि हम लोग लथपथ हैं। बादल गरज रहे हैं लेकिन पानीका नाम नहीं है। लेखाने 'लाइफ और टाइम'के अनेक अंक भेज दिये हैं। इससे मैं कुछ समय काट सकी हूँ। विज्ञापनोंको पढ़कर बड़ी राहत मिलती है। इनसे रीताकी याद आ जाती है।

इससे तीन सप्ताह पहले रंजीतने बम्बईके लिए प्रस्थान किया था। तबसे उनका कोई समाचार नहीं मिला। उनके लिये मेरी चिन्ता बढ़ रही है। मैं उन्हें पत्र लिखकर स्वास्थ्यके बारेमें सावधान कर देना चाहती हूँ। भाई (पं० जवाहिरलाल) का भी कोई पता नहीं है। यह भी मेरी चिन्ताका कारण बन रहा है। मैं समझती हूँ कि वे मजेमें हैं और किसी चीजकी आवश्यकता उन्हें नहीं है।

इतनी सख्त गरमी है कि बिस्तरपर पड़े रहने और हाँफनेके सिवा और कुछ करना असम्भव है। जहाँ मैं पड़ी हूँ वहाँसे मैं जंगलेके भीतरसे आँगनके दरवाजेको देखती हूँ और उसमें जो लोहेका फाटक लगा हुआ है उसपर कहानीका सूत्र बाँधती हूँ। "बन्द द्वारकी यातना" उपयुक्त शीर्षक होगा।

आज शामको बड़ी जमादारिन फिर बाहर जा रही है। वह अपनी पीली पोशाकसे सजधज कर आई है। इस

पोशाकको उसने पिछले सुपरिण्टेण्डेण्टकी विदाईके जलसे के अवसर पर बनवाया था। सभी जमादारिनें अपना केश क्यों रँगती हैं, यह समस्या मुझे बहुत दिनोंसे परीशान करती आ रही है। कभी कभी इच्छा होती है कि मैं भी अपने केशोंको लाल रँगसे रँग दूँ। यह मुक्तिका एक रूप होगा।

२९ अगस्त १९४२

कल रातकी गर्मी असह्य थी। ऐसा प्रतीत होता था कि बैरेक सिकुड़ता जा रहा है और हम लोगोंका दम घोंट रहा है। मच्छरोंकी बारात आ जुटी थी और उनकी भनभनाहट रातकी निस्तब्धतामें बरदाश्तसे बाहर हो रही थी। रातभर हमलोग बेचैन और परीशान थे। करवट बदलते रात कटी। सुबह जब जरा ठण्ढा हुआ तो ४-३० पर बिगुल बज गई। नींदकी सारी आशा जाती रही।

बैरेक खुलनेके साथही शोरगुल आरम्भ हो जाता है और वह प्रतिक्षण बढ़ता जाता है। घण्टेभर बाद तो इतना भीषण हो जाता है कि आदमी कुछ सोच-विचार भी नहीं सकता। इस दशामें बिस्तरपर पड़ा

रहना तो असम्भव ही है चाहे कोई कितनाही थका क्यों न हो। इसके बाद धीरे धीरे शान्ति स्थापित होने लगती है और ८ बजते बजते सन्नाटा हो जाता है। ८ बजेके बाद सोनेकी चेष्टा करना व्यर्थ होता है। इसलिये तीसरे पहरकी सुखमय नींदकी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। लेकिन तीसरे पहर मक्खियोंकी बाढ़ आजाती है, गर्मी और रोशनीकी चकाचौंध बेचैन कर देती है। साथ ही अनेक तरहके कीड़े मकोड़े तङ्ग करनेके लिए आजुटते हैं। शरीर ढँककर सोना असम्भव है। खुला रखनेपर मच्छरों और कीड़ोंका शिकार बनना पड़ता है। इसलिये लेटे २ पङ्खा झलिये और मच्छरों तथा गरमीसे बचिये। इस बीच यदि आँख लग गई तो पङ्खा हाथ छोड़कर जमीनकी शरण लेता है और मक्खियाँ तथा मच्छरोंको आक्रमणका मौका मिल जाता है। वे वेगसे चढ़ाई कर देते हैं, नींद उचट जाती है और पंखेकी खोज होने लगती है।

३० अगस्त १९४२

आज सबेरे उठी तो शरीर बेदम था। बिस्तर छोड़ने की इच्छा नहीं हो रही थी। लेकिन शोरगुल और झाड़ू-बोहारूके गर्दने उठ जानेके लिये मजबूर कर दिया। चाय

पीकर मैं ९ बजेके करीब पढ़ने बैठी ही थी कि अचानक पूर्णिमा चिल्ला उठी। मैंने चौंककर जँगलेकी ओर देखा। देखती हूँ कि फूलके मालाओंसे लदी लेखा बड़ी जमादारिनके साथ चली आ रही है।

मेरी समझमें नहीं आया कि वह यहाँ कैसे आ पहुँची। पहले तो मैंने समझा कि वह मुझसे मुलाकात करने आई है, लेकिन तब फूलकी मालायें किस लिये? दूसरे क्षण यह ख्याल आया कि शायद हमलोग छोड़े जा रहे हैं। इस समय तक लेखा बैरेकके आँगनमें पहुँच गई थी और उसने उल्लासके साथ कहा कि वह गिरफ्तार कर ली गई है। मुझे सहसा इसपर विश्वास नहीं हुआ। लेखा और गिरफ्तार! लेखा इतनी बड़ी नहीं है कि वह राजनीति समझ भी सके। फिर इनसे छेड़छाड़ क्यों की गई? जब वह आँगनमें खड़ी होकर पूर्ण उत्साहके साथ अपनी गिरफ्तारीकी बात पूर्णिमासे कह रही थी तो मैं टकटकी लगाकर उसे देख रही थी और १८ साल पहलेसे आज तककी उसके जीवनकी सारी बातें सोच रही थी। जब वह नन्हींसी बच्ची थी तब किस तरह जूहूमें बालूपर लेटी रहती थी, किस तरह उसने चलना और बोलना सीखा। इसके बाद वह माण्टेसरी स्कूलमें पढ़ने

गई। उसकी वह प्राणघातक बीमारी और भाग्यसे उसका बच जाना, जिसे पुनर्जन्म ही कहा जा सकता है। १९३२ में मेरे और रञ्जीतके गिरफ्तार हो जानेके ठीक पहले लेखाका पूना स्कूलके लिए प्रस्थानके समय रेलवे स्टेशनका दृश्य—उस समय वह मुश्किलसे आठ सालकी थी। वह चुपचाप अपनी जगहपर बैठी थी, आंखें फाड़कर हमलोगोंको देख रही थी, आँसुओंकी धाराको पोंछती जा रही थी। उसके हाथमें बड़ासा तिरंगा झण्डा था। मैंने कहा—बेटी! झण्डा साथ मत ले जावो।" उसने कहा था—"इसे देखकर पुलिसवाले डरकर भाग जायँगे।"

फिर दूसरा चित्र! राजकोटसे वह घुड़सवारी सीख कर लौटी है। हमलोग जोधपुरके रमणीक और आकर्षक प्रदेशमें हैं। उसमें उल्लास भरा है। बड़े जोशके साथ उसने मुझसे कहा था:—माँ, मेरे शिक्षक कहते हैं कि इसके बाद तुम्हें उल्टे होकर कूदना सीख लेना चाहिये। कैसा रोचक होगा वह! इसके बाद वह तैरना सीखने जाती है। धीरे धीरे उसकी उम्र बढ़ती जाती है। लेकिन उसमें वही भोलापन और वही उल्लास है लेकिन जीवनको नये दृष्टिकोणसे समझने लगती है।

इसके बाद उसकी अठारहवीं वर्ष गाँठका उत्सव होता है—कितनी प्रसन्न थी वह—प्रतिक्षणका पूरा पूरा उपयोग करनेके लिये आतुर ! और फिर इस नाटकका अन्तिम दृश्य । मेरी गिरफ़्तारीकी रात ! आनन्द भवनकी सीढ़ियोंपर खड़ी लेखा मुझे बिदा दे रही है। इसके बाद आजका यह दृश्य ! लेखा जीवनका नया सन्देश लेकर नये रूपमें मेरे सामने आई है। कैसी अनोखी दृढ़ता है उसमें ! हर तरहसे उसपर भरोसा किया जासकता है।

और आज यह जेलके आँगनमें खड़ी है। उम्रका यही तकाजा है ! कदाचित यह उसके लिये अनिवार्य था।

तारा और रीता आनन्द भवनमें अकेली हैं। मकानको पुलिस तथा खुफियावालोंने घेर रखा है ! यह ख्याल रह रहकर मुझे विकल कर रहा है।

गिरफ़्तारीकी कहानी नाटकका स्वांग था। कल रातको ९॥ बजे पुलिस, हथियारबन्द पुलिस और खुफियावाले सदलबल आनन्द भवन पहुँचे। सभी लड़कियाँ सैलके लिये अपने दोस्तोंके साथ रामबाग गयी हुई थीं। दारोगाने लेखाके बारेमें पूछताछ की। जब मालूम हुआ कि वह बाहर गई है तो वे लोग वहीं ठहर गये। उसके कमरेकी तलाशीका वारण्ट निकाला। तलाशीमें कोई

आपत्तिजनक चीज नहीं मिली। वे वापस चले गये। लेखा तबतक वापस नहीं आई थी। आज सबेरे आठ बजे वे आये और लेखाको गिरफ़ार कर लिया। लेखाने कहा :—"मैं उत्तेजनासे काँप रही थी तोभी मैंने शान्त रहनेकी चेष्टा की और पुलिसवालों पर यह प्रगट करनेके लिये कि इस घटनाका मुझपर कोई असाधारण प्रभाव नहीं पड़ा है, देरतक नाश्ता करती रही। मैंने मामाजी (पं० जवाहरलाल नेहरू) की नकल करने की कोशिश की।

३१ अगस्त १९४२

लेखासे मालूम हुआ कि टैंगिल(लड़कियोंका विलायती कुत्ता) सख्त बीमार है। मेरी प्रार्थना पर सुपरिण्टेण्डेण्ट ने घर खबर भेज दी कि यदि उसके जीनेको आशा न हो तो यातनासे छुटकारेके लिये उसका अन्त कर दिया जाय। रातभर मैं इसी चिन्तासे परीशान थी कि बिचारा पीड़ासे छटपटा रहा होगा और उसकी देखभाल करने-वाला कोई नहीं होगा।

सुपरिण्टेण्डेण्टसे मालूम हुआ कि उन्होंने दो बार घर पर टेलिफोन किया था और तारासे बातें हुई थीं। जान-

वरोंके डाक्टर आये थे। उन्होंने टैंगिलको दवा दी। अब वह अच्छा है। उसको बचानेका वह पूरा प्रयास कर रहे हैं।

लेखाको सर्दी हो गई है। आशा है सर्दी बढ़ेगी नहीं। जेलमें बीमार होना अच्छा नहीं है।

समाचार मिला है कि विज्जू भाभी (श्रीमती रामेश्वरी नेहरू) लाहोरमें गिरफ्तार कर ली गईं।

१ सितम्बर १९४२

आजसे घड़ीका समय एक घण्टा आगे कर दिया गया है। इससे हमलोगोंकी तकलीफ बढ़ जायगी। ६ बजे शामको वार्ड बन्द हुआ करता है। अब ५ बजे ही ६ बज जाया करेगा। शामका यही वक्त तो शीतल और सुहावना होता है।

कल रातका मौसिम सुहावना था। मच्छरोंने हम लोगोंका पिण्ड छोड़ दिया था। कई दिन बाद ऐसी सुखमय रात नसीब हुई थी।

हमारे तथा साधारण कैदियोंके बीच जो जगला था वह बन्द कर दिया गया। हमलोग खतरनाक आदमी हैं। भला सरकार यह कैसे बर्दाश्त कर सकती है कि

साधारण कैदी हम लोगोंके संसर्गमें आकर बिगड़ जाय।

हम और लेखाने बर्नर्ड शाको साथ ही पढ़ा। बड़ा आनन्द आया। आज बूँदाबूँदी भी हुई। हवामें शीतलता और ताजगी है। बर्नर्ड शाके नाटकोंके पढ़नेके बाद बन्द हो जानेपर हम दोनोंने साथ ही टामस ब्राउनका 'ड्राइङ्ग रूम" पढ़ा। यह आधुनिक युगका प्रहसन है। इस नाटकमें एक परिवारका वर्णन है जो हमलोगोंके परिवारसे एकदम भिन्न है। इसपर हमलोग खूब हँसे।

२ सितम्बर १९४२

रातमें काफी ठंढक थी। सुबह पानी भी बरसा। पर वर्षा मामूली थी और देखनेसे मालूम होता है कि दिन अच्छा नहीं रहेगा।

टैंगिल अब इस दुनियाँमें नहीं है। घरसे जो खबर आई है उससे मालूम होता है कि कल रातको सुई देकर उसे यातनासे छुट्टी दी गई। कितना प्यारा था वह !

४ सितम्बर १९४२

जिस तरह परमात्माकी गतिकी थाह नहीं मिलती उसी तरह जेलके अधिकारियोंकी हरकतोंकी थाह पाना

कठिन है। हमलोगोंको नव आना रोज भोजनके लिये मिलता है। जब मैं आई तब यह नया नियम लागू नहीं था और हफ्ते भर तक मुझे बारह आना रोजके हिसाबसे मिला। मेरे भोजनका दैनिक सामान सात आनेसे ज्यादा नहीं होता था। मैंने पूछा कि क्या मेरी बाकी रकम मेरे नाम जमा करके मुझे हफ्तेमें एकदिन फल दिया जायगा ? जेलरने कहा, क्यों नहीं। मैंने समझा कि जेलर सज्जन हैं, क्योंकि उनके बारेमें मैं बहुत कम जानती थी। एक हफ्तेतक फल आये भी। लेकिन उसके बाद मैंने पुर्जेपर पुर्जा भेजा लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ। हमलोगोंकी रकम बढ़ती जाती है। फल हमलोगोंको मिलता नहीं। इससे बढ़कर धैर्यकी शिक्षा कहाँ मिल सकती है।

मालूम होता है कि इस बार मैं जेलके अधिकारियोंसे लड़नेके लिये तैयार होकर आई हूँ। इससे पहले मैंने इतना तङ्ग उन्हें कभी नहीं किया था। लेकिन इस बारकी हालत असह्य है। फलके लिए कहलाती हूँ तो दस-बारह दिनके बाद सड़े गले ५।६ केले आ जाते हैं। मैं उन्हें वापस कर देती हूँ। दूसरे दिन जेलके दफ्तरसे पुर्जा आता है—इनका दाम कौन देगा ? मैं लिख देती हूँ—"जेल"। इसी तरह दफ्तरसे पुर्जे आते रहते हैं और

फलके लिये पुर्जे मैं भेजती रहती हूँ और मेरी बचतकी रकम बढ़ती जाती है। जब मैं यह कहती हूँ कि मेरे दो रुपये जमा हो गये हैं तोभी मुझे फल नहीं मिलता, तो उत्तर मिलता है कि बाजारमें ठीकेदारको फल नहीं मिलते। लाचार होकर मैं सुपरिण्टेण्डेण्टको लिखती हूँ कि यदि जेलका ठीकेदार चोर और शैतान है तो मैं उसका शिकार क्यों बनूँ। यदि मेरे लिये फल नहीं आता तो मुझे लाचार होकर ऊपरके अधिकारियोंके पास बाजाब्ता शिकायत भेजनी पड़ेगी। इसका परिणाम यह होता है कि जेलमें हलचल मच जाती है और दो अच्छे काश्मीरी सेब आ जाते हैं। वे जितने सुन्दर हैं उनकी कीमत भी उतनी ही सुन्दर है। मुझे फलोंकी न तो परवा है और न चिन्ता। असल बात यह है कि मैं कम खाती हूँ इसका फायदा मैं जेलवालोंको क्यों उठाने दूँ।

५ सितम्बर १९४२

आज सबेरेसे ही मैं झुँझलायी हुई हूँ। शामसे प्रायः रातभर मूसलधार पानी बरसता रहा। बैरेकमें बाढ़ आ गयी है। बैठने भरके लिए भी सूखी जगह नहीं है। [illegible] हिस्सा भींग गया और लेखा

ता तरबतर है। चारों ओर गुप् अन्धकार और मन-हूसियत छायी हुई है। मन विकल हो उठता है। लकड़ी इस कदर गीली है कि जलती नहीं। ९ बज रहे हैं, पर अभी तक दूधका पता नहीं है। पानी रुकनेके पहले शायद खानेका सामान भी न मिले। अगर एक दिनकी घोर वर्षासे किसी सेण्ट्रल जेलके प्रबन्धमें इस तरहकी गड़बड़ी मच सकती है तो यदि दैवात् किसी शत्रुका आक्रमण हो गया तो यहाँकी क्या हालत होगी, यह सोचकर तो मैं काँप उठती हूँ। इससे यह कल्पना करना सहज है कि जब कैदी और पागल अचानक जेलोंसे छोड़े गये तब बर्मामें क्या हुआ होगा।

रसोई घरमें कुछ कोयला बचा हुआ था। उसीसे स्टोव जलानेका भगीरथ प्रयास पूर्णिमा कर रही हैं। पूर्णिमा और भगवानदेई लम्बरदारिन अपनी पूरी ताकत लगाकर पंखेसे हवा कर रही हैं। लेकिन अभीतक तो केवल एकही परिणाम निकला है, वह है धुँआँ जो समूचे बैरेकमें भर गया है। आगका कोई निशान अभी तक आँखोंके सामने नहीं आया है।

९-२० पर दूध आही पहुँचा पर भोजनकी सामग्री-का कहीं पता नहीं है। उसके बाद एक एक करके सब

सामान आने लगे और तीसरे पहर तक सब कुछ आ गया। आज बड़ी जमादारिनकी साप्ताहिक छुट्टी थी, इससे हङ्गामा मचा हुआ था।

६ सितम्बर १९४२

प्रायः रातभर मूसलधार पानी बरसता रहा। लेकिन सबेरा होते ही बरसना बन्द हो गया। आसमान धीरे-धीरे साफ हो रहा है। आजकल दूध हमेशा देरसे ९ और १० के बीच आता है। भोजनका सामान १०-३० बजे; तरकारियाँ ११ बजे, पावरोटी ४ बजेके करीब और शामका दूध ठीक बन्द होनेके समय तक आजाय तो भाग्य ही समझिये। जेलमें सब कुछ अनिश्चित है और इसके लिये कोई भी जिम्मेदार नहीं है। सही तरीकेसे काम करनेकी अपेक्षा गलत तरीका सदा पसन्द किया जाता है। और प्रतिदिनकी यही रफ़ार है।

भोजनकी सामग्री दिन दिन खराब आने लगी है। कितनी चीजें तो ऐसी खराब होती हैं कि काममें नहीं लायी जा सकतीं। आलू हम लोगोंको नहीं मिलता क्योंकि एक तो महँगा है, दूसरे ठीकेदारका कमीशन कीमतसे भी अधिक है और हम लोगोंका दैनिक भत्ता

कम। जेलमें काफी तरकारियाँ पैदा होती हैं तोभी हमलोगोंके लिए बाजारसे खरीदकर आती हैं। जेलकी चीजें पहले बड़े अफसरोंके यहाँ जाती हैं। उससे बचती हैं तो छोटे अफसरों और उनके मातहतोंको मिलती हैं। परिणाम होता है कि राजनीतिक कैदियोंके लिये बचती ही नहीं।

कैदियोंको जो भोजन मिलता है उसकी सूरत और स्वाद दोनों खराब होते हैं। इससे पहले जेलके चौकेमें बना भोजन मैंने खाया है। उनमें सुधारकी बड़ी गुञ्जायश है लेकिन दिनोंदिन उनकी हालत बिगड़ती ही जाती है। इस बार तो और भी खराब भोजन मिलता है। दाल क्या है, एक दम काला पानी जिसके ऊपर लाल मिरचे तैरते रहते हैं। तरकारीकी वही हालत है। मालूम होता है धोये और साफ किये बिना ही उन्हें उबाल दिया जाता है। न जाने उनमें क्या मिल जाय, इस डरसे उनकी जाँच नहीं की जा सकती। तरकारी बहुत जरासी मिलती है। रोटी भी गन्दी ही रहती है।

भोजन जेलके मर्दाना कितामें बनाया जाता है और वहाँसे जनाना कितामें भेजा जाता है। रास्तेमें ही चोरी हो जाती है। परिणाम होता है कि कितनी ही औरतोंको

रोटी कम मिलती है और हर दूसरे तीसरे दिन इसे लेकर हङ्गामा मचा रहता है।

जेलवालोंसे मेरा द्वन्द चलता ही रहता है। कुछ दिन पहलेकी बात है। मैंने पूछा कि क्या मुझे चायके बदले काफी मिल सकता है। उत्तर मिला कि जेल कानूनमें काफी की जिक्र नहीं है, केवल चाय लिखा है। इसके लिये सरकारी अनुमति लेनी होगी। सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि मैं अनुमति प्राप्त करनेकी कोशिश करूँगा। तीन सप्ताहके बाद मुझे सूचना मिली कि यदि हम चाय लेना छोड़ दें तो काफी मिल सकता है। मैंने आधा पौण्ड मँगाया और उसके लिये १।) देना पड़ा जब कि बाजारमें उसकी कीमत १४ आना मात्र है। हम लोगोंका दैनिक भत्ता ॥-) आना है। इस तरहसे दो दिनसे अधिकका भत्ता आधा पौंड काफी खरीदनेमें लग गया। इतना काफी पन्द्रह दिन चलेगा। इसका फल यह होगा कि हर पन्द्रह दिन पर मुझे दो दिन उपवास करना पड़ेगा। इससे मेरे स्वास्थ्यको अवश्य ही लाभ पहुँचेगा। जो कुछ भी हो भोजनकी अपेक्षा मुझे काफी ज्यादा पसन्द है। मैं फायदेमें ही रही। लेकिन जेलवालोंकी इस तरहकी बेहूदी हरकतोंसे परीशानी हो जाती है।

७ सितम्बर १९४२

सोमवार फिर आपहुँचा। मालूम होता है कि मोलाहिजा का दिन तेजीसे आपहुँचता है। लेकिन कलेण्डर देखनेसे मालूम होता है कि बहुत दिन अभी नहीं बीते हैं। शामको वार्ड बन्द होनेसे पहले जमादारिन मेरे साथ आँगनमें टहल रही थी। उसने गुरिला दलकी एक रूसी लड़कीकी वीरताकी गाथा सुनाई कि वह किस साहसके साथ तार काटे, रेलकी पटरी उखाड़े और स्टेशनोंको जलाये। उसकी वीरतासे वह प्रभावित थी। अन्तमें मैंने कहा—इसी तरहका अभियोग तो जानकी पर है। लेकिन विदेशी शासनकी भाषामें यह आतिशजनी और लूट है। इसे वीरता नहीं कहते। काफी सबूत न होनेपर भी इसके लिए यहाँ सात सालकी कड़ी सजा मिलती है। उसके बाद बातचीत बन्द हो गई।

८ सितम्बर १९४२

रातको छतसे मेरे ऊपर कूड़ा करकट गिरा और मेरी नींदमें बाधा पड़ी। बारबार उठकर मुझे बिस्तर झाड़ना पड़ा। प्रायः २-३० बजे लेखा चिल्लाकर बिस्तरसे

कूद पड़ी। उसकी छातीपर बड़ासा चिमगादड़ गिर पड़ा था। हमलोगोंने उसे बिस्तरसे अलग किया लेकिन वह घण्टोंतक अस्थिर रही। इसके बाद तो सोना असम्भव हो गया। कौन कहता है कि जेलजीवनमें रोमाञ्च नहीं है।

१० सितम्बर १९४२

आज किसीने हम लोगोंके लिए फूलोंका एक गुच्छा भेज दिया। जेलजीवनमें इन फूलोंका कितना अधिक महत्व है!

११ सितम्बर १९४२

कल वार्ड बन्द होनेके आध घण्टा बाद शदर फाटक पर जोरोंसे भड़भड़ाहट हुई। बड़ी जमादारिन हाँफती आई और बोली—'श्रीमती इन्दिरा भी आपहुँची।' क्षणभर बाद ही पाँच औरतोंके साथ इन्दु आई। उसके साथ रामकली देवी, महादेवी चौबे, लक्ष्मीबाई वापट और दो युवती लड़कियाँ—विद्यापति और गोविन्दी देवी—थीं। मालूम हुआ कि औरतें सभा करना चाहती थीं लेकिन सभा आरम्भ होनेसे पहले ही पुलिस आधमकी और

इन्दु तथा वहाँ उपस्थित अन्य महिलाओंको गिरफ़ार करना चाहा। भीड़ और पुलिसमें हाथापाई हो गई। इन्दु छीना झपटीमें पड़ गयी। उसे कई जगह हलकी चोट लग गई और उसकी साड़ी फट गई। अन्तमें वे गिरफ़ार कर यहाँ लाई गईं। फिरोज भी गिरफ़ार कर लिया गया है। हमारे वार्डमें हलचल मच गई। इन्दुको यहाँ रखा गया और बाकी लोगोंको बगलवाले वार्डमें। ये सब देरतक उत्तेजित रहीं तब कहीं जाकर शान्त हुईं।

इन्दुको भी भाईका समाचार नहीं मिला है। इससे मैं बहुत चिन्तित हूँ। जो थोड़ा समाचार उसे बापू (महात्मा गांधी) का मिला था, वह भी शान्तिप्रद नहीं था।

रञ्जीतकी तबीयत खराब हो गई थी। इससे वे बम्बई से रवाना नहीं हो सके थे। अलाहाबाद लौटनेसे पहिले वे दस दिन खालोमें बिताना चाहते थे। रञ्जीतके लिए मैं बहुत ही व्यग्र हूँ। उनकी देखभालकी बहुत जरूरत है।

१२ सितम्बर १९४२

बूढ़ी महाराष्ट्र रमणी लक्ष्मीबाई वापट हमलोगोंके लिए महान सङ्कट हैं। १९३२ के पहिलेसे ही मैं उन्हें

जानती हूँ लेकिन सौभाग्यसे उस समय हम लोगोंका रास्ता अलग अलग था। मोकदमेके बाद मुझे लखनऊ और उन्हें फतहगढ़ भेज दिया गया था। लेकिन इस बार तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम लोगोंको अन्त तक साथ ही रहना पड़ेगा। ईश्वर ही हम लोगोंकी रक्षा करेगा। वह सुबह शाम घण्टों विकृत स्वरसे गीताका पाठ करती हैं। और उसके बाद महाराष्ट्र और अपने पूर्वजोंकी गाथा दोहराती रहती हैं। इस समय उनकी उम्र ६० साल की है।

१३ सितम्बर १९४२

आज सबसे अधिक गर्मी है। ऐसी गर्मी इधर कभी नहीं पड़ी थी। दिन भरमें तीन बार स्नान किया तोभी शान्ति नहीं मिली। दो दिन से भोजन भी कम किया है। तबीयत परीशान है। इस तरह प्रतिदिन कब तक दवा खाती रहूँगी। इन्दुको बुखार हो गया है। लक्षण अच्छे नहीं हैं। विद्यावती गर्भवती है और गोविन्दी अभी केवल १२ साल की है। दोनोंको छोड़ देना चाहिये। इस तरह की जवान गर्भवती स्त्रीको जेलमें बन्द रखना सरासर अन्याय है, खासकर जब उसका इतना ही अपराध है

कि वह सभामें शामिल थी और उसके गर्भमें जो नन्हा शिशु है वह तो सर्वथा निर्दोष है। न जाने इस सरकारके मनमें क्या है !

आज द्वितीयाका चन्द्रमा उदय हुआ है। बैरेकके ऊपर आकाशमें वह चाँदीके हँसुएकी तरह लटक रहा है। देखनेमें कैसा सुन्दर और सुहावना लगता है। मैं, इन्दु और लेखा अपनी व्यवस्था कर रही थीं। मेरे जिम्मे दोपहरका भोजन तैयार करना है और वे दोनों रातका व्यालू तैयार करेंगी। सबेरे कोई झंझट नहीं है क्योंकि हमलोग केवल चायमात्र पीती हैं।

दोनों लड़कियाँ पढ़ाईकी नियमित व्यवस्था करना चाहती हैं। इन्दुने लेखा को फ्रेञ्च पढ़ानेका भार लिया है। लेखाने अपनी पाठ्य-पुस्तकोंकी अनुमति माँगी है ताकि वह अपनी परीक्षाकी तैयारी कर सके। यहाँ कुर्सी टेबुलका कोई प्रबन्ध नहीं है। इससे पढ़ाईमें सुविधा नहीं होगी। कल मैंने एक कुर्सी माँगा तो उत्तर मिला कि जेलके गोदाममें कुर्सी नहीं है। कुर्सीसे भी अधिक जरूरत मीटसेफकी है जिसमें खानेका सामान सुरक्षित रह सके। चीनीमें चींटियाँ चढ़ जाती हैं और दूध बिल्ली पी जाती है।

१५ सितम्बर १९४२

मैं लारेन्स हाउजमैनका आत्मचरित पढ़ रही थी। अपने स्कूल जीवनकी चर्चा करते हुए उसने लिखा है—"स्कूल-की जो व्यवस्था मेरे समयमें थी और जिसे अधिकारीवर्ग जारी रखना चाहेंगे—उस व्यवस्थामें शिक्षाके अधिकारी यही सबसे समीचीन समझते हैं कि छोटे छोटे बच्चोंपर कड़ा शासन रखा जाय। इससे उनका चरित्र सुधरता है और वे नेक बने रहते हैं। सम्भव है ऐसा होता हो लेकिन सख्ती करनेवालोंपर इसका कैसा प्रभाव पड़ता है? दुर्बल और शक्तिहीन पर कठोरता दिखलानेका फल यही होता है कि शक्तिशाली, कायर और घृणास्पद बन जाता है। मेरा अपना ख्याल है कि स्कूलोंमें सख्ती और शासन करनेका ही फल है कि मनुष्यमें साम्राज्य-वाद और हुकूमतकी लिप्सा जागरित हो उठी है।"

आगे चलकर उसने लिखा है—'मेरे स्कूलजीवनने ही मुझे डेल्फीके मन्दिरमें खुदे हुए उस यूनानी कहावतकी सचाईका ज्ञान कराया—'यदि तुम किसी मनुष्यको पहचानना चाहते हो तो उसे अधिकार दे दो।' मुझे जहाँ कहीं भी अधिकारकी झाँकी मिली है—जिसे उसके

प्रशंसक कल्पनाकारी अत्याचार कहते हैं—मैंने उस मनुष्यके वास्तविक चरित्रका नग्नरूप देखा है। उसका परदा खुल जाता है और मुझे यही अनुभव हुआ है कि शासक और शासित दोनोंके चरित्रके पतनके बिना वह अपने पदकी मर्यादाको नहीं निभा सका है। यदि सन्तोंको भी दूसरोंके ऊपर अनियन्त्रित अधिकार दे दिया जाय तो जुल्म करनेसे बाज नहीं आवेंगे क्योंकि जुल्म और अत्याचार की भावना मानव प्रकृतिमें कूट कूटकर भरी हुई है।" इस पर टीकाकी जरूरत नहीं है।

१७ सितम्बर १९४२

लोगोंकी संख्या जितनी बढ़ती जा रही है उतनी ही ज्यादा मेरी एकान्त-प्रियता उग्र होती जा रही है। दो सप्ताह पहले मैं यहाँ अकेली थी। मुझे सूनापनका अनुभव होना स्वाभाविक था। साथ ही जेल जीवनके अनुकूल अपनेको बना सकनेके कारण मुझे बाहरकी घटनाएँ और लड़कियोंकी चिन्ता परीशान करती रहती थी। लेकिन ये बाधायें धीरे धीरे अन्तर्हित हो जायँगी। मैंने जेलमें महीनों अकेले बिताया है और साथीकी उत्कण्ठा कभी नहीं हुई!

इधर कई दिनों तक इतना ज्यादा हल्ला होता रहा है कि कोई चिन्तन भी नहीं कर सकता, पढ़ना तो असम्भव ही है। मैं घबरा उठी हूँ। शायद पुरानी आज्ञा पर्याप्त नहा थी। इसलिये नयी आज्ञा जारी हुई है कि रातको हर पन्द्रह मिनट पर साधारण कैदियोंकी तरह हमलोगोंकी भी गिनती हुआ करे। इसका फल यह हुआ कि है रातभर कर्कश ध्वनि होती रहेगी और नींद हराम हो जायगी। जेल अधिकारियोंके तरीके अगम और अगोचर हैं।

१९ सितम्बर १९४२

आज सुबह ६ बजे आनन्द भवनमें रञ्जीत गिरफ्तार कर लिये गये। वे परसों रातको बम्बईसे लौटे। विचारी तारा और रीता ! मैं समझ बैठी थी कि कमसे कम ५।७ दिनोंतक पिताके सहवासका सुख उन्हें मिलेगा। लेकिन आजकल तो मनुष्य जो सोचता है उसे ब्रिटिश सरकार व्यर्थ कर देती है।

फिरोजको साल भरकी कड़ी कैद और २००) रु० जुर्मानेकी सजा हुई है। हमलोगोंसे तो वह कहीं अच्छा है। इस तरह अनिश्चिततामें पड़े रहनेसे तो लम्बीसे लम्बी अवधिकी सजा कहीं अच्छी है। मनुष्य अपनी हालत

जान तो जाता है। इस तरह तो हमलोग एकदम अन्धकारमें हैं। लम्बीसे लम्बी सजासे भी मैं परीशान नहीं होती चाहे वह हमें हो या किसी दूसरेको।

२० सितम्बर १९४२

आज सुबह यकायक सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि काफी देनेका अधिकार मुझे नहीं है। जेल कानून सुना दिया गया। इसका अभिप्राय यह था कि नियममें न होनेके पर भी वे लोग मेरे साथ रिआयत करते जा रहे थे। इसपर मुझे क्रोध आगया और मैंने कह दिया कि मैं कोई रिआयत नहीं चाहती। काफी वापस ले जाइये। यह कहकर मैंने काफीका टिन सुपरिण्टेण्डेण्टके सामने पटक दिया। बादमें मुझसे कहा गया कि मैं चायके बदले काफी खरीद सकती हूँ। इसमें कोई दिक्कत नहीं होगी।

२३ सितम्बर १९४२

रातभर लेखा बेचैन थी। आज भी फोडेके फूटनेके कोई लक्षण नहीं दीखते। उसे बड़ी व्यथा है। मुर्दासी हो रही है। उसे ९९ से १०० बुखार बराबर रहता है।

इन्दुको बाहर सोनेकी आज्ञा मिल गई थी तोभी

उसे रात नींद नहीं आई क्योंकि उसकी चारपाई बरामदे-
में थी और हवाका रुख दूसरी ओरसे था। पहले हम
लोगोंको इसका ख्याल नहीं था। जब मालूम हुआ तब
बिस्तर हटाना मुश्किल था।

२४ सितम्बर १९४२

कल शामको अचानक बिना किसी कारण मुझे
थकान मालूम होने लगी। आठ बजेके करीब मेरे लिये
बैठे रहना असम्भव होगया। लेखाके फोड़ेपर पट्टी
बाँधनेके बाद ही मैं बिस्तर पर लेट गई और करीब
४५ मिनट तक पड़ी रही। रातमें ठण्ढक थी, मच्छरोंका
प्रकोप नहीं था तोभी मुझे अच्छी नींद नहीं आई।

लेखाका फोडा और फैल गया है ऊपरका चमड़ा उभड़
आया है। उसके नीचे नोकसा निकल आया है। यह
लक्षण पहले भी प्रगट हुए थे तोभी फोड़ा फूटता नहीं
दिखाई देता। मैं तो परीशान हो गई हूँ और बिचारी
लेखा भी तङ्ग आगई है। तोभी वह असाधारण धैर्यका
परिचय दे रही है।

रातमें काफी ठण्ढक थी। इन्दु वार्डके भीतर ही
रही। रात उसे अच्छी नींद आई।

२७ सितम्बर १९४२

सब कुछ पूववत् है। समय भी उसी तरह है। मालूम होता है कि समय अड़कर खड़ा हो गया है। लेखाके फोड़ेपर भी जेलके वातावरणका असर पड़ा है और उसकी बाढ़ रुक गयी है। कलसे इन्दुकी हालत अच्छी है। वह प्रसन्न दिखाई देती है। उसका तापमान सबेरे ९९.२ रहता है और शामको कभी कभी जब वह थकी होती है तब ३।४ प्वाइण्ट तापमान बढ़ जाता है।

२८ सितम्बर १९४२

सुना है कि फिरोज भी इसी जेलमें लाया गया है। इसके साथ मलाक्का जेलसे सैकड़ों अन्य कैदी लाये गये हैं। सभी 'सी' श्रेणीमें रखे गये हैं। इस समाचारसे मैं उद्विग्न हो उठी हूँ। खबर मिली है कि बीमारीके कारण इन्दु रिहाईकी सिफारिश की गई है। उसका तापमान बढ़ता ही रहता है।

मैंने तै किया था कि आजसे मैं सोमवारको उपवास किया करूँगी। लेकिन आज ऐसी कमजोरी मुझे मालूम हो रही है कि मैं रुक जाना चाहती हूँ।

मालूम होता है कि सबको जुखाम हो गया है। हर

तरफसे खासने और छींकनेकी आवाज आती रहती है। कहीं मैं भी शिकार न हो जाऊँ। यह बैरेक जाड़ेमें बर्फिस्तान और गर्मीमें भट्ठी बन जाता है। कैसा सुन्दर है यह स्थान ! न जाने जेलोंको कौन बनाता है ?

रात अँधेरी है। घोर अन्धकार छाया हुआ है। बाहरी दीवार रातका शैतानकी तरह भीषणकाय और भयानक हो उठती है। आज उसकी रेखा तक नहीं दिखाई दे रही है। ऐसा मालूम होता है कि हमलोगोंके सामने काला परदा लटका दिया गया है ताकि आँगनसे आगे हमलोग न देख सकें।

अधिकाधिक राजनीतिक कैदी प्रतिदिन आते रहते हैं। पुलिसकी लारियोंकी गड़गड़ाहट और कांग्रेसी नारोंसे मुझे मालूम हो जाता है कि राजनीति कैदियोंका नया दल आपहुँचा। कभी कभी अपने वार्डकी दूसरी ओर लड़कोंके पीटे जानेकी आवाज सुनाई देती है। घुमा फिराकर सवाल करके मैंने मालूम कर लिया कि छात्रों-को पकड़कर यहाँ लाया जाता है और उन्हें बेंत लगाकर छोड़ दिया जाता है। इनमेंसे बहुत तो कम उम्रके हैं जो सभा या जुलूसमें शामिल होनेके कारण पकड़ लिये जाते हैं।

१ अक्तूबर १९४२

आजका सुबह सुहावना है। रात चैनसे कटी। बहुत दिनोंके बाद ऐसी रात मिली थी।

मुंशी और साखू आज दिनसे बीमार हैं। बड़ी हुज्जतके बाद मैं बड़ी जमादारिनको राजी कर सकी कि जेलके बड़े डाक्टरको बुलाकर इनकी जाँच कराये। मालूम होता है कि दोनोंको इन्फ्लूएञ्जा और ब्रांकाइटिस होगई है। लेकिन इसकी जेलवालोंको लेशमात्र भी चिन्ता है। साखूकी हालत खराब है तोभी उसे कुछ नहीं दिया गया है। साधारण कैदियों तथा उनके बच्चोंकी जो उपेक्षा की जाती है, उसे आँखों देखना पड़ा है, तब भला अविश्वासका सवाल कैसे उठता है। जेलमें बीमार होनेसे बुरी और कोई सजा इन्सानके लिए नहीं हो सकती।

बूढ़ी मराठी महिला लक्ष्मीबाई दोबारा आ गई। लेकिन इस बार वे राजनीति श्रेणीकी कैदी हैं। ईश्वरको धन्यवाद!

२ अक्तूबर १९४२

आज बापूकी ७४वीं वर्षगाँठ है।

३ अक्तूबर १६४२

धीरे धीरे दिन और रात दोनों मनोहर होने लगे हैं। रातको ग्यारह बजे हैं तोभी कुछ कुछ ठण्ढा है।

लेखा का फाड़ा गायब हो गया। मांसका एक हल्का लोथ रह गया। आयोडिन मलहमका प्रयोग उसपर हो रहा है। दर्द नहीं रह गया है। इससे वह पढ़ और व्यायामकर अपना दैनिक कार्यक्रम चला लेती है।

दो दिन पहले वार्ड बन्द होनेके ठीक पहले, एक युवती लायी गई। उसकी गोदमें दो सालका शिशु है। वह 'सी' श्रेणीकी हाजती कैदी है। उसका अपराध इतना ही है कि वह तिरंगा झण्डा लेकर सड़ककी पटरीसे जा रही थी। दस दिन पहले कांग्रेसका परचा बाँटनेके अपराधमें उसके पति गिरफ़ार हो गए थे। इसके मनकी हालत जानना कठिन है। वह इस तरह मौन और उदासीन रहती है मानों उसके इर्द गिर्द कुछ हो ही नहीं रहा है। अपने शिशुको भी ठीक तरहसे सम्हाल नहीं सकती, यद्यपि यह उसका तीसरा बच्चा है। कभी कभी मानव जीवन इतना ज्यादा अस्पष्ट हो जाता है कि

उसका थाह नहीं मिलता। इस तरहके सवाल उठने लगते हैं जिनका जवाब कहीं नहीं मिलता।

४ अक्तूबर १९४२

कल डाक्टरसे मालूम हुआ कि मुझे, इन्दरा और लेखाको 'ए' श्रेणीमें कर दिया गया है और अबसे हम लोगोंको भोजनके लिये १२ आना रोज मिला करेगा। रञ्जीत और डाक्टर काटजू भी 'ए' श्रेणीमें रखे गये हैं। इससे अधिक डाक्टरको नहीं मालूम था इसलिये हमलोग यह नहीं समझ सके कि यह श्रेणी विभाजन किस आधार पर हुआ है और इससे हम लोगोंको और क्या सुविधा प्राप्त हो सकेगी। इसे मैं उचित नहीं समझती। इसलिये जबतक विस्तृत हाल न मालूम होजाय मैं इसे कदापि स्वीकार नहीं करूँगी। इसलिये मैंने सुपरिण्टेण्डेण्टको लिखा है। सम्भव है कल मोलाहिजाके समय कुछ बातें मालूम हो जाय।

५ अक्तूबर १९४२

कल रातको बड़ी चिल्लाहट मची। मेरे जँगले पर खड़ी होकर जोहरा चिल्ला रही थी। उसकी चिल्लाहटसे

मेरी नींद टूट गई। रातके २ बजे थे। वह चिल्लाकर कह कह रही थी कि कण्ट्रोल वाचके पास साँप उसका रास्ता रोककर पड़ा है। पहले तो मेरी उठनेकी इच्छा नहीं हुई, लेकिन जोहराकी चिल्लाहटसे उठना ही पड़ा। मैंने अपना टार्च जलाया। मैंने देखा कि एक भूरे रङ्गका पतला जहरीला साँप, जिसकी लम्बाई प्रायः गजभर थी, मेरे विस्तरके ठीक सामने जँगलेके बाहर दीवालके पास फैला हुआ है। मैंने कहा कि तुम पहरे परके सन्तरीको खबर दे दो ताकि वह आकर इसे मार डाले, लेकिन दोनों लम्बरदारिनोंके कहने पर भी न तो उसने बड़ी जमा-दारिनको खबर ही दिया और न स्वयं ही कुछ किया। साँप प्रायः ३-३० बजे तक उसी तरह फैला पड़ा रहा क्योंकि दोनों लम्बरदारिनें इस कदर डरी हुई थीं कि वे उसे मार नहीं सकती थीं और सन्तरीको इसकी चिन्ता नहीं थी। हमलोग तो तालेके भीतर बन्द थे इसलिये कुछ कर नहीं सकते थे। अन्तमें साँप गायब हो गया। मैं नहीं कह सकती कि किधर गया क्योंकि जँगलेसे अगल बगलमें दूर तक नहीं दिखाई देता। यदि दैवात् साँप किसीको काट ले तब क्या होगा? जबतक कोई सदर फाटकसे कुञ्जी लेकर जनाना किता खोलनेके लिये

आवे तबतक तो साँपके उस शिकारकी आत्मा न जाने कहाँ पहुँची रहेगी। बुरा क्या है?

६ अक्तूबर १९४२

आज सवेरेकी हवा में ठंढक थी। इसलिये कुछ देरके लिये मुझे गरम कपड़ा पहनना पड़ा। कलसे मैं उस शिशुमें ही व्यस्त हूँ। उसके लिये कपड़े सीकर तैयार किये और उसे नहलाया धुलाया। उसके शरीर पर मैलकी तह जमी थी। यह बात समझमें ही नहीं आती कि कोई रमणी अपने बच्चेको इस हालतमें कैसे देख सकती है।

रञ्जीतने कुछ बीज और कलम भेजे हैं। अपने बैरेकमें पारसाल जो फुलवारी उन्होंने लगायी थी वह हरीभरी है। पिछली मुलाकातके समय वे मेरे लिये फूलोंका एक गुच्छा लेते आये थे। हमारे बैरेककी जमीन पथरीली है इससे बड़ी जमादारिनने कुछ गमले और देवदारुके बक्स ला देनेका वादा किया है जिसमें हमलोग बीजों और पौधोंको लगा सकें। लड़-कियाँ इससे बहुत खुश हैं।

बड़ी जमादारिनकी कृपा एक कैदी ओवरसीयर

परसे हटकर दूसरे पर हो गई है, इसे लेकर कल वार्डमें हङ्गामा मचा रहा। रोनाधोना और कलपना सारे दिन मचा रहा। इससे वार्डमें एक तरहकी उदासी छाई रही। इस तरहकी बातोंसे मुझे विस्मय होता है। लगातार कई महीने तक एक कैदी ओवरसीयर जमदा-रिनको इस तरह अपनी मुट्ठीमें रखेगा कि कैदियोंके सम्बन्धमें उसके वाक्य ही कानून हैं। वह भेदियाका भी काम करती है। इसके बदले जमादारिन उसे सुरती, ज्यादा भोजन, अधिक कपड़ा और कभी कभी पैसे भी देती है। हाँ, पैसेवाली बात हमलोगोंसे गुप्त रखी जाती है, और अचानक उसपरसे कृपाकी छाया हटा ली जाती है और दूसरे पर उसकी बर्षा होने लगती है। इससे वैमनस्य और झगड़ा ही नहीं बढ़ता बल्कि जेलमें जो दाँवपेंच और चालबाजियाँ हुआ करती हैं उसका भी यही कारण है।

७ अक्तूबर १९४२

आज भोरके वक्त इतनी ठण्ढक थी, कि हम सब लोगों को कम्बल ओढ़नेकी इच्छा हुई। मेरा पतला शाल पर्याप्त नहीं था और अपने तलवेको गरम रखनेके लिए

मुझे पैरोंको समेटकर रखना पड़ा। इस समय जेलमें चारोंओर सफाईकी धूम है। जेल विभागके इन्स्पेक्टर जेनरल, जिन्हें जेलकी भाषामें 'झण्डैल' कहते हैं, सालाना मुआइना करने आनेवाले हैं। वे किसी वक्त भी आ सकते हैं क्योंकि किसी दूसरे कामके सिलसिलेमें वे कल अलाहाबाद आरहे हैं और यदि उनकी इच्छा हुई तो इधर भी पधार सकते हैं। खैर, इसी बहाने थोड़ी सफाई तो होजायगी। जेलका यह हिस्सा इतना ज्यादा गन्दा कभी नहीं था। इससे पहले जो बड़ी जमादारिन थी वह गन्दगीसे बहुत चिढ़ती थी। सफाई पर उसका बहुत ख्याल रहता था। सभी चीजें साफ सुथरी रहती थीं, हम लोगोंका यह बैरेक भी, जो धीरे धीरे ढह रहा है और जिसे साफ रखना कठिन काम है, इतना साफ रहता था जितना सम्भव था। हफ्तेमें दो बार छतकी धरनें साफ की जाती थीं और जँगलोंके छड़ोंमें पालिस लगाया जाता था। अब तो सभी काम टाल दिये जाते हैं और इसकी किसीको अधिक परवा नहीं है। कभी-कभी मैं नारायनीको ऊपर चढ़ाती हूँ। वह गर्द और झाला गिरा देती है लेकिन फिर सब कुछ ज्यों का त्यों हो जाता है।

बैरेकमें चूहोंकी तायदाद बढ़ रही है और वे तङ्ग करने लग गये हैं लेकिन मेढ़कोंने बिदा ले ली है। आज जमनी स्कूलसे वापस आई और अपनी माँके पास दौड़ पड़ी। उसे देखकर जमादारिनने उसके इस तरह चले आनेका कारण पूछा। वह यहाँ सुरती लेने आई थी। उसे सुरती खानेकी आदत पड़ गई है और यह तथा इससे कम उम्रके बच्चे भी बिना इसके नहीं रह सकते। कैसी दयनीय है यह बात! बड़ी जमादारिन भी इसे रोकनेमें असमर्थ है। तीन सालकी उम्रसे ही इनके दांत खराब हो गये हैं और शैतान की तरह लगते हैं। यह बड़ी शर्मकी बात है। असल बात यह है कि इन पर कोई अनुशासन नहीं है। बड़ी जमादारिन जानती है कि सभी कैदी औरतोंके पास रुपया है और वे लम्बरदारिनोंके मार्फत सुरती मँगाती हैं। वह यह भी जानती है कि सभी कैदी औरतें अपना तेल, साबुन बेचकर सुरती और सुपारी मँगाती हैं तोभी उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती। कैदी जानते हैं कि कुछ होगा नहीं, इसलिए यह सब करते हैं। जेलोंमें अप्राकृतिक व्यभिचारकी मात्रा बहुत बढ़ी चढ़ी है, तोभी अधिकारीवर्ग इतने उदासीन हैं कि देखकर विस्मय होता है। इन

मामलोंमें सबसे ज्यादा कसूर तो लम्बरदारिनोंका है क्योंकि ये इस काममें सबसे ज्यादा मदद करती हैं। जब तक कि इन पदोंपर उपयुक्त लम्बरदारिनें नहीं रखी जातीं और बड़ी जमादारिन पूरी योग्यता की न हो तब-तक इस दिशामें किसी तरहका सुधार सम्भव नहीं है।

आज घरसे तीन नई पुस्तकें आई हैं। लिन यूटांग लिखित "ए लीफ इन दी स्टार्म" नामक उपन्यास और दो अन्य।

८ अक्तूबर १९४२

आज तीसरे पहर तीन बजे इन्स्पेक्टर जनरल आये और साढ़े तीन मिनटका समय हमारे वार्डमें लगाया। वे बहुत प्रसन्न दीखते थे क्योंकि उन्होंने दो बार इस वाक्यको दोहराया, "मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप अच्छी तरह हैं।" उनके बाहर होते ही जेलकी हालत फिर उसी तरह ढीली ढाली होगई। बड़ी जमादारिन एक दम थक गई थी, और मेरे विस्तर पर पड़ गई और दक्खिनी अफ्रिकन जेनरल की रिश्तेदारिन श्रीमती बोथाजू भूखी और जाग्रत चेतनाकी दशामें थीं। एक प्याली चाय और दो टुकड़ा पावरोटीके बदले उन्होंने

अपनी जीवन-कथा और गीतोंको सुनाकर हम लोगोंका मनोरञ्जन किया। जेलके गौशालामें कोई सङ्कट आगया था इसलिये ६-३० से पहले शामका दूध नहीं आ सकता था। फलस्वरूप वार्ड बन्दीमें भी देर हुई। सूर्यास्त जल्दी होने लगा है इसलिये बन्दीके पहलेका आधा घण्टा वक्त बड़ा सुहावना रहता है।

अमेरीकन हवाई जहाज कई दिन तक जेलके ऊपर मँडराते रहे। इसी तरह वे गया तक चक्कर लगाते रहते हैं। रातमें ये हवाई जहाज तारोंके बीच लुकारीकी तरह बहुत सुन्दर दीखते हैं और उतनी दूरी परसे भी उनकी हरी और लाल रोशनी रत्नोंकी तरह चमकती रहती है।

६ अक्तूबर १९४२

रात अच्छी नींद आई। बड़ी जमादारिनसे मालूम हुआ कि कल रञ्जीतके साथ मेरी और लेखाकी मुलाकातके लिये आज्ञा मिल गई है। मैं बड़ी चञ्चल हो गई हूँ। बम्बई छोड़नेके पहले ही उन्होंने इस मुलाकातके लिये दरख्वास्त भेजी थी। सरकारी अहल्कारोंको समझ

से कोई मतलब नहीं। जो हो, इस मुलाकातके लिए हमलोग कृतज्ञ रहेंगे।

१० अक्तूबर १९४२

मैं और लेखा आज रञ्जीतसे मिलीं। उनके पैरकी तकलीफ कम नहीं हुई है तोभी वे अच्छे दीखते हैं। उन्हें देखकर बड़ी खुशी हुई। लेकिन जेलमें मुलाकातोंका कैसा असन्तोषजनक तरीका है!

११ अक्तूबर १९४२

कल रातको दूसरे बैरेकमें भगवानदेई और नारायणी के बीच भयानक कलह उठ खड़ा हुआ। मामूली बातपर झगड़ा होगया और देखते देखते उसने उग्ररूप धारण कर लिया। यह झगड़ा गला फाड़ फाड़कर चिल्लाने तक ही सीमित नहीं था, बल्कि गन्दीसे गन्दी गालियोंका प्रयोग किया गया, जिन्हें सुनकर शर्मसे सिर झुक जाता है। इस तरहके झगड़े आये दिन होते ही रहते हैं। मैं तो तङ्ग आगई हूँ। मुझे मजबूर होकर इसकी फरियाद बड़ी जमादारिनसे करनी पड़ी है। मैंने उससे कहा है कि राजनीतिक बैरेकमें केवल एक ही आदती कैदी बन्द

किया जाय। चूँकि भगवानदेई कैदी ओवरसीयर है इसलिए नारायणी की कोई जरूरत नहीं है। झगड़ेका आरम्भ नारायणी ही करती है। लकिन उसे बुरी तरह पछाड़ खानी पड़ती है।

कल रातको मर्दाना कितासे एक कैदीने भागनेकी कोशिश की। अभागेने पाँच सालकी सज़ा प्रायः पूरी कर ली थी। दोही महीनेमें छूटनेवाला था। उसे तपेदिककी शिकायत है। अब तो उसपर मुकदमा चलेगा और कमसे कम साल भरकी सजा अवश्य होगी।

१२ अक्तूबर १९४२

आज ईद है। इसलिए मोलाहिजा नहीं हुआ।

कल रातको फलकी टोकरीपर दीमकोंने आक्रमण कर दिया और दो एक फल नष्ट कर दिये।

१३ अक्तूबर १९४२

उस राजनीतिक बंदिनीका बच्चा दिन दिन निखरता जा रहा है। जेलकी जलवायु उसके अनुकूल सिद्ध हुई है और हमलोगोंके जीवनका तो वह एक अङ्ग बन गया

है। उसकी माँके छूटकर चले जानेपर हमलोग बच्चेका वियोग महसूस करेंगे।

१४ अक्तूबर १९४२

आज रञ्जीतको दो एक किताबें भेज दी हैं। दीवारके ठीक दूसरी तरफ उनका वार्ड है फिर भी कितना दूर है। मैं उनसे मिलने और बातें करनेके लिये कितना व्यग्र रहती हूँ।

न्यूराइटिसके आक्रमणसे मेरी हालत एकदम खराब होगई है। जेलवालोंने मिहरबानी करके मेरी दो साड़ियाँ जेलके धोबीको दे दी हैं। लेकिन आज दस दिन होगये पर साड़ियाँ अभी धुलकर वापस नहीं आईं। जो दो मैं पहनती हूँ उनका रङ्ग एकदम मटमैला हो गया है। मेरे लाख यत्न करने पर भी इनका रङ्ग सफेद नहीं हो सकेगा। जेलमें साफ सुथरा कपड़ेका अभाव मुझे सबसे ज्यादा खलता है। कितना भी साबुन क्यों न लगाया जाय, कपड़े मन लायक साफ नहीं होते। मैं तो इसी परिणाम पर पहुँची हूँ कि जेलमें सफेद कपड़ा पहनना ही नहीं चाहिये।

१५ अक्तूबर १९४२

दिन उसी तरह बीतता जा रहा है। बिचारी लेखाकी दाहिनी कखौरीमें पाँच गिल्टियाँ निकल आई हैं। अभी तक तो उनसे कोई कष्ट नहीं है लेकिन वे बढ़ सकती हैं। जेलका इलाज इतना पक्का होता है कि उससे शायद ही कोई बीमारी दूर होती हो। विलासो माईकी सलाह हुई कि गिल्टीके पासका हिस्सा धीरे धीरे मला जाय तो वह बैठ जायँगी। लेखा राजी हो गयी और मलनेकी क्रिया उन्होंने की। गिल्टी दब जायगी या नहीं, सो तो नहीं कहा जा सकता लेकिन विलासो माई मलनेकी क्रियामें बड़ी दक्ष हैं। विलासो माई असाधारण बूढ़ी महिला हैं। वे इस जेलमें आठ सालसे लम्बरदारिन हैं। उनके सिरके केश सफेद हो गये हैं लेकिन उनका चेहरा सदा प्रसन्न रहता है। अब भी वे केशोंका जूडा बाँधती हैं। साधारणतः वे मौन और शान्त रहती हैं लेकिन जिससे उनका दिल मिल जाता है उससे खूब बातें करती हैं। उनका हृदय उदार है और अपनी शक्तिभर सदा सहायता करनेके लिये प्रस्तुत रहती हैं। मैंने तो बहुधा देखा है कि वे अपना भोजन वगैरह तथा अन्य

पदार्थ उन लोगोंको दे देती हैं जिन्हें प्राप्त नहीं है। उन्हें पशु पक्षियोंसे प्रेम है। सुग्गा और गिलहरीके बच्चोंको पकड़ कर वे पालती हैं।

आज हमलोग तौली गई। लेखाका वजन चार पौण्ड और मेरा ६ पौण्ड घट गया है। इन्दुका वजन पूर्ववत् है लेकिन इससे क्या? पहलेसे ही औसतसे कम वजन उसका है। उसमें और क्या कमी होगी।

१६ अक्तूबर १९४२

वजन घट जानेसे मैं चिन्तित हो गई हूँ। आजसे रातमें मैंने कुछ भोजन करना तै किया है। मैं दूध नहीं खरीद सकती क्योंकि मेरा पूरा भत्ता (नव आना) खर्च हो जाता है। दूसरे बैरेककी राजनीतिक महिला कैदियोंके लिये भी इसीमेंसे कुछ कर देना पड़ता है। इससे मुश्किलसे पूरा पड़ता है। बड़ी जमादारिनसे मालूम हुआ है कि टण्डन जी, राय अमरनाथ और पूर्णिमाको भी ऊँचा दर्जा—अर्थात् बारह आनेवाला—मिला है।

कल शामको लिन यूटांगकी नई पुस्तककी आलो-चना करते हुए लेखाने कहा कि बचपनमें उसकी

आस्था बौद्धधर्ममें थी, और आज भी बुद्धकी शिक्षापर उसकी अटूट श्रद्धा है पर अब उसने अपने पूर्वजोंका धर्म स्वीकार कर लिया है । मेरी सन्तान जाहिल नहीं है !

१७ अक्तूबर १९४२

रामकलीका लड़का छूट गया । उसकी उम्र केवल १६ सालकी है । इस समाचारसे उसे बेहद खुशी हुई है । वह अपने बेटेकी चिन्तामें घुल रही थी ।

१८ अक्तूबर १६४२

आज दशहरा था । हम लोगोंने दूसरे वार्डके लोगों-को जलपानका निमन्त्रण देकर बुलाया था । उत्सव सुन्दर रहा । बूढ़ी मराठिन प्रसन्न थी । उनके लिये मैंने दहीका प्रबन्ध किया था इससे उन्हें बड़ा सन्तोष हुआ । उन्होंने कहा कि मेरी दूरदर्शिताका कारण कोंकण निवासीके साथ मेरा विवाह है । उनका यह भी दावा है कि इनके पूर्वज भी कोंकणके रहनेवाले थे । लेकिन ईश्वर ही जानता है कि उन्होंने रञ्जीतके पूर्वजोंका इतिहास कैसे बटोर लिया ।

मामूली कैदियोंने भी दशहरा मनानेकी आज्ञा चाही। बड़ी जमादारिनने उन्हें नाचने और गानेकी इजाजत दे दी। मैं तो उनकी निपुणता देखकर दङ्ग रह गई। कुछ नाच और गाने जरूर भद्दे थे लेकिन कितनी ही लड़कियोंका गला तो बड़ा ही मधुर और सरस था। विलासो माईको नाचनेके लिये उद्यत देखकर तो मैं दङ्ग रह गई। उनकी उम्र ५० सालसे ऊपर होगी और ऐसी गम्भीर रहती हैं कि उन्हें देखकर यह कोई नहीं कह सकता कि इस ओर अब भी उनकी रुचि बनी हुई है। लेकिन उनका नाचना तो पूर्णताको प्राप्त था। जवानीमें तो वे कमाल करती रही होंगी। जेल जीवनने उनका रस चूस लिया है।

२२ अक्तूबर १९४२

आज इन्दिराकी जाँच करने सिविल सर्जन आये थे। इन्दिराकी जाँचकर उन्हें उसके स्वास्थ्यकी रिपोर्ट सरकारमें देनी है।

आज तीसरे पहर एक नई महिलाका आगमन हुआ। बारोखरके किसी कांग्रेस कार्यकर्ताकी पत्नी हैं। बारोखर रञ्जीतके चुनाव क्षेत्रमें पड़ता है। यह पहले भी

जेल आचुकी हैं। हरिजन महिला हैं। नाम है दुबासी। बड़ी सुशील है। बूढ़ी मराठिनको जब मालूम हुआ कि महिला अछूत है और उनके बगलमें ही उसका बिस्तर रहेगा तो ठीक बन्दीके समय उन्होंने बखेड़ा खड़ा कर दिया। उन्होंने अपना असली रङ्ग प्रकट किया और लोगोंको भी उनकी असलियत जाननेका इससे मौका मिल गया। इस तरह उनका परदा खुल गया जिससे ढँककर उन्होंने अबतक अपनेको रखा था। लोगोंने इनकी खूब खबर ली और उनका मुँह बन्द कर दिया। इससे उस वार्डमें पूर्ण शान्ति है। अपने असली रूपको सदा व्यक्त रखनेमें बड़ी सहूलियत होती है। मुझे आशङ्का है कि उनकी यह शान्ति कायम नहीं रहेगी और सबेरा होते होते उनका बकना और श्लोक पढ़ना जारी हो जायगा।

२४ अक्तूबर १९४२

आज रीताकी १३वीं वर्ष गाँठ है। यह तीसरा अवसर है जब मैं उसके जन्म दिवसपर उससे दूर रही। पहली बार १९३३ में, जब उसकी तीसरी वर्ष गाँठ थी। वह पूनामें थी और मैं लखनऊ सेण्ट्रल जेलमें। और फिर

१९३८ में। उस समय मैं लन्दन में थी और इस तीसरी दफा तो हमलोग एक नगर में रहते हुए भी एक दूसरेसे बहुत दूर हैं।

२५ अक्तूबर १९४२

जेलमें पति पत्नीसे नियमित भेंटके संबंध में जेल सुपरिण्टेण्डेण्टने मेरे प्रश्नका अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है। रञ्जीतसे मिले करीब १५ दिन हो गये। मैं उनसे मिलनेके लिये उत्सुक हूँ। जेल जीवनका सबसे बड़ा अभिशाप यही है कि तुम्हें ऐसे लोगोंके साथ मजबूरन रहना पड़ता है जिनसे तुम बातचीत भी नहीं करना चाहते। भीड़ दोस्तोंकी जमात नहीं हो सकती और ऐसे चेहरे प्रदर्शिनीके चित्र हैं जिन्हें देखकर क्षणिक प्रसन्नता भले ही हो सकती है। वहाँ न तो प्रेम है और न समानता। बेकनने अपने निबन्धमें लिखा है—"बातचीत करना सबसे जरूरी है और उससे जरूरी है एक दूसरेकी बातको समझना।" इसकी सत्यताको मैं प्रायः दो सप्ताहसे महसूस कर रही हूँ। रञ्जीतसे बातचीत कितनीही सीमित क्यों न हो, मुझे सुखद होगी। लेकिन अधिकारियोंको इसकी क्या जल्दी है!

२६ अक्तूबर १९४२

आज मोलाहिजाका दिन था। जब मैंने रञ्जीतसे मुलाकातकी बात पूछी तो सुपरिण्टेण्डेण्ड बातको टालने लगा। अन्तमें उसने कहा :—हर १५ वें दिन बारी बारीसे आप और लेखाको उनसे मिलनेकी इजाजत मिल सकती है। खैर, यही क्या कम है !

२९ अक्तूबर १९४२

पूछताछ करने पर मुझे मालूम हुआ कि रञ्जीतसे मुलाकातके प्रश्नको सुपरिण्टेण्डेण्टने फिर मजिस्ट्रेटके पास भेजा है। यही जेलका तरीका है। टालमटोल होता रहता है और किसीको अपनी स्थितिका ठीक पता तक नहीं लगने पाता।

३० अक्तूबर १९४२

लेखाकी गिल्टी अभी एकदम गायब नहीं हुई है तोभी उसकी हालत पहलेसे कहीं अच्छी है। वह प्रसन्न रहती है। आज जानकीको जिला जेल भेज दिया गया। वहीं उसके मोकदमेकी सुनवायी होगी। मोकदमा कलसे

शुरू होगा। आज शामसे प्रायः ३ बजे रात तक जेलके ऊपर हवाई जहाज मँड़राते रहे। अन्तिम दल तो गरोह बाँधकर आया और मैं उन्हें देखनेके लिये उठ बैठी। साफ साफ तो दिखाई नहीं देता था। पाँच जहाज मालूम देते थे। इस दौड़धूप और सरगर्मीका क्या मतलब है। क्या इसका संबंध चिटगाँव पर बम गिराये जानेसे है क्योंकि यह घटना अभी हालमें ही हुई है।

३१ अक्तूबर १९४२

सबेरे ८-३० के करीब हमलोग चाय पी रहे थे कि बड़ी जमादारिनका पुरजा मिला। लिखा था कि आज ९-३० बजे रञ्जीतसे मेरी और लेखाकी तथा फिरोजसे इन्दिराकी मुलाकात है। इस मुलाकातसे लेखा प्रसन्न है। भीड़में रञ्जीतसे मुलाकात मुझे पसन्द नहीं। एकान्तके अभावसे मैं इतनी घबरा गई कि जो कुछ उनसे कहना था सब भूल गई।

हमलोगोंके पास फूलके कई गमले हो गये हैं। फूल साधारण हैं फिर भी फूल तो हैं। इनका असर आस-पासके वातावरण पर बहुत ही अच्छा पड़ता है। रञ्जीतकी फुलबारी खूब हरी भरी है। इससे उन्हें बड़ी

शान्ति मिलती है। जेलके अन्य वार्डोंकी भाँति उनका वार्ड भी भरा है और हर तरहकी असुविधाएँ वहाँ हैं।

१ नवम्बर १९४२

कल रातको ११-२० पर मैंने रोशनी बुझाई ही थी कि बाहरका ताला खटका और बड़ी जमादारिनकी बोली सुनाई पड़ी। वह कह रही थी कि एक नई कैदी महिला आई है। हमलोग सबके सब जाग पड़े और पूर्णिमा तथा इन्दिरा तो अपना बिस्तर छोड़कर उठ खड़ी हुईं। आगन्तुक चिन्ता मालवीय थीं। उनसे मालूम हुआ कि उनके साथ उनकी एक संगिनी भी गिरफ़ार हुई है और वह भी थोड़ी देरमें दाखिल होगी। चिन्ताके लिये हमलोगोंने विस्तर तैयार किया। बड़ी जमादारिन वापस गई और १० मिनिटके अन्दर ही दूसरी युवतीको लेकर वापस आई। इनका नाम बिमला वर्मा है। दोनों विश्वविद्यालयकी छात्रायें हैं। दोनोंके जीवनका यह सबसे बड़ा अनुभव है। उनलोगोंने आज घूम घूमकर साधारण कैदियोंसे बातचीत करना चाहा। जब उनलोगोंको यह मालूम हुआ कि उनमेंसे अधिकांश हत्यारिनें हैं तो वे घबरा उठीं।

२ नवम्बर १९४२

आज मोलाहिजाके समय सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि एक ही जेलमें बन्द पति-पत्नियोंको हर पन्द्रहवें दिन आध घण्टा मुलाकातकी सुविधा दी जायगी।

७ नवम्बर १९४२

कोई खास बात नहीं है। लेकिन आज मुझे बच्चोंकी याद रह रह कर आरही है और मैं घरके लिये बेचैन हो उठती हूँ। पूर्णिमाने सबको लाल चूड़ियाँ दी हैं। सभी लोग प्रसन्न दीखते हैं।

९ नवम्बर १९४२

कल शामको बन्द होनेसे पहले हमलोगोंने आँगनमें दीवालीका उत्सव मनाया और बाहर दीवारपर तथा भीतर वार्डमें चन्द चिराग जलाकर रख दिये।

हमलोग तैयार भी नहीं हो पाये थे कि सुपरिण्टेण्डेण्ट आधमके। मोलाहिजाके दिन वह समयसे पहले ही आजाते हैं। इससे हमलोगोंको बड़ी असुविधा होती है, क्योंकि हम ६ के बीच एक ही पाखाना और एक ही

स्नानघर है। ऐसी हालतमें स्नानादिसे निवृत्त होकर सूर्योदयके साथ ही तैयार होजाना कठिन है। हमने कहला दिया है कि ८-३० के पहले सुपरिण्टेण्डेण्टको मोलाहिजाके लिये नहीं आना चाहिये।

आजकल मौसिम बहुत ही अनिश्चित है। रात १० बजेसे लेकर ७-८ बजे तक पूरी ठण्ढक रहती है और इसके बाद दिनभर गर्मी पड़ती है। हम लोगोंका बैरेक—जो अबतक धूप, हवा और वर्षाका शिकार बना हुआ था—आजकल बोरेके मोटे परदेसे ढँका हुआ रहता है और यह परदा रातदिन गिरा रहता है।

१० नवम्बर १९४२

आज भैया दूज है। कितनी ही भैया दूज मैंने भाई (पं० जवाहरलाल) से अलग रहकर बिताये हैं। जेलमें पुरानी बातें एक एक कर याद आने लगती हैं। जब मैं अपने बचपनसे आज तककी बातोंको स्मरण करती हूँ तो मुझे याद आता है कि मेरे जीवनके निर्माणमें भाईका कितना बड़ा हाथ रहा है। जन्मके साथ ही स्रष्टाने जो सबसे उत्तम विभूति मुझे इस संसारमें दी है उनमें भी सबसे उत्तम हैं मेरे भाई। उनके निकट रहना, उन्हें

समझना और उन्हें प्यार करना मेरे जीवनकी सबसे बड़ी सार्थकता होती ! चन्द दिनोंमें उनकी वर्षगाँठ आनेवाली है। यह वर्षगाँठ भी जेलमें ही बीतेगी। उनके जीवनके कितने ही बहुमूल्य वर्ष इसी तरह बर्बाद होगये। जिन मुसीबतोंका उन्हें सामना करना पड़ा है, उन्हें जब स्मरण करती हूँ तो मन विद्रोही हो उठता है।

१२ नवम्बर १९४२

यदि गौर किया जाय तो जैसा मैंने समझा था उसकी अपेक्षा दिन जल्दी कट रहे हैं। इसका कारण लेखा और इन्दुका सहवास है। उन्हें देखकर मुझे बड़ी शान्ति मिलती है और मुझे बल मिलता है। हाँ, भाईका कोई समाचार न मिलनेसे खिन्न रहती हूँ। लड़ाईके समाचारका अभाव तथा अन्य राजनीतिक समाचारके अभाव खलते रहते हैं।

१८ नवम्बर १९४२

इधर कई दिनोंसे लिखनेकी इच्छा नहीं हो रही थी। मेरी समझमें नहीं आता कि मुझमें इतनी भावुकता क्यों है। मेरे ही साथके लोग अपनी अवस्थासे नितान्त

सन्तुष्ट हैं। उन्हें किसी तरहकी चिन्ता नहीं है। यदि कोई बात उनके मनके अनुकूल नहीं हुई तो अपने आपको दोष देकर वे उसके सामने सिर झुका देते हैं और खुशी खुशी उसे भोग लेते हैं। लेकिन मेरी दशा सर्वथा विपरीत है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मेरे हृदय में ज्वाला-मुखी छिपी है जो किसी भी क्षण भड़क उठेगी और अन-जानते ही यह भड़क उठती है। मैं अपने इर्द गिर्दके वाता-वरण--जेलकी कठिनाइयाँ, अपनी लाचारी तथा जेल-वालोंके दुर्व्यवहार—पर कुढ़ती रहती हूँ। यहाँकी दशाके अनुकूल मैं अपने को नहीं बना पाती हूँ और न तो मेरी चेतना ही इतनी संज्ञाहीन होजाती है कि मैं सब बातों को चुपचाप बर्दाश्त कर लूँ।

ता० १४ की प्रतीक्षा मैं बड़ी उत्कण्ठासे कर रही थी। आज भाईकी वर्षगाँठ थी और आज ही रञ्जीतसे मुलाकातका दिन था। मैं सवेरेसे ही प्रसन्न थी। मुला-कातका समय सुबह ९ था। लेकिन जेलवालोंकी ढिलाई से ८-३५ में रञ्जीतको इसकी खबर दी गई। उन्होंने कहला दिया कि वे १० से पहले दफ्तरमें नहीं आसकते। ९-१५ पर मुझे कहींसे गुप्त संवाद मिला कि रीता जेलके फाटकपर आई है। घरमें कुछ दुर्घटना होगई है और

मेरी सलाहकी उसे खास जरूरत है। मुझे आशा थी कि जेलके फाटकपर उसकी एक झलक तो मुझे मिल ही जायगी। मैंने स्वप्नमें भी यह कल्पना नहीं की थी कि इसके लिये विशेष आज्ञा लेनी पड़गी। दफ्तरमें पहुँचते ही मैंने सुपरिण्टेण्डेण्टसे पूछा कि क्या मैं उससे मिल सकती हूँ। उन्होंने तुरत मजिस्ट्रेटको टेलीफोन किया। मजिस्ट्रेटने नामंजूर कर दिया। इधर रीतासे मिलने और उसे क्षण-भर अपनी गोदमें लेनेके लिये मैं अधीर हो उठी। मुझे यह सह्य नहीं था कि विचारी लड़की इतनी दूरतक परीशान दौड़ी आवे और यहाँ आने पर उससे कह दिया जाय कि भेंट नहीं हो सकती, सीधे वापस चली जाओ। मैं व्यथा और व्यग्रतासे फूट पड़नेवाली ही थी कि ठीक उसी समय रञ्जीत पहुँच गये। वे प्रसन्न और उमंगसे भरे थे। मेरी हालत देखते ही वे पूछ बैठे—"क्या मामला है। घरसे कोई बुरी खबर आई है?" इतना कहकर उन्होंने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया और मैं रो पड़ी। लेकिन क्षणभरमें ही मैंने अपनेको सम्हाला और सारा किस्सा उन्हें कह सुनाया। मेरी बातें सुनकर उन्होंने मुझसे पूछा—"क्या रीतासे भेंट करनेके लिए तुमने सचमुच आज्ञा चाही? क्या मैंने तुमसे बारबार

यह नहीं कहा है कि हम लोगोंको इन तुच्छ लोगोंसे—जो हमारे ऊपर अफसर बनाये गये हैं—किसी तरहकी रिआयत नहीं माँगनी चाहिये। इस तरहकी दुर्बलता तुम्हें शोभा नहीं देती। तुम्हें अपने महान् व्यक्तित्वका ख्याल कर इन लोगोंके सामने दीनता नहीं दिखानी चाहिये। इस संग्राममें दया या उदारताका प्रश्न नहीं उठता। तुम्हें साहससे काम लेना चाहिये।" और भी बहुतसी बातें उन्होंने कहीं जिनकी जिक्र यहाँ आवश्यक नहीं है। यद्यपि उन बातोंको जेलके आतेजाते अनेक अफसरोंने सुना और वे मन ही मन प्रसन्न भी हुए। आखिर वे लोग भी मनुष्य ही हैं और भारतीय हैं। आशाके सर्वथा प्रतिकूल यदि उनलोगोंके दिलोंमें भी इस संग्रामके प्रति सहानुभूति हो तो आश्चर्य ही क्या? जो हो, आजकी मुलाकातमें मुझे कोई आनन्द नहीं आया। मेरी मनोदशा खराब होगई थी यद्यपि अपनी कमजोरीके लिये मुझे खुद शर्म था। रञ्जीतका व्यवहार यद्यपि स्नेह-पूर्ण था तोभी मन ही मन वह कुढ़ रहे थे।

१९ नवम्बर १९४२

वड़ी जमादारिनके पतिको नश्तर लगनेवाला था-इसलिए वह शनीचरसे मङ्गल तक अनुपस्थित रही। इस

बीचमें श्रीमती बोथाजू उनकी जगहपर पैतरेबाजी करती रहीं। श्रीमती बोथाजूको साँपही समझिये। जब वह किसी राजनीतिक कैदीसे कुछ चाहती हैं तो पेटके बल रेंगने लगती हैं और उसके बाद बड़ी जमादारिनकी खुशामदके लिए हमलोगोंके बारेमें मनगढ़न्त किस्से उनसे कहती हैं। यदि मैं डाँटती हूँ तो वह भींगी बिल्ली बन जाती है, लेकिन जरासा प्रश्रय पाते ही वह सिरपर सवार हो जाती हैं। आजतक मैंने एकही औरत ऐसी देखा है जिसका अन्तःकरण उसके बाहरी रूपके सर्वथा अनुरूप है। उसके विचार उसकी काली सूरतके सर्वथा अनुरूप है।

बड़ी जमादारिनसे मालूम हुआ कि हम लोगोंकी चार सङ्गिनी रीवांसे आनेवाली हैं। वे इसी बैरेकमें रखी जायँगी। ईश्वरकी दया!

२० नवम्बर १९४२

कल इन्दिराकी २५ वीं वर्षगाँठ थी। फिरोजके साथ कल उसकी पाक्षिक मुलाकात थी। जब वह लौटी तो बड़ी खुश थी। तीसरे पहर पूर्णिमाने हमलोगोंको अपनी ओरसे चाय पिलाया। थोड़ा समय आनन्दसे कट गया।

रीवाँकी महिलायें अभी तक नहीं आई हैं। वे किसी क्षण भी आसकती हैं।

आज अचानक एक नयी स्थिति पैदा होगई। हम लोगोंको मालूम हुआ कि इन्स्पेक्टर जेनरलने दूसरी बड़ी जमादारिन नियुक्त कर दिया है। इससे पुरानी जमादारिन यहाँसे चली जायगी। नयी जमादारिन शहर की कोई डाक्टरिन हैं। सभी खिन्न और विषादयुक्त हैं। बड़ी जमादारिन तो इतनी खिन्न है मानों उसने नौकरी के लिए दरख्वास्त दी थी और अपमानजनक तरीकेसे दरखास्त नामंजूर कर दी गई।

२७ नवम्बर १९४२

कल तीसरे पहर रीवाँकी महिलायें आ पहुँची। उनकी संख्या चार थी। उनके साथ सात और दो सालकी दो लड़कियाँ भी था। वे लारीसे आई थीं। अपना सामान वहीं छोड़ आई थीं। बिस्तर तक साथ नहीं था। उनका कहना था कि रीवाँ जेलके अफसरोंने उन्हें सामान बाँधने तकका समय नहीं दिया। दिनभर वे उस जेलकी दिक्कतोंका वर्णन करती रहीं। इनमेंसे एक औरत राजनीतिके अतिरिक्त अपने अन्य कारनामोंके

लिये पुलिसमें बदनाम है। उसके साथकी अन्य तीनों महिलायें उससे घृणा करती हैं। इसका भी किस्सा है। दूसरे बैरकसे रामकली और महादेवी मेरे साथ हो गई हैं। और कलसे वे मेरे ही चौकामें खायेंगी।

कल ६ बजे सुबह प्रयाग विश्वविद्यालयकी बी०ए० की छात्रा कान्ति शर्मा गिरफ्तार हो कर आई। उन्हें ८ बजे रातको ही होस्टलमें गिरफ्तार किया गया था लेकिन सुबहसे पहले जेल आनेसे उसने इन्कार कर दिया। लड़की तेज मालूम होती है।

आज लड़कियाँ बैरकमें अपनी अपनी जगहको सजाने में व्यस्त हैं। प्रत्येकने अपनी अपनी जगहका नाम दे डाला है। इन्दिराने अपनी जगहका नाम 'चिम्बरेजो' रखा है। लेखाने "वीन वेन्यू" रखा है क्योंकि जहाँ वह रहती है वहाँसे बाहरी फाटक साफ दिखाई देता है। पहले यह मेरी जगह थी। मेरी जगहका नाम "वाल व्यू" है। नामसे ही स्थानका आभास मिल जाता है। बीचमें नीला कम्बल बिछा दिया गया है। यह कम्बल किसी जमानेमें बच्चोंके आमोद गृहमें बिछाया गया था और मैं इसे अपने बिस्तरके साथ लेती आयी थी। बीचकी जगह का नाम "ब्लू ड्राइङ्ग रूम" रखा गया है। यहीं हमलोग

दोपहरको भोजन करती हैं और रातको बैठक होती है या पढ़ती हैं।

इन्दु और लेखाकी कल्पना-शक्ति इतनी तीव्र है कि उदासी नहीं आने पाती। वे दोनों भोजनके सामानमेंसे बचाकर रख रही हैं और शीघ्र ही ब्लू ड्राइंग रूममें दावत देनेवाली हैं। जोशखरोशके साथ प्रतिदिन भोजनके प्रकारपर बहस होती है। अभीतक यही नै नहीं पाया है कि वह फ्रेंच भाषामें लिखा जाय या नहीं।

इन्दुने जेलकी बिल्लीका नाम मेहिटाबेल रखा है। उसने पाँच बच्चे दिये हैं। इन्दु और लेखा उसीके पीछे परीशान हैं। हमलोगोंके दूधमें इन बच्चों और उनकी माँका भी हिस्सा लगने लगा है। थोड़े ही दिनमें ये बच्चे मुसीबतके कारण बन जायँगे लेकिन जेलमें इस तरहकी मुसीबतोंका भी स्वागत किया जाता है क्योंकि इनसे क्षणिक मनबहलाव होजाता है।

प्रत्येक वस्तुके नामकरणकी आदत लड़कियोंको पड़ गई है। लालटेन, टेबुल, विस्तर सबका कोई न कोई नाम है। सिरमें लगानेके तेलके बोतलका काग खोगया। उसका भी नाम करण होगया है। उसका नाम रखा गया है, "बेसिरका अर्ल रूपर्ड" लालटेनका नाम 'लुसिफर'

है। मुझे तो इन सारे नामोंको याद रखना भी कठिन है लेकिन इन लड़कियोंको एक एकका नाम याद है। इसमें इन्हें बड़ा मजा आता है।

वार्ड बन्दीके बाद वे सब नाटकके पात्र बनकर नाटकका पाठ करती हैं। मैं दर्शक बन जाती हूँ। इससे सबको खुशी होती है।

नैनी जेलकी बाहरी दीवारें काफी ऊँची हैं। हमलोगों पर कड़ा पहरा रहता है तोभी बाहरके समाचार आही जाते हैं। आज मुझे मालूम हुआ कि जब उस दिन रीता आई थी तो उसे बड़ी जमादारिनकी कोठरीमें बैठाया गया था। रंजीतसे मेरी मुलाकातका दिन था, जेलवालोंने सोचा कि जब मैं अपने बैरेकसे निकलकर सड़कसे होकर जेलकी दफ्तरकी तरफ चलूँगी तो रीतासे सामना हो जानेकी सम्भावना है और जादूके जरिये मैं उससे बातें कर लूँगी। इसलिये श्रीमती बोथाजूको उसके पास बैठा-कर बाहरसे दरवाजा बन्द कर दिया गया ताकि वह बरामदेमें नहीं चली आवे। बिचारी रीता एकदम घबरा गई थी। अन्तमें जब उसे बाहर निकाला गया तो वह रोआसी हो रही थी और उसी हालतमें वह वापस गई। यह सब सुनकर मेरा मिजाज बिगड़ा हुआ है,

यद्यपि किसी तरहके व्यवहारपर हमलोगोंको अचरज नहीं करना चाहिये। इस बातकी पूछताछ बड़ी जमादारिनसे करना बेकार है क्योंकि वह फौरन इन्कार कर जायगी।

२८ नवम्बर १९४२

आज रंजीतसे मुलाकातका दिन था। उन्होंने ऋतु संहारका अनुवाद समाप्तकर डाला है। कुछ पंक्तियाँ उन्होंने मुझे सुनाई थीं। अनुवाद बहुत ही सुन्दर हुआ है।

४ दिसम्बर १९४२

क्या कारण है कि हमारे देशके लोग इतनी जल्दी उत्तेजित नहीं होते। कुछ तो हमेशा झिझकते रहते हैं और कुछ अपनेको इतना हीन समझते हैं कि सिर उठानेका ही उन्हें साहस नहीं होता। लोगोंका मुर्झाया श्रीहीन चेहरा देखकर ही मन खिन्न होजाता है।

आज बैरेकमें फिर चहल पहल है। बड़ी जमादारिनसे मालूम हुआ है कि कोई ओवरसीयर जेलका निरीक्षण करने आरहा है। मेरी समझमें ही नहीं आता कि यह

ओवरसीयर जेलका क्यों निरीक्षण करने आयेगा। अब तक तो मैं यही समझती थी कि ओवरसीयरका काम कुलियोंपर अनुशासन रखना है। आज यह नई बात मालूम हुई। ठीक ही तो है, जो जितना जीता है उतना ही वह सीखता है।

६ दिसम्बर १९४२

आज मैं संकटमें पड़ गई थी। इसलिये मैंने मारुति (हनुमानजी) की स्तुति की। उन्होंने ठीक समयपर अपने तरीकेसे मेरी मदद की। मैं उनकी कृतज्ञ हूँ। मानवकी प्रकृति और उनकी कमजोरियोंको वे भलीभाँति समझते हैं।

बूढ़ी मराटिन चिढ़कर तीन दिनसे उपवास कर रही थी। आज तीसरे पहर वह अकारण मुझसे उलझ पड़ी। लेकिन जब मैंने उसे खूब फटकारा तब उसने अपना उपवास भङ्ग किया। विचित्र महिला है। इससे पार पाना असम्भव है।

८ दिसम्बर १९४२

कोयला और लकड़ी चाहे कितना भी मिले मुझे इनकी बराबर कमी रहती है। बिचारी दुर्गी किसी तरह

काम चलाती रहती है। लेकिन हमलोग जभी भोजन बनाने बैठते हैं तभी ईंधनकी समस्या उपस्थित होजाती है। कभी कभी तो ईंधनके अभावमें हम लोगोंको भोजन का प्रकार घटाना पड़ता है। कितनी दयनीय है यह दशा। बैरेकमें भयानक ठण्ढक है। तापमान जीरोसे भी नीचे चला गया है। सौभाग्यसे मेरे बँगलेके सामने धूप आजाती है और मैं दुनियाँकी तरफ पीठ फेरकर अपने-को गर्म करती हूँ। कैसा जीवन है!

९ दिसम्बर १९४२

परसों अचानक कमिश्नर साहब आधमके। दो दिनसे भयानक सर्दी पड़ रही है। सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझे बतलाया कि अलाहाबादका तापमान ५०° पर चला गया है। मुझे तो नहानेकी भी हिम्मत नहीं होती थी। न जाने मैंने इस तरह गन्दी रहना कैसे पसन्द किया।

नजरबन्द कैदियोंके लिये केवल दोही श्रेणियाँ हैं, प्रथम और द्वितीय। नैनीतालमें तृतीय श्रेणी भी थी। अब वह तोड़ दी गई। जेलमें अधिकारी अपनी इच्छाके अनुकूल नियमोंकी व्याख्या किया करते हैं। भगवान ही जानता है कि इससे उन्हें क्या लाभ होता है।

१० दिसम्बर १९४२

रात नव बजेके करीब दूसरे बैरेकमें बड़ा होहल्ला मचा। बूढ़ी मराठिन छड़पर अपना सिर इस तरह पीटने लगी कि उससे खून निकल पड़ा। जोहरा और श्रीमती सालमन पहरे पर थीं।

१२ दिसम्बर १९४२

आज रञ्जीतसे मुलाकातका दिन है। १० बजेका समय नियत था। १०-३० बज रहे हैं। लेकिन अभीतक बड़ी जमादारिनका कहीं पता नहीं है। मेरी समझमें नहीं आता कि जेलके अधिकारी मानव प्रकृति और मनुष्यकी चित्तवृत्तिको क्यों भूल जाते हैं। यदि वे इन बातोंका जरा भी ख्याल रखें तो जेलमें लोगोंका जीवन कहीं सुखमय हो सकता है।

१९ दिसम्बर १९४२—बकरीद

मैं काहिल होती जा रही हूँ। इन चन्द वाक्योंको लिखनेके लिये भी प्रयास करना पड़ता है। इधर कई घटनायें हो गई हैं। बूढ़ी मराठिन साधारण कैदियोंके

वार्डमें चली गई है। उसे वहीं रहना पसन्द है। उसके चले जानेसे हमलोगोंको भी शान्ति मिली है। मुझे इस बातसे खेद है कि यहाँ उसे जो थोड़ी सुविधायें मिलती थीं उससे वह वञ्चित हो गई है। लेकिन दूसरा कोई चारा भी नहीं है।

कल सवेरे रामकली और महादेवी अचानक छोड़ दी गईं। तीसरे पहर शान्ति थी। आज बड़ी जमादारिन-का जन्म-दिन था।

२१ दिसम्बर १६४२

कोई नयी बात नहीं है। जीवन-नौका नियमित गतिसे चली जारही है। यदि सिरमें बराबर दर्द रहने लगा है तो कोई अचरजकी बात नहीं है।

३१ दिसम्बर १९४२

मेरी काहिली बढ़ती ही जारही है। पिछले शनि-वारको रञ्जीतसे मुलाकात हुई थी। सुननेमें आया है कि सरकार लेखाको छोड़ देगी क्योंकि उसके खिलाफ पुलिसको कोई सबूत नहीं मिल सका है। लेकिन मुझे इसकी लेशमात्र भी सम्भावना नहीं दीखती। यद्यपि मैं

रीता और ताराके ख्यालसे यह चाहती हूँ कि यह अफवाह सच निकले। लेखाके रहनेसे उन्हें बड़ा सहारा मिलेगा।

वार्ड बन्दीके बाद लड़कियोंने "ब्लू रूम" में पूर्णिमाको दावत दी। हफ्तोंसे वे सब सामान बचाकर दावतकी तैयारी कर रही थीं। दुर्भाग्यवश हमलोगोंके टेबुलक्लाथका रंग फीका पड़ गया है और एक तश्तरी तथा काँटा के अतिरिक्त और कोई बर्तन नहीं है। सबके बीचमें एक ही छुरी है। तोभी दावत बढ़िया रही और नहीं तो दैनिक भोजनसे परिवर्त्तन तो रहा ही।

२२ तारीखसे कलकत्तेपर हवाई हमला हुआ है। एकाध तो खतरनाक थे। कई दिन हुए मिस विलियम्स गुलाबके फूलोंका ढेर लिए मुझसे मिलने आई थीं। वे जेलकी निरीक्षक हैं। बड़ी ही हँसमुख और सुशील महिला हैं।

दो महीनेकी अवधि पूरी हो जानेपर चिन्ता मालवीय कल रिहा कर दी गईं। आज वर्षान्त है। पारसाल आजके दिन मैं लेखा और ताराके साथ कोकनाडामें थी। और रीता रञ्जीतके साथ बम्बईमें अपनी छुट्टी बिता रही थी। तीसरे साल आजके दिन मैं इसी बैरेकमें जँगलेपर

बैठी रातको निहारती नये सालका स्वागत कर रही थी। समय कितनी तेजीसे भागता है और अपने पीछे स्मृतियोंका अम्बार छोड़ जाता है। १९४३ कैसा बीतेगा, नहीं कहा जा सकता। अधिक वेदना और विषाद या मनोरथोंकी सिद्धि। जोहो, मैं तो यही प्रार्थना करती हूँ कि भविष्यका सामना करनेके लिए मुझे शक्ति और साहस मिले। मेरा ख्याल रह रहकर उन बच्चोंकी ओर जाता है जिन्हें आनन्द भवनमें अकेली छोड़ आई हूँ लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि वे योग्य पिताकी योग्य सन्तान साबित होगीं। इसी ख्यालसे मुझे ढाढस होता है।

नये सालका पहला दिन १९४३

हमें नहीं हित-मित्र, प्रेमिका, हमें न धन आगार ;
एक आस आराध्य-नगर की, वह भी पथ के पार।
तन को नहीं विराम, न मन को शान्ति कभी लवलेष,
सतत रहे हम खोज नहीं मिलनेवाला निज देश।
हम जैसों के लिये नहीं इस धरती पर विश्राम,
अलम हमें गन्तव्य, पन्थ पर चलना केवल काम।
हाँ, पथ औ उषा, फिर जलता सूर्य, हवा, बरसात,
सन्ध्या, निशा, अनल, निद्रा, फिर मार्ग प्रदर्शक प्रात।

आज हमलोगोंको सूचना मिली है कि भारत सरकारने आज्ञा जारी की है कि कांग्रेस कार्य समितिके सदस्य अपने परिवारवालोंके साथ घरेलू विषयक पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। इस तरहके खत भाईसे हमें और इन्दिराको मिल सकते हैं।

मेरी समझमें यह बात नहीं आई कि परिवारके दो प्राणी जो प्रायः ६ माससे एक दूसरेसे अलग रहे हैं, जिन्हें

घरसे किसी तरहका संपर्क नहीं है, जिन्हें अपने परिवारका संवादतक नहीं मिल सका है, घरेलू मामलोंमें एक दूसरेको क्या लिख सकते हैं। लेकिन हमलोगों को यह प्रश्न करनेका अधिकार कहाँ है।

कभी कभी मैं साधारण कैदियोंके बच्चोंको खिलाया करती हूँ। वे इसकी प्रतीक्षामें रहते हैं और मेरे यहाँ आनेके पहले नहा-धो लेते हैं।

बैरेकके बाहर एक छोलदारी खड़ी कर दी गयी है। यही मेरा रसोई घर है। बच्चे आकर खड़े होजाते हैं, मुझे देखा करते हैं और कभी कभी मेरी मदद भी कर देते हैं। जिस उत्साहसे वे खाते हैं वह देखने ही लायक होता है। कितना कोमल है उनका स्वभाव ! जाते वक्त नमस्ते जरूर कहते हैं।

क्या ही अच्छा होता यदि इन अभागोंकी देखरेखका कोई उचित प्रबन्ध रहता। इन्हें अच्छा बननेका कोई अवसर ही नहीं मिलता।

हमारे फूलके पौधे खिलने ही वाले हैं। इनके बचपन की मस्ती उभाड़ पर है। हमलोगोंने कई तरहके अंग्रेजी फूल लगा रखे हैं। नीले, पीले, हरे, बैगनी। कैसे सुन्दर कतारमें खड़े हैं वे। लेखा और इन्दुके बार २ यत्न करने

पर भी कई फूल तो उगे ही नहीं, यदि उगे भी तो बढ़ नहीं सके। हमलोगोंके आग्रहसे बड़ी जमादारिनने आँगन में थोड़ी तरकारी लगा दी थी। यही टमाटो, मिर्चा और धनिया। सभी तैयार हो गये हैं। कल तो प्रायः एक दर्जन बढ़िया टोमाटो इन्हींमेंसे तोड़ा भी गया था।

मैं लेखाके साथ थोड़ा बहुत पढ़ लेती हूँ। आजकल हमलोग प्लेटोकी कृतियाँ पढ़ रहे हैं। लेखा तो उनके "रिपब्लिक" में उलझी रहती हैं। इसके साथही हमलोग हिन्दी और संस्कृतकी पुस्तकें भी पढ़ती हैं। कई सालके बाद लेखाके साथ कुछ करनेका अवसर मिला है। विधिका कैसा विधान है कि एक साथ कुछ करनेके लिये माँ और बेटीको जेल आना पड़े। संसार इसी तरह की विडम्बनाओंसे भरा है।

मैं सिन्क्लेयरका "ड्रैगन्स टीथ" पढ़ रही हूँ। १९३८ में जब मैं यूरोपमें थी तो इस तरहकी अनेक कहानियाँ मुझे सुननेको मिली थीं। इस पुस्तकके पढ़नेसे वे याद होआईं। जिन अवस्थाओंका वर्णन लेखकने इस पुस्तकमें किया है उसका मोकाबला उस समय मेरे कितनेही दोस्तोंको वहाँ करना पड़ रहा था। लेकिन आज संसार-चक्रका घुमाव बदल गया है और केवल दोही दल देखनेमें

आ रहे हैं-एक वह दल जो अनर्थोंके मोकाबलेमें अपना सर्वस्व होम कर देता है और दूसरा वह जो जुल्म करता है। कैसी विषम परिस्थिति है। सभ्यताके इस युगमें भी मानवजाति एक दूसरेपर इस प्रकार जुल्म किये विना अपने मतभेदोंको दूर करने या मिटानेमें असमर्थ है। जेलमें इस तरहके विचार और भी उग्र हो उठते हैं क्योंकि लाचारीकी भावना यहाँ इतनी व्यापक रहती है कि मनोविकारको बहुत ज्यादा उत्तेजना मिलती है। इस तरह लगातार जेल-यात्रासे चित्तकी वृत्तियाँ विकृत होती जा रही हैं और मनपर इसका अमिट असर पड़ता जाता है। गिने चुने ही लोग हैं जिनपर जेल-जीवनका असर नहीं पड़ सकता क्योंकि देशकी आजादीकी भावना उनमें इतनी तीव्र है कि जेलकी चाहारदीवारी और ताले उनकी आत्माको बन्धनमें नहीं डाल सकते और न उनकी स्वतन्त्रताका अपहरण कर सकते हैं।

यहाँ बैठी हुई मैं उस दलके लोगोंको समझने या क्षमा करनेमें असमर्थ हूँ जो उन दोनों दुनियाके बीचमें रहना चाहते हैं—एक वह दुनिया जिसमें लोग आदर्शोंके लिए अपना सर्वस्व होम कर रहे हैं और दूसरी वह दुनिया जिसमें लोग सचाई, प्रकाश और सौन्दर्यको रौंदकर

मानवताकी मर्यादाको पददलित करना चाहते हैं और सभ्यताको हास्यास्पद बनाना चाहते हैं। इस तरहके लोगोंकी संख्या बढ़ती जा रही है। न तो इनपर अपने देशकी दुरवस्थाका असर पड़ता है और न तो संसारके भीषण द्वन्द्वोंसे ही ये प्रभावित होते हैं।

रोना क्या उनके हित जो रजमें हो रहे विलीन ?
यही नियम है जो जन्मा वह होगा मृत्यु-अधीन।
रोना क्या उन वीर साथियों के हित जो उद्दाम—
रखे नहीं जा सकते, जारी रखने को संग्राम !
कड़े सीखचों की कब्रों में जिनका निहित नित्रास,
मरण भोगना है जिनको गिनगिन जीवन की लास।
हाँ, आँखों की यह कीचड़ हो उस कायर को दान,
जिसके हैं बिक चुके पेट के लिए दीन-ईमान।
वह जो कर रहा अच्छी तरह जुल्म का राज,
लेकिन, उठा नहीं सकता सच्चाई की आवाज़।

९ फरवरी १९४३

आज मैं और लेखा रञ्जीतसे मुलाकात करने गई थीं। दफ़्तरमें मालूम हुआ कि कलसे बापू अनशन करने जारहे

हैं। रञ्जीतने कहा कि सहानुभूतिमें हमलोग भी २४ घण्टे का उपवास करने जा रहे हैं। वे लोग अपने इस निर्णयकी सूचना सुपरिण्टेण्डेण्टको देकर भोजनकी सामग्री नहीं भेजनेके लिए कहला रहे हैं। सभी लोग त्रस्त हैं।

मुलाकातसे वापस आकर मैंने अपने वार्डमें इस विषयकी चर्चा की। पुरुषोंके उदाहरणको सामने रखकर हमलोगोंने भी २४ घण्टेका उपवास तै किया। जिस तरह का पत्र पुरुषोंने भेजा है उसी तरहका पत्र हमलोग भी अपने हस्ताक्षरसे भेज रही हैं।

१४ फरवरी १९४३

बापूके उपवासका आज पाँचवाँ दिन है। सख्त पहरा होने पर भी उनकी हालतकी खबर हमलोगोंको मिल ही जाती है। पहले दिन तो पूर्व निश्चयके अनुसार ही हम लोगोंने उपवास किया। शामको वन्दीके पहले हमलोगोंने सम्मिलित प्रार्थना की। यह अवधि हमलोगोंके लिये बड़ी ही नाज़ुक और सङ्कटापन्न है।

१७ मार्च १९४३

इधर कई दिनोंसे मैं अपनी डायरी नहीं लिख सकी। चिन्तासे सारा वातावरण क्षुब्ध था और हमलोगोंकी

मनस्थिति चञ्चल थी। प्रभुकी कृपासे बापूने अपने प्रणको पूरा किया। वे जीवित हैं और धीरे धीरे अच्छे हो रहे हैं। मानों इस खुशीमें हमारे फूल भी खिलने लगे हैं। हफ्ते दो हफ्तेमें ये अपना पूरा सौन्दर्य बिखेर देंगे। रंग-बिरंगे फूलोंको देखकर कितना आह्लाद होगा, हम लोगों-को। मेरे पिछले दिन बड़ी चिन्तामें बीते हैं। बच्चोंकी चीनी दाई बहुत होशियार नहीं है। घरपर अनेक तरहकी समस्यायें उपस्थित होती रहती हैं जिनका समाधान उससे नहीं हो सकता। ऐसे समय मेरी हालत डाँवाडोल हो जाती है कि मैं क्या करूँ। बच्चोंके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करूँ या देशको देखूँ, जिसका अर्थ होता है लम्बी अवधि तक जेलमें पड़े रहना।

मेरे घरसे हटते ही न जाने कहाँसे मुसीबतें आ घेरती हैं। जबतक मैं घरमें रहती हूँ सब कुछ शान्तिके साथ होता रहता है। यह भी एक विचित्र बात है।

२१ मार्च १९४३

मुझे पैरोलपर घर जानेकी छुट्टी मिल गई है। क्या आज ही चली जाऊँ? लेखा और इन्दुसे अलग होनेका जी नहीं चाहता पर चारा ही क्या है। मेरे चली जानेपर

उन्हें स्वयं भोजन बनाना पड़ेगा। इसी बहाने भोजन बनाना तो सीख जायँगी।

२० अप्रैल १९४२

तीस दिनकी अनुपस्थितिके बाद मैं जेल वापस आ गई। मेरी गैरहाजिरीमें ही लेखा छोड़ दी गई थी। इसलिये हमलोगोंने उसके वेलेस्ली कालेजमें भर्ती होनेके प्रश्नपर विचार किया। इस समय वह हिन्दूस्तान छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाना चाहती थी। उसने अपने तर्क भी पेश किये। लेकिन मेरी और रञ्जीतकी यही धारणा रही है कि स्वतन्त्रत देशोंकी शिक्षासे कल्पना-शक्तिका विस्तार होता है और हमलोग यह हृदयसे चाहते थे कि मेरी लड़कियाँ इससे लाभ उठावें। अपनी बातपर जोर देते हुए मैंने उसे समझाया कि अमेरिकाके कालेजोंमें शिक्षा पाकर और योग्य व्यक्तियोंके संसर्गमें आकर तुम चन्द सालोंके बाद इस समयकी अपेक्षा कहीं अधिक अपने देशकी सेवा कर सकोगी। अठारह साल के बच्चोंकी प्रवृत्तिके रुखको फेरना सहज नहीं है, लेकिन अन्तमें मैं उसे राजी कर सकी। बादको मैंने यह भी तै किया कि लेखाके साथ तारा भी जाय। रञ्जीतने

मेरी बातको सहर्ष स्वीकार कर किया और मैंने अमेरिकामें अपने मित्रोंको तार दिया कि मेरी दोनों पुत्रियोंको भर्ती करानेकी व्यवस्था वे लोग करें। ४८ घण्टेमें वेलेस्ली कालेजके अध्यक्षका निम्नलिखित तार मुझे मिला—"वेलेस्ली कालेज सगर्व आपकी लड़कियोंका स्वागत करनेके लिए तैयार है।" इससे मुझे बड़ी शान्ति मिली। इसके बाद तो पासपोर्ट, विसा तथा डालर वगैरहका प्रबन्ध करनेके लिए मुझे अनेक दिक्कतोंका सामना करना पड़ा, लम्बा पत्र-व्यवहार करना पड़ा। मैं इन्हीं कामोंमें व्यस्त रही। घर गृहस्थी तथा नौकर चाकरोंका कोई इन्तजाम न कर सकी।

कल दोनों लड़कियोंको बम्बईके लिये रवाना कर मैं स्टेशनसे सीधे नैनी जेल चली गई। यह बिछोह बड़ा करुण था। हमलोगोंकी आँखोंमें आँसू उमड़ रहे थे, लेकिन उसे जबरन रोकनेके लिये हमलोगोंने अपनेको बातोंमें फँसा रखा। गाड़ी ने सीटी दी और चल पड़ी। लड़कियोंने कहा—माँ, चाहे कहीं भी रहूँ, राष्ट्रीय झण्डेको सदा ऊँचा रखूँगी। हमलोगोंकी चिन्ता मत करना। बाबूजीसे हमलोगोंका प्यार कहना।"

उन्हें अमेरिका भेजकर मैंने अच्छा ही किया। अपने

विकासका उन्हें सुन्दर अवसर मिलेगा और अच्छी तरह उनकी देखरेख होगी। तोभी अमरीका कितनी दूर है !

हम लोगोंको अपने खर्चसे अखबार मँगानेकी आज्ञा मिल गई है।

२१ अप्रैल १९४३

जैसी कल्पना मैंने की थी उससे कहीं सहजमें मैं प्रकृतस्थ हो गई। चन्द घण्टेके बाद ही मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मैं यहाँकी प्राचीन निवासी हूँ। बाहरी दुनियाँसे कितना अधिक सम्पर्क हट गया है। पैरोलके दिनोंमें मेरी हालत ठीक रिप वान विंकिलकी तरह थी। ऐसा प्रतीत हुआ मानों न जाने कितने साल तक मैं इधर उधर चक्कर लगाकर पुराने चिर परिचित जगह आरही हूँ, लेकिन यहाँ आकर देखती हूँ कि दुनियाँ ही पलट गई है। सारा वातावरण बदल गया है। लोग अब वही नहीं रहे। साथी सब जेलके भीतर बन्द हैं। चारों ओर उदासी और रुक्षता छायी हुई थी। जीवन भार स्वरूप हो रहा था। यहाँ वापस आकर तो फिर अपनेमें मिल गई। यहाँ भले ही बन्धनसे जकड़ी हुई हूँ लेकिन शारीरिक स्वतन्त्रताका तो महत्व ही हम लोगोंकी दृष्टिमें

बहुत कम रहा। जीवनकी व्यापकताका जो स्वप्न हम-लोगोंने देखा है उसे न तो सरकार ही छीन सकती है और न जेलके ये सीखचे। ठीक ही कहा है कि जिन लोगोंने आजादीकी लड़ाईमें जितने ही अधिक जोशके साथ भाग लिया है जेलोंमें वे उतने ही प्रसन्न और गंभीर रहेंगे। मैं अपनेको उस श्रेणीमें नहीं रख सकती लेकिन यथासाध्य मैं उनका अनुकरण कर सकती हूँ।

जेलजीवन लोगोंमें विचित्र परिवर्तन डाल देता है। जिन शक्तियों पर कोई अधिकार नहीं, वही हर वक्त काम करती नजर आती हैं। जीवनमें अविश्वास, घृणा और रोष पैदा हो जाता है। जेलसे लिखे अपने किसी पत्रमें अर्न्स्ट टालरने इस मनोभावकी विशद व्याख्या की है। उसे पढ़नेसे यही प्रतीत होता है कि उसने इस पत्रको किसी भारतीय जेलमें बैठकर लिखा है क्योंकि गवमण्टकी मशीनरी भारतीय जेलोंको निकृष्ट बनानेका जो सतत प्रयत्न करती है उसका ही वह विशद वर्णन है।

प्रथम श्रेणीके कैदियोंको बाहर सोनेकी आज्ञा मिल गई है, लेकिन विमला द्वितीय श्रेणीमें है, इसलिए इन्दिरा और पूर्णिमा भीतर ही सोती हैं। जब मेरा स्वास्थ्य इस कदर खराब है और मुझे बाहर सोनेकी आदत है तो

शहीद बनना मैंने बेवकूफी समझा। बाहर भीतरमें बहुत अन्तर है। ताजी हवा, खुला मैदान, इसके साथ आकाश- में तारोंका टिमटिमाना जीवनको अद्भुत शक्ति प्रदान करता है। बैरकके भीतर इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती।

मुझे रातको अच्छी नींद नहीं आती। इसका कारण यही है कि मैं लड़कियोंके लिये चिन्तित रहती हूँ। अमेरिकाकी यात्रामें उन्हें अनेक तरकी असुविधाओंका सामना करना पड़ेगा। लेकिन मैंने शान्त रहने और शक्ति सञ्चय करनेका सङ्कल्प कर लिया है। इसलिये निश्चिन्त होकर सोने जारही हूँ।

२५ अप्रैल १९४३

लड़कियोंको अमेरिका भेजनेमें कितना पत्र-व्यवहार करना पड़ा। मजिस्ट्रेट न जाने क्या सोचता होगा। उसके कामका बोझ बढ़ गया था। वह मनही मन झीखा भी होगा। इधर दो दिनोंसे अधिक गर्मी पड़ने लगी है। आजकी रातमें अधिक बेचैनी थी। अच्छा होता यदि इन्दु बाहर सोने लगती। बारह बजेके बाद ठण्ढी हवा चलने लगती है और तारिकाओंके नीचे सोनेमें बड़ा

आनन्द मिलता है लेकिन सबेरे झाड़ू दिये जानेके पहले ही उठकर भीतर चला जाना चाहिये क्योंकि उसके बाद तो बाहर रहना कठिन हो जाता है।

आँगनमें जो दो फूलके पेड़ थे, वे उखाड़कर फेंक दिये गये। सारा आँगन सूना और उदास दीखता है। साधारण कैदियोंको इधर आनेकी मनाही है। मुझे इससे प्रसन्नता ही है क्योंकि झगड़ा फसाद उसी तरफ होता रहता है और हम लोगोंकी शान्तिमें बाधा नहीं पड़ती। दिन भरका काँव-काँव अच्छा नहीं लगता।

२७ अप्रैल १९४३

मालूम हुआ है कि यहाँके पुरुष नजरबन्द कैदी शीघ्र ही बरेली सेण्ट्रल जेल भेज दिये जायँगे। मुझे आशा है कि रञ्जीतको वहाँ नहीं भेजा जायगा। १९३२ में उस जेलने उनके स्वास्थ्यको एकदम चौपट कर दिया था। बरेली बदनाम जगह है। वर्तमान अवस्थामें तो वहाँका असर उनके स्वास्थ्यपर तुरत पड़ेगा। गर्मी आते ही उनकी कमजोरी बढ़ जाती है और सांस लेनेमें तकलीफ होने लगती है। खुला मैदान और स्वच्छ हवामें रहनेका

उन्हें इतना ज्यादा अभ्यास है कि जेलजीवन किसी भी तरह उनके अनुकूल नहीं है।

२८ अप्रैल १९४३

बम्बईसे तार आया है। पासपोर्टमें गड़बड़ी हो जाने से यात्रामें विलम्ब होगया। दो चार दिनोंमें ही दूसरा जहाज जानेवाला है। तारसे इतना सुसंवाद तो मिला कि अमेरिकाके उत्तर सन्तोषजनक हैं। इस समय मेरे दिलमें जो भाव उठ रहे हैं उन्हें प्रगट करनेमें मैं स्वयं असमर्थ हूँ। मैं चाहती हूँ कि वे अवश्य अमेरिका जायँ। जहाँतक मैं सोच विचार सकी हूँ, यह उनके लिये बहुत ही कल्याणकर होगा तो भी उनकी रवानगीका समय ज्यों ज्यों नजदीक आता जारहा है त्यों त्यों मेरा हृदय विषाद और चिन्तासे विकल होता जारहा है। एक तरफ तो सन्तानकी मुहब्बत मुझे दुर्बल बना रही है क्योंकि परदेशमें उनपर न जाने क्या बीते और दूसरी तरफ सन्तानके प्रति अपना कर्तव्य मुझे प्रेरणा दे रहा है कि उनके भविष्यको उत्तम बना दूँ। जीवनकी समस्या कितनी कठिन है। समान महत्व रखनेवाली दो वस्तुओं-मेंसे एक चुन निकालना कितना कठिन है तोभी करना

हो पड़ता है। सन्तोष इसी बातका कि मेरे इस निर्णयसे रञ्जीत पूर्ण सहमत है।

३ मई १९४३

आज सुपरिण्टेण्डेण्टने सूचित किया कि प्रथम श्रेणी-के अन्य राजनीतिक कैदियोंके साथ रातको रञ्जीत भी बरेली सेण्ट्रल जेल भेज दिये जायँगे। मेरे ऊपर यह भीषण प्रहार था। मैं क्या कह सकती थी। अबतक मेरी और रञ्जीत दोनोंकी यही धारणा थी। कि जबतक लड़कियोंकी रवानगीकी व्यवस्था पूरी नहीं होजाती तब तक उन्हें यहीं रहने दिया जायगा।

बरेलीके नामसे ही मुझे घृणा है। रञ्जीत यहाँ कभी भी अच्छे नहीं रह सकते। वे इतने भावुक हैं और आस-पासके वातावरणका प्रभाव उनपर पड़े बिना नहीं रहेगा। भारतीय राजनीतिके असंस्कृत वातावरणमें उनसे नहीं रहा जायगा। एक ओर उनकी अगाध विद्वत्ता और जिज्ञासा है, कला तथा जीवनके सूक्ष्म तत्वोंके प्रति उनका दृढ़ अनुराग है, जिन्हें बहुत कम ही लोग जान और समझ सकते हैं और दूसरी ओर कोमल भावनाओंसे शून्य स्थूल राजनीतिके पुजारी हैं। इन विरोधी तत्त्वोंके

मेलका फल यह होरहा है कि उनका स्वास्थ्य दिनदिन गिरता जा रहा है। मन्द गतिसे दिन प्रतिदिनका यह बलिदान उन महान बलिदानोंसे कहीं भयानक है जो क्षणिक उत्तेजना या जोशमें कर दिया जाता है। लेकिन जेलके अधिकारी इस दृष्टिकोणको समझ ही नहीं सकते। मेरी तो यही कामना है और दृढ़ विश्वास है कि रञ्जीत अपने आत्मबलकी शक्तिसे सबपर विजय प्राप्त करेंगे और अपने शरीर और मनको स्थिर रखेंगे तथा इर्दगिर्दके वातावरणका असर अपने ऊपर नहीं पड़ने देंगे। उनके यहाँसे चले जानेसे मेरा जीवन तो शून्य ही हो जायगा। इतना ही ख्याल क्या कम था कि दीवालकी दूसरी तरफ रञ्जीत भी हैं। रञ्जीतके साथ मेरी इस एकात्मीयतापर कभी कभी मुझे स्वयं विस्मय हुआ है क्योंकि अनेकों वर्षोंतक हमलोग एक दूसरेसे अलग रहे हैं।

६ मई १९४३

लखनऊके सिविल सर्जनने मेरे जिस तरहके भोजनकी सिफारिश की थी उसे देनेसे जेलके इन्स्पेक्टर जेनरलने अस्वीकार कर दिया। उनका कहना है कि जेलसे भोजनका जो समान निर्धारित है वह बिलकुल ठीक है।

इसके अलावा प्रतिदिन तीन आना पैसा अन्य खर्चके लिये तो बचा रहता ही है।

मैंने लिखा है कि भोजनकी सामग्रीके स्थानपर मुझे एक पावरोटी, थोड़ा मक्खन और थोड़ी शाक भाँजी दीजाय। इधर जो तरकारियाँ भेजी जाती थीं, वह सूखी और सड़ी रहती थीं, आलू तो एक भी अच्छे नहीं निकलते थे। इसपर यह कहा जाता है कि चीजें महँगी होगई हैं और अच्छी मिलती भी नहीं।

जिस तीन आनेकी चर्चा आई० जी० ने ऊपर की है उसका इतिहास यों है। प्रथम श्रेणीके कैदियोंको तीन आना अतिरिक्त इसलिये मिलता है कि वे भोजनकी सामग्रीके अलावा जो चाहें तीन आनेका मँगा लें। लेकिन चीजें तो जेलवालोंके मारफत ही आती हैं और उनकी कीमत बाजार दरसे इतनी अधिक होती है कि तीन आनेकी कोई वकत नहीं रह जाती। यदि हम लोग उसे बचाकर रखें और हफ्ताके अन्तमें फल मँगाना चाहें तो उत्तर मिलता है कि हिसाबका कागजपत्र खो गया इससे पता नहीं लग सकता कि किसका कितना बाकी है या नियमका अवतरण देकर कह दिया जाता है कि रकम बट्टेखाते गई। इससे यह स्पष्ट है कि इस तीन आने

का इतना मूल्य नहीं है जितना आई० जी० सोचते हैं।

नजरबन्द कैदियोंके लिये ये नियम बनकर आये हैं—

(१) प्रथम श्रेणीके कैदी बाहर सो सकते हैं। अपने बैरेकमें भी पंखा रख सकते हैं।

(२) जेल दफ्तरमें अपना निजी रुपया-पैसा रख सकते हैं। (३) अपने पैसेसे अखबार मँगा सकते हैं।

(४) महीनेमें एक खत ५०० शब्दों तकका लिख और प्राप्त कर सकते हैं। (५) उन्हें फुलवारी लगानेकी अनुमति दी जा सकती है। नियम नं० १ को छोड़कर बाकी सब प्रथम और द्वितीय श्रेणीके नजरबन्दोंके लिये समान रूपसे लागू हैं।

५०० शब्दोंवाली बात किसी बारीक सूझकी उपज थी। हमलोगोंके भाग्यविधाता सरकारी अफसरोंकी संकुचित हृदयताका यह सुन्दर नमूना है।

आज रातको गरमी ज्यादा है लेकिन खुले मैदानमें तार-मालिकाओंके नीचे शान्ति अवश्य मिल रही है। वे सदा एकरूप हैं, प्रतिदिनकी घटनायें उनपर अपना प्रभाव नहीं डालतीं और जेलोंमें भी प्रकाशमान होनेमें वे नहीं डरतीं। खाट पर पड़े पड़े निर्मल आकाशकी ओर देखने में बड़ा सुख मिलता है। धीरे-धीरे दिनकी चिन्ता और

विषाद मनके न जाने किस कोनेमें विलीन होजाते हैं और निद्रादेवीकी सुखद गोदमें सोनेके लिये अथवा स्वप्न देखनेके लिए मनुष्य लेट जाता है।

११ मई १९४३

मैं प्रतिदिन नियमित रूपसे डायरी लिखनेका संकल्प करती हूँ। लेकिन मैं उसपर अटल नहीं रहती। मेरी शान्तिको भंग करनेका सबोंने जो बीड़ा उठा लिया है।

५ तारीखको मुझे दफ्तरमें बुलाकर कहा गया कि कल आप और इन्दिरा छोड़ दी जायँगी लेकिन आपलोगों-पर निर्वासनकी यह आज्ञा जारी की जायगी कि आप-लोग यहाँ से तुरत अल्मोड़ा जिलेके लिए रवाना हो जायँ और खालीमें रहें। हमलोगोंको अल्मोड़ाके डिप्टी कमिश्नरकी निगरानीमें अपने खर्च पर रहना होगा। हमलोगोंको ये शर्तें स्वीकार नहीं हो सकती थीं इसलिये मैंने साफ इन्कार कर दिया। इसके बाद क्या हुआ, हम-लोग कुछ नहीं जानते। यदि सरकार हमलोगोंको ठंढे जलवायुकी सुविधा देना चाहती है तो उसके लिये उप-युक्त यही है कि वह हमलोगोंको छोड़ दे और हमलोग जहाँ चाहें, वहाँ जायँ, नहीं तो नजरबन्द कैदीकी हैसि-

यतसे वह जहाँ चाहे हमलोगोंको भेज दे। जब मेरे अन्य साथी इसी जेलमें सड़ रहे हैं तब भला मैं शीत-प्रधान पहाड़ी प्रदेशका सुख भोगनेकी कामना कैसे कर सकती हूँ।

अन्य जेलोंके क्रूर घटनाओंके समाचार हमलोगोंको मिल जाते हैं। अखबारोंमें भी कभी कभी इशारा रहता है, यद्यपि सेंसरकी कड़ाईके कारण अखबारवाले जेलोंके समाचार नहीं छाप सकते।

नैनी जेलके कानूनमें कड़ाई कर दी गई है। बहुधा तलाशियाँ हुआ करती हैं। जो कापियाँ हमलोगोंको मिलती हैं उनपर जेलके अफसरोंके हस्ताक्षर रहते हैं, पेंसिलके लिए हमलोगोंको पुरजा देना पड़ता है। जब मैंने पूछा कि यह सब क्यों किया जाता है तो उत्तर मिला कि जेलसे खत चोरीसे बाहर भेजे जाते हैं। इन तलाशियोंकी अपेक्षा यदि अच्छी पढ़ी लिखी और पर्याप्त वेतन पर जमादारिनें रखी जायँ तो कहीं अच्छा हो! जेलसे खत बाहर भेजना तो सबसे आसान है। मैं उसे अपने निजी अनुभवके आधार पर नहीं लिख रही हूँ क्योंकि मुझे अपना महानताकी भावना यह सब काम

करनेसे रोकती है और इस तरह अपने आप मेरी रक्षा होजाती है।

टण्डनजी तथा अन्य राजनीतिक कैदियोंके साथही रञ्जीत भी यहाँसे भेज दिये गये। मैंने सुना कि टण्डनजी के सामानोंको लेकर आफिसमें कुछ गोलमाल हुआ। जेलमें वे अपने साथ एक छोटा यन्त्र ले आये थे जिससे वे प्रतिदिन ऊख पेर कर रस निकालते थे। उनका भोजन बहुत ही सादा है। वे ज्यादातर रस और ऊखपर ही रहते हैं। इसलिये यह मशीन उनके लिये आवश्यक थी। कुछ झञ्झटके बाद उन्हें उसे साथ ले जानेकी आज्ञा मिली।

बरेली सेण्ट्रल जेलके नामसे ही मैं काँप उठती हूँ। वह बड़ी खराब जगहपर है और इस प्रान्तका सबसे खराब जेल माना जाता है। जेलके बगलमें ही कारखाना है जिसका धुँआ जेलमें फैलता रहता है। १९३३में इसीसे रञ्जीत वहाँ बीमार पड़ गये थे। छूटनेपर महीनोंकी सेवा-शुश्रूषाके बाद उनका स्वास्थ्य सुधरा। अन्य राज-नीतिक कैदियोंकी हालत भी वहाँ अच्छी नहीं रहती। बरेली जेल उनके अनुकूल कभी नहीं होगा।

१२ मई १९४३

रञ्जीतका समाचार मिला। हमलोगोंको पत्र व्यव-हारकी आज्ञा नहीं है तोभी मुझे आशा थी कि कुछ न कुछ सम्वाद तो मिल ही जायगा।

आज भाईका पत्र मिला। पत्र पहुँचनेमें पूरे बीस दिन लग गये। उन्होंने लिखा है कि लड़कियोंके अमे-रिका जानेके प्रश्नपर मैं जितना ही विचार करता हूँ उतना ही समीचीन मुझे यह प्रतीत होता है। न जाने क्यों मुझे यह बात पहले नहीं सूझी।

१३ मई १९४३

आज सबेरे इन्दु और मैं छोड़ दी जाऊँगी। देखें हमलोगोंपर क्या आज्ञा जारी की जाती है। यदि ऐसी कोई बात हुई तो हमलोग सीधे यहीं वापस आजायँगी।

२७ मई १९४३

सप्ताह भरके घटनाचक्रके बाद मैं पुनः नैनी जेल पहुँच गई। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं पुनः घर वापस आगई हूँ। गन्दगी, शोरगुल, झाला मकड़ी यही तो

जीवनके चिरपरिचित साथी थे। सबसे अचरजकी बात तो यह है कि आनन फानन मैं यहाँके जीवनसे अभ्यस्त होगई और मेरा चित्त पूर्ण शान्त है। सारी अस्त-व्यस्तता सिमटकर एक होगई। बरेली जेलकी बुराइयों का ख्याल भी मुझे इतना परीशान नहीं कर रहा है जितना स्वभावतः होना चाहिये। रञ्जीतमें इतता आत्म-बल है कि वह हँसते-हँसते कठिनाइयोंका सामना कर सकेंगे। आशा है कि उनके स्वास्थ्यको गहरा धक्का नहीं लगेगा।

हमलोगोंने निर्वासनकी आज्ञा कबूल नहीं की, इससे कल एक पुलिस अफसर यह पूछने घरपर आया था कि मैं जेल कब वापस जाऊँगी। मैंने उत्तर दिया कि मैं हर घड़ी तैयार हूँ। इसपर उसने ६ बजे शामका समय दिया। इन्दुके लिये कोई वारण्ट नहीं था। यह अच्छा ही हुआ क्योंकि उसे बुखार है और वह जेल जाने लायक नहीं है।

६-१५ पर शहर कोतवाल—जो शहरमें काफी बद-नाम है—१२९ डी. आई. आर. का वारण्ट लेकर आया। असबाब पुलिसलारीमें भेज दिया गया और मैं उसकी मोटरपर चली। वह मोटर चला रहा था और उसकी

बगलमें खुफिया विभागका एक डिप्टी बैठा था। रास्तेमें उसने मेरे और मेरे वंशके सम्बन्धमें कई बातें कहीं लेकिन मुझसे कोई उत्तर न पाकर वह चुपचाप मोटर चलानेमें लग गया। यह मोटर बहुत पुरानी और सड़ी-गली थी। हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश शासनका यह सच्चा प्रतिनिधि है।

ता० १५ को लड़कियाँ जहाजसे रवाना होगईं। अब तक तो मैं उनकी यात्राकी सारी व्यवस्था कर रही थी। पर उनके चले जानेपर मेरा मन उदास हो रहा है। उनकी पहुँचका सम्वाद न मिलने तक मेरी चिन्ता बनी रहेगी।

मुझे वह दिन भलीभांति याद है जब भैयाके विदेश जानेपर माँको चिन्तित देखकर मैं उनकी हँसी उड़ाया करती थी। आज मेरी भी वही हालत है यद्यपि दोनों परिस्थितियाँ भिन्न हैं। वह शान्तिका युग था। यह युग युद्धके विषाक्त वायुसे दूषित हो रहा है।

जेलके फाटकपर लोगोंने प्रसन्नताके साथ मेरा स्वागत किया। कैदियोंका हृदय आनन्दसे भरा था। मैं रात ९ बजे तक पूर्णिमासे बातें करती रही। इसके

बाद भोजनकर हम लोग बिस्तरपर गयीं। वह पढ़ने लगी और मैं तारोंका निरीक्षण करने लगी।

४ जून १९४३

लीडरमें मैलबोर्नका समाचार है कि लेखा और तारा आस्ट्रेलिया पहुँच गई हैं। इधर कई दिनोंसे मेरा हृदय भरा हुआ था और मैं कल्पनामें लड़कियोंकी यात्राका अनुसरण करती रहती थी।

बरेलीका समाचार अच्छा नहीं है। रञ्जीतका कोई पत्र नहीं आया। इसके दोही कारण हो सकते हैं या तो मेरा ता० २४ का पत्र उन्हें मिला नहीं या वहाँ कुछ गड़-बड़ी है और वे खत नहीं लिख सकते हैं।

५ जून १९४३

तीन दिनसे गरमी बढ़ रही थी और आज तो तूफान भी आया। बड़े बड़े ओले गिरे जिससे बैरेकके खपरैल चूर चूर होगए। सारा आँगन ओलोंसे भर गया था। सारा आँगन सफेद होकर इस तरह चमक रहा था मानों किसीने जादूका खेल किया हो। काफी ठण्ढक है,

लेकिन आँगनमें घुटनेभर पानी लगा है इससे सोना भीतर ही होगा।

मौसिमके कारण जमादारिनोंको रातमें पहरा देनेसे छुटकारा मिल जायगा। कण्ट्रोल घड़ी भी खराब है इससे वे सब तानकर सोयेंगी और सबेरे खुलनेके समय रिपोर्ट दे देंगी कि सब ठीक है।

दो दिनसे रातभर लारियोंका शब्द जेलके फाटकके पास होता रहा। पहले तो कुछ पता नहीं लगा लेकिन पीछे मालूम हुआ कि फौजी सिपाही इनपर कलकत्ता गये हैं।

७ जून १९४३

किसी अज्ञात चीनी मित्रने क्रिस्तन नामक चायका एक पैकेट भेज दिया है। भाई और रञ्जीतकी अनुपस्थितिमें इस चायका आनन्द नहीं मिल सकेगा। इतनी सुन्दर चाय अकेले पीनेकी चीज नहीं है।

आजके पत्रसे मालूम हुआ कि लड़कियाँ मेलबोर्नसे आगे बढ़ गईं। बङ्गालसे बुरे समाचार आरहे हैं। मिदनापुरके तूफानका असर दूर भी नहीं होने पाया था कि अन्न सङ्कट उपस्थित होगया। माडर्न रिव्यूके अनुसार

तो घोर सङ्कटकी सम्भावना प्रतीत होती है। सारी स्थिति अस्तव्यस्त है और जो लोग इस उलझनको सुलझा सकते थे वे जेलोंमें बन्द हैं।

प्रान्तभरके जेलोंमें राजनैतिक बन्दियोंके साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है। जान बूझकर सख्त व्यवहार और अपमानजनक नीतिका प्रयोग हो रहा है। इससे कांग्रेसके सिद्धान्तको भी भूल जाना पड़ता है।

दुर्घटना : रामकलीका १६ सालका पुत्र जो कुछ ही सप्ताह पहले यहाँसे छूटकर गया था, अचानक डिप-थीरियासे आक्रान्त होकर आनन-फानन मर गया। उसके पिता भी यहीं नैनी जेलमें नजरबन्द हैं। उन्हें पैरोलपर छोड़नेके लिए दरख्वास्त दी गई। लेकिन ब्रिटिश सरकारका काम चींटीकी चालसे होता है। मौत उसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकती। पैरोलकी मंजूरीसे पहले ही वह विचारा लड़का चल बसा। अन्तमें बूढ़ा छूटा भी तो कोई सवारी प्राप्त न थी। लाचार पैदल ही रवाना हुआ। तबतक लड़केका अन्तिम संस्कार भी समाप्त हो चुका था। अपनी अभागी पत्नी और दो बच्चियोंको घर छोड़कर वह वापस आ गया है।

११ जून १९४३

कई दिनसे विस्तर छोड़नेकी नौबत नहीं आई। डाक्टरोंने शीशियों दवा पिला डाली। लेकिन कोई फल नहीं निकला। मुझे सूचना मिली है कि बीमारीके कारण मैं रिहा कर दी जाऊँगी।